प्रस्तावना.

कोइ पण विषयनुं संगीन ज्ञान मेळववुं होय, तो ते पाठमाळाना क्रमथी सारी रीते मेळवी शकाय छे. आ पद्धती आधुनिक छे, तथापि तेमांथी प्राचीन पद्धतीना जेवुं फळ मेळवी शकाय छे. प्राचीन पद्धतीथी शिक्षण लेतां महान् प्रयत्ने जे फळ प्राप्त थाय, ते फळ अर्वाचीन पद्धतीथी अल्प प्रयत्ने साधी शकाय छे. ज्यारथी विदेशी शिक्षणनी पद्धती आर्यावर्त्तमां प्रवृत्त थइ छे, त्यारथी भाषा अने धर्मनुं ज्ञान मेळववाने विविध जातनी पाठमाळाओ प्रगट थवा मांडी छे. ज्ञानना अभिलाषीओ ए क्रमनी द्वाराएज शिक्षण लेवा प्रसन्न हृदये प्रवृत्त थया छे, अने तेमां विजयी पण निवड्या छे.

आ पश्चिमनी पद्धतीनी केळवणी भरतखंडमां बीजे बधे स्थळे सर्व हितार्थे प्रवर्त्ती हती, पण ते जैन धर्ममां अद्यापि प्रवर्ती नहती. जैन धर्मनुं ज्ञान नवीन पद्धतीथी

संपादन करवाने आधुनिक जैन वर्ग घणी इच्छा राखतो हतो, अने ते विषे जाग्रती करवा जैन स्थानिक मंडलोमां अने जैन कोन्फरन्समां चर्चा चलावी स्वाभिलाष पूर्ण करवानी पण अभिलाषा राखतो हतो. चालता समयमां ते वात विशेष चर्चावाथी अमारा हृदयपर आरुढ थइ, अने तेने अमलमां मुकवा प्रयत्न करवा मांडयो; ते केटले अंशे सफळ थयो छे, ते हवे पछी जणाशे.

दरेक श्रावक के श्राविकाने पोताना धर्मनुं ज्ञान होवुं जोइए. ज्यां सुधी स्वधर्मनुं ज्ञान न होय, त्यांसुधी ते नामनोज श्रावक छे, तेम समजवुं. वर्त्तमान समय ए केळवणीनो समय छे; केळवणीनो युग छे. सर्व जातनी उन्नति संपादन करवानुं मुख्य साधन केळवणी छे. आवा समयमां दरेक व्यक्तिने केळवणी लेवानी इच्छा थाय छे, अने ते लेवाने बनतो प्रयत्न करवामां आवे छे. अहिं आपणे एटलुंज जाणवानुं अने समजवानुं छे के, ते केळवणी केवळ सांसारिक न होवी जोइए, धर्मनी केळवणी पण जोइए. विधर्मी अने विदेशी राज्य कर्त्ताए सांसारिक केळवणी मेळववानां पूरतां साधन करी आप्यां छे, पण धार्मिक केळवणीनां साधन मेळववानुं काम आर्यावर्त्तनी जुदा जुदा धर्मने माननारी प्रजा उपर राखेलुं छे. आथी इतर धर्मनुं ज्ञान संपादन करवानां साधनो बीजी प्रजाए उभां कर्यां छे, पण विद्या विलासना अभाववाळी जैन प्रजा तेवां साधनथी रहित हती, तेमने ते साधन प्राप्त

करवाना हेतुथी आ प्रयासनो आरंभ करवामां आव्यो छे.

अति प्राचीन सर्वज्ञ अर्हत भगवान्ना मुखमांथी नीकळेली जैन धर्मनी पवित्र वाणीने पूर्वकाळना गणधरोए, ते पछी आचार्योए तथा मुनिवरोए धारण करी तथा मध्य काळना पंडितोए ए पवित्र वाणीने भाष्य तथा टीकाथी पल्लवित करी, पछी जैन वर्गना उद्धारने अर्थे आधुनिक विद्वानोए देशीय भाषामां उतारी छे. आ भव्य वाणीनी अपूर्व प्रौढता अने परापूर्वथी चाली आवेलो अविच्छिन्न प्रचार जोइने अने तेनी जैनोने अति आवश्यक्ता जाणीने आ पश्चिमनी नवा प्रकारनी पद्धती उपर पाठावळीरूपे आ पुस्तकावळी रचवामां आवी छे.

मुख्यत्वे करीने जैन धर्मनी शिक्षण पद्धतीनी शाळाओना विद्यार्थीओने माटे नवीन पद्धती उपर तैयार करेल आ प्रथम पुस्तक छे. साधारण भाषाज्ञान धरावनारा विद्यार्थीओने धर्मनुं ज्ञान शीखववामां जे मुश्केलीओ नडे छे, तेनो वधो विचार करी गुजराती पांचमा धोरण सुधीना अभ्यासीओ सुगम रीते शीखी शके, तेवी योजनाथी आ पुस्तक रचवामां आव्युं छे.

लोकोमां प्रिय थइ पडेलां जूनां पुस्तकोने पदच्युत करवां ए कांइ सहेलुं नथी; अने नवां पुस्तकोने तो हमेशां अमुक विरोधनुं दर्शन थया वगर रहेतुं नथी, तेथी ते विषेनो दीर्घ विचार करी, आ नवी पद्धतीमां केटली-

एक एवी योजना करवामां आवी छे के, जे योजनाने लीधे आ पुस्तक शिक्षको अने विद्यार्थीओ तरफथी खास सत्कार करवा योग्य थइ पडशे; एवी आशा राखवामां आवे छे.

आ पुस्तकावळीनी केवी योजना करवी ? अने केवी योजनाथी ए सर्व जैन वर्गने मान्य थाय ? एवो दीर्घ विचार करी अने जैनोना केटलाएक विद्वान् मुनि महाराजाओ अने गृहस्थोनी संमति मेळवी, आ प्रथम पुस्तक तैयार करवामां आव्युं छे. आ पुस्तकनी योजनानो जे क्रम आप्यो छे, ते क्रमने जो सर्व जैन वर्ग तरफथी अभिनंदन मळशे, तो अमे अमारा आ प्रयत्नमां पूर्ण सफळ थयेला समजीशुं, अने अमारा अंतर्गत उत्साहने आगळ वधारवा प्रयत्न करीशुं.

आ पुस्तकने त्रण भागे वहेंचवामां आव्युं छे. पेहेला भागमां नवकार मंत्र, पंचपरमेष्टीना गुण, शुद्ध देव, गुरु अने धर्मनुं स्वरुप, कुदेव, कुगुरु, अने कुधर्मनुं स्वरुप, जिन प्रतिमा, श्रावकनुं दिन कृत्य अने जिनपूजा सुधीना बोधक पाठो आपेला छे. बीजा भागमां जीव विचार पूरो आपेलो छे, अने त्रीजा भागमां ऋषभ देव भगवान्, भरतचक्रवर्ती, ढंढण कुमार, प्रसन्नचंद्र राजार्षि, मेतार्यमुनि, करकंडु, अने चिलाती पुत्रनां चरित्रो पाठ रूपे आपेलां छे. एकंदर आ पुस्तकनो अभ्यास जो यथार्थ रीते पूर्ण करवामां आवे तो, आस्तिक अभ्यासी जैन

धर्मना ज्ञानमां सारो प्रवेश करी शके, तेमां कांइ पण संदेह नथी.

आ ग्रंथवाळीनो मुख्य उद्देश जैन धर्मना ज्ञाननुं अध्ययन सुगम करवुं अने जैनोना द्रव्यानुयोग, चरण-करणानुयोग, गणितानुयोग, अने कथानुयोगना ग्रंथो अने जैन साहित्य वांचवा तरफ अभिरुचि उपजाववी, ए छे. आ ग्रंथमाळा शीखवाथी जैन धर्मनुं सारुं ज्ञान सहेल-थी प्राप्त थशे, अने जैन धर्मना तत्वज्ञानना ग्रंथो समजवा-नी शक्ति उत्पन्न थशे, तथा तेनुं अध्ययन करवा रस आ-वशे तो, अमारो आ श्रम फळीभूत थयो एम अमे समजीशुं.

छेल्ले आ वर्गने खरा दिलथी चाहनार, अने व-र्गना कार्यने पोतानो अमूल्य वखत आपी सहाय करनार, तथा करावनार, अने वर्ग तरफथी प्रसिद्ध थतां पुस्तकोने निःस्वार्थपणे शुद्ध करी आपनार पन्यासजी गंभीरविज-यजीना शिष्य मुनि महाराज श्री चारित्रविजयजीनो अ-मो अत्र अंतःकरणथी उपकार मानीए छीए. आ पुस्तकने शोधन करवामां तेओ श्रीए अत्यंत प्रयास कर्यो छे. जे जे वाकयो जैन शैलीथी विरुद्ध तेमने जणायां, ते तेओए काढी नांखी, तेने ठेकाणे बीजां उचित वाकयो गोठवी, पु-स्तकने निर्दोष बनाववामां खरेखर सहाय करी छे. वळी पुस्तक छपावती वखते तेनां प्रुफ जोवामां पोताना अमू-ल्य समयनो भोग आप्यो छे, माटे तेओश्रीनो अमो पुनः

उपकार मानीए छीए; अने आशा राखीए छीए के, मुनि महाराज चारित्रविजयजीनो दाखलो लइ अन्य मुनि महाराजो पण आ वर्गना कार्योने सहाय आपवा कृपा करशे. एज. सुज्ञेषु किं बहुना!

पालीताणा. संवत् १९६२ अशाढ शुक्ल १५	श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग. पालीताणा.

शिक्षकोने सूचना.

अभ्यास करनार विद्यार्थीने जे पाठ आपवो होय, ते प्रथम बराबर रीते तेनी पासे वंचाववो, अने समजाववो. जे विषयनो पाठ होय, ते विषयनी बाबत दरेक वाक्ये समजावी विद्यार्थीना हृदयमां एवी रीते ठसाववी के, जेने ते कदि पण फरी वार भुली न जाय. ते समजावेलो पाठ बीजे दिवसे विद्यार्थीनी पासेथी लेवो, अने ते बराबर समज्यो छे के नहिं ? ते सारी रीते चकासी लेवुं. ते वखते दरेक पाठनी नीचे जे सारांश प्रश्नो आपेला छे, ते विद्यार्थीने पुछवा. ज्यांसुधी ते प्रश्नोना संतोषकारक उत्तर मळे नहिं, त्यांसुधी तेने ते पाठ अपक्व छे, एम जाणी, तेने फरी वार ते पाठ वांचवानी सूचना आपवी. सारांश प्रश्नोनी नीचे जे शब्दो आपवामां आव्या छे, तेनी समजुती विद्यार्थीने सारी रीते आपवी. जे जे विषयनी कविताओ छे, ते बधी विद्यार्थीने मोंढे कराववी, अने तेनी अंदरनो भावार्थ बराबर समजाववो.

विषयानुक्रमणिका.

भाग १ लो.

भाग २ जो.

भाग २ जो.

भाग २ जो.

भाग ३ जो.

इति विषयानुक्रमणिका.

जैन धर्म पहेली चोपडी.

भाग १ लो.

पाठ १ लो.

नवकार मंत्र.

१ नमो अरिहंताणं । अरिहंत भगवानोने नमस्कार हो.
२ नमो सिद्धाणं । सिद्ध भगवानोने नमस्कार हो.
३ नमो आयरियाणं । आचार्य महाराजोने नमस्कार हो.
४ नमो उवज्झायाणं । उपाध्याय महाराजोने नमस्कार हो.
५ नमो लोए सव्व साहूणं । लोकमां सर्व साधुओने नमस्कार हो.
६ एसो पंच नमुक्कारो । ए पांचे नमस्कारो.
७ [1] सव्व पावप्पणासणो । सर्व पापोने नाश करनारा छे.
८ मंगलाणं च सव्वेसिं । अने सर्व मंगलोमां.
९ पढमं होइ (हवइ) मंगलं ॥ प्रथम मंगलरुप छे.

---

१ साधुनी आदिमां सर्व शब्द मुकवानु कारण जे साधुमां स्थिविरकल्पी अने जीनकल्पी प्रतिमाधर एवा अनेक भेद होय छे तेवा भेद आचार्य उपाध्यायमां होता नथी.

पाठ २ जो.

नवकार मंत्र एटले शुं ?

आ नवकार मंत्रनुं बीजुं नाम नमस्कार मंत्र छे, ते मंत्रमां अवस्था भेदे स्व आत्म सत्ता संपन्न पांच जातनां जीवद्रव्योने नमस्कार करेला छे, ए मंत्र सर्व मांगलिकनुं मूल छे. तेनी अंदर जुदां जुदां नव (९) पद छे. तेमां पहेलां पांच पदथी पांच जातनां स्व स्व सत्ता संपन्न जीव-द्रव्योने नमस्कार करेला छे, अने बाकीनां चार पदमांथी पहेलां बे पदथी ए मंत्रनो हेतु जणावेल छे, अने छेल्लां बे पदथी फल बतावेल छे. बे हाथ, पग अने मस्तके करी संकोच पामी सारुं प्रणिधान (ध्यान) करवुं, ते नमस्कार कहेवाय छे. नमस्कार द्रव्यथी अने भावथी एम बे रीते थाय छे. हाथ, पग अने माथाने हलावी संकोच करवो, ते द्रव्य नमस्कार; अने फक्त शुद्ध मनने लगाडी प्रणिधान करवुं, ते भाव नमस्कार कहेवायछे. तेने द्रव्य संकोच अने भाव संकोच पण कहे छे. आ नमस्कार बन्ने रीते करवानो छे. पहेलां पांच पदथी जेमने नमस्कार करवामां आव्यो, ते पंचपरमेष्टी कहेवाय छे. पंचपरमेष्ठी ते पांच धर्मी समजवा. ते अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ नवकार मंत्रनुं बीजुं नाम शुं ? २ नवकारमां केटलां

पद छे ? ३ पहेलां पांच पदमां शुं आवे छे ? ४ वीजां वे पदमां शुं छे ? ५ छेल्लां वे पदमां शुं छे ? ६ नमस्कार केटली रीते थाय छे ? ७ द्रव्य नमस्कार अने भाव नमस्कार एटले शुं ? ८ पंच परमेष्ठी एटले शुं ? ते समजावो. ९ 'अरिहंताणं' ए पांच पदना अर्थ शुं ? १० नवकारनुं फल शुं ? ११ द्रव्यसंकोच अने भाव संकोच एटले शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दो व्याख्या करी विद्यार्थीओने समजाववा.

मांगलिक, फल, हेतु, प्रणिधान, संकोच.

पाठ ३ जो.

नवकार मंत्र विषे चोपाइ.

मंगलकार भणो नवकार,
मंगल सर्व तणो आधार. १

पेले पदे अरिहंतनुं नाम,
वीजे पदे सिद्धनुं [1]अभिधान. २

छे आचारज त्रीजे आप,
उपाध्याय तणी पछी छाप. ३

---

१ नाम.

साधु तणो पांचमे परिवार,
सार धरे ते श्री नवकार. ४
ए परमेष्ठी पंचनुं रुप,
नित्य नमो धरि भाव [1]अनुप. ५

पाठ ४ थो.

पंचपरमेष्टी.

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु,—ए पांच परमेष्ठी कहेवाय छे. परमेष्टी ए पदनो अर्थ परम—उत्कृष्ट पदमां रहेनारा एवो थाय छे. तेमां अरिहंतमां बार गुण, सिद्धमां आठ गुण, आचार्यमां छत्रीश गुण, उपाध्यायमां पचीश गुण, अने साधुमां सत्यावीश गुण रहेला होय छे. ए वधा मळी एकंदर एकसो ने आठ गुण थाय छे.

आठ कर्मरुप अरि जे शत्रु तेमने हणे, ते अरिहंत कहेवाय छे. जे सिद्धिने पाम्या एटले मोक्षे गया, ते सिद्ध कहेवाय छे. जे जिनशासनना अर्थनो शुद्ध उपदेश करे, ते अथवा जे पांच प्रकारना आचारने पाळे पळावे ते, आचार्य कहेवाय छे. जे योग्य साधुओने सिद्धांत भणावे, ते उपाध्याय कहेवाय छे. अने जे ज्ञान विगेरेनी शक्तिए मोक्षने साधे सधावे, ते साधु कहेवाय छे.

---

[1] जेनी उपमा आपी शकाय नहिं तेवो.

सारांश प्रश्नो.

१ परमेष्टी ए शब्दनो अर्थ शुं ? २ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधुना केटला केटला गुण छे ? ३ तेमना बधा मळीने केटला गुण थाय ? ४ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु कोने कहेवाय ? ते जुदी जुदी रीते कहो.

शिक्षके विद्यार्थीओने नीचेना शब्दो समजाववा.

परमेष्टी, ऊत्कृष्ट, [1]आठकर्म, सिद्धि, जिनशासन, शुद्ध उपदेश, [2]पांच प्रकारना आचार, सिद्धांत, ज्ञान, संयम.

पाठ ५ मो

अरिहंतना बार गुण विषे भुजंगी.

गुणो बार अर्हंतना नित्य जाणो,
सदा भावथी अंतरे ते प्रमाणो;
प्रभु प्रातिहार्यो[3] सदा आठ धारे,
अतिशय[4] वळी चारथी ते विहारे. १

---

१ आठ प्रकारनां कर्म, आगळ कहेवामां आवशे.

२ पाच प्रकारना आचार पण आगळ कहेवाशे.

३ प्रातिहार्य–एटले तीर्थंकर प्रभुनी साथे रहेनारी शोभा. ४ चार अतिसय.

अशोके[1] रहे आश्रयी देवदेवा[2],
करे पुष्प वृष्टि थकी देव सेवा;
ध्वनि दिव्य थाये वींजे चामरोने,
धरे रम्य सिंहासने देव तेने. २

प्रकाशे सुभामंडळे तेज भारे,
भला भेरिना नाद थाये वधारे;
वनी छत्र छाया प्रभुता जणाये,
रुडा आठ[3] ते प्रातिहार्यो गणाये. ३

दोहा.

[1]अपाय अपगम एक ज्यां, अंतरायनो नाश;
[2]ज्ञानातिशये ज्ञाननो, पूर्ण बनेज प्रकाश. १

[3]पूजातिशये पूज्यता, त्रण जगतमां थाय;
[4]वचनातिशये वचन जे, सर्व थकी समजाय. २

प्रातिहार्य छे आठ ने, अतिशय गणतां चार;
श्री अरिहंत तणा थया, ते सघळा गुण बार. ३

---

१ आसोपालवनु वृक्ष २ देवदेवा—एटले देवोना पण देव. ३ आठ प्रातिहार्य आ प्रमाणे—१ आसोपालवनु वृक्ष, २ पुष्पवृष्टि, ३ दिव्य ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामडल, ७ भेरी—नोबत, ८ छत्र.

१ अपायापगम नामे पहेलो अतिशय छे तेथी करीने बधी जातना अतरायोनो नाश थइ जाय छे

२ ज्ञानातिशयथी प्रभुमां ज्ञाननो पूर्ण प्रकाश प्रगट थाय छे

३ पूजातिशयथी प्रभु त्रण जगतमां पूज्य थाय छे.

४ वचनातिशयथी प्रभुना वचन सर्व भाषामा समजाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अर्हंतना केटला गुण ? २ प्रातिहार्य एटले शुं ? ३ प्रातिहार्य कोण करे छे ? ४ अतिशय एटले शुं ? ५ चारे अतिशयने जुदा जुदा समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दो व्याख्या करी समजाववा.

प्रातिहार्य, अशोक, पुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामंडल, भेरी, छत्र, अतिशय, अपायापगमातिशय, ज्ञानातिशय, पूजातिशय, वचनातिशय.

पाठ ६ ठो.

सिद्धना गुण.

सिद्ध भगवंतमां आठ गुण होय छे. १ ज्ञान, २ दर्शन, ३ अव्याबाध, ४ सम्यकत्व, ५ अक्षयस्थिति, ६ अरुपी, ७ अगुरु लघु अने ८ वीर्य.

१ पेहला ज्ञानगुणथी ज्ञानावरणीय कर्म क्षय थइ जवाने लीधे ज्ञाननी उत्पत्ति थवाना प्रभावे करी जेओ लोकालोकनुं स्वरुप विशेषथी जाणी शके छे. २ बीजा दर्शन गुणे करी दर्शनावरणीय कर्मनो क्षय थवाथी केवळ दर्शननी उत्पत्ति थवाने लीधे लोकालोकनुं स्वरुप सामान्यथी जोइ शके छे. ३ त्रीजा अव्याबाध गुणे करी वेदनीय

कर्मनो क्षय थवाथी तेमने अनंत सुखनी प्राप्ति थाय छे, जे सुखनो अनुभव सिद्ध शिवाय बीजा कोइनाथी थइ शकतो नथी. ४ चोथा सम्यकत्व गुणे करी मोहनीय कर्मनो क्षय थवाथी सिद्धने विषे क्षायिक सम्यकत्वनी उत्पात्ति थाय छे. ५ पांचमा अक्षयस्थिति गुणे करी आयुः कर्मनो क्षय थवाने लीधे तेमनी स्थिति अक्षय थाय छे. कारण के, सिद्धना जीवनी सिद्धावस्थारुप पर्यायवडे आरंभ सहित अने अंत रहित स्थिति होय छे. ६ छठ्ठा अरुपी गुणथी सिद्ध रुप विनाना छे, तेथी वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श पण तेमने होता नथी; कारण के, तेमने नाम कर्मनो क्षय होय छे. ७ सातमा अगुरु लघु गुणथी सिद्ध गुरु (भारे) होता नथी, अने लघु (हलका) पण होता नथी. कारण के, तेमने गोत्र कर्मनो क्षय थयेलो छे. ८ आठमा वीर्य गुणथी अंतराय कर्मनो क्षय थवाथी तेमनामां अनंत बल होय छे. आ सिद्धना आठ गुण ज्ञानावरणीय विगेरे आठ कर्मनो क्षय थवाथी उत्पन्न थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सिद्धना केटला गुण होय छे? २ आयुः कर्म, वेदनीय कर्म अने गोत्रकर्मनो क्षय थवाथी सिद्धमां कया कया गुणो आवे छे? ३ वीर्यगुण, अव्याबाध, अक्षयस्थिति अने दर्शन—ए गुणोमां कया कर्मनो क्षय होय छे? ४ अगुरुलघु अने सम्यक्त्व गुणनो भावार्थ समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुः, नाम, गोत्र, अंतराय, लोकालोक, अनंत, क्षायिक, सम्यक्त्व, अक्षयस्थिति, पर्याय, अंतरहित, कृतार्थ, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श.

पाठ ७ मो.

आचार्यना गुण.

आचार्य ए पंचपरमेष्ठी गणाय छे. तेमनामां छत्रीश गुण होय छे. पांच इंद्रियोना पांच विषयोनो त्याग, ब्रह्मचर्यनी नव गुप्ति, चार कषायनो त्याग, पांच महाव्रत, पांच आचार, पांच समिति, अने त्रण गुप्ति–एम सर्व मळीने छत्रीश गुणो थाय छे. स्पर्शन विगेरे पांच इंद्रियोना विषय उपर आचार्य राग द्वेषथी रहित रहेछे. ब्रह्मचर्यनी नवगुप्ति छे. १ गाय प्रमुख पशु, नपुंसक अने स्त्री जेमां न होय तेवा स्थानमां रहेवुं, २ प्रीतिथी स्त्रीनी वार्त्तानो त्याग करवो, ३ जे स्थाने स्त्री बेठी होय त्यां बे घडी सुधी न बेसवुं, स्त्री होय तो जे स्थाने पुरुष बेठो होय, त्यां त्रण पोहोर सुधी न बेसवुं, ४ स्त्रीनां अंग उपांग रागथी जोवां नहीं. ५ एक भींत के पडदाने आंतरे स्त्री पुरुष सूतां होय, अथवा ते विषयनी वातो

करतां होय, त्यां बेसवुं नहीं, ६ पूर्वावस्थामां स्त्रीनी साथे करेल विषय भोगने संभारे नहीं, ७ सरस चीकणो मिष्ट आहार करे नहिं, अति रस वगरनो आहार पण वजन उपरांत करे नहिं, अने शरीरने शोभावे नहिं. आ नव गुप्तिओ ब्रह्मचर्यनी वाड रुप कहेवाय छे.

क्रोध, मान, माया अने लोभ—ए चार कषाय कहेवाय छे, ते कषायने आचार्य त्याग करे छे.

आचार्य पांच महाव्रतने धारण करनारा होय छे. १ हिंसा, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, अने ५ परिग्रह ए पांचनो सर्वथा त्याग ते महाव्रत कहेवाय छे.

आचार्य पांच प्रकारना आचारने पाळे छे. १ ज्ञानाचार, २ दर्शनाचार, ३ चारित्राचार, ४ तप आचार अने ५ वीर्याचार—ए पांच आचार कहेवाय छे.

आचार्य पांच समितीने धारण करे छे. १ इर्या समिति, २ भाषा समिति, ३ एषणा समिति, ४ आदानानिक्षेपण समिति अने ५ पारिष्ठापनिका समिति—ए पांच समिति कहेवाय छे. समिति एटले उपयोग राखवो.

आचार्यमां त्रण गुप्ति होय छे. देशथी अने सर्वथी योगनी निवृत्ति करवी ते गुप्ति कहेवाय छे. पहेली मनो गुप्ति, बीजी वचन गुप्ति अने त्रीजी कायगुप्ति.

आ प्रमाणे आचार्यमां छत्रीश गुणो होय छे. अने तेवा गुणोने लइने तेमनी पंच परमेष्टीमां गणना छे.

सारांश प्रश्नो

१ आचार्यमां केटला गुण होय छे ? २ ब्रह्मचर्यनी नवगुप्ति एटले शुं ? ३ कषाय केटला ? ते नाम साथे गणावो. ४ पंच महाव्रतनां नाम कहो. ५ पांच प्रकारना आचार क्या ? ६ समिति एटले शुं ? अने ते केटली होय छे ? ७ गुप्ति केटला प्रकारनी छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

इंद्रियोना पांच विषयो, अंग उपांग, राग, पूर्वावस्था, मिष्ट, अहार, मृषावाद, अदत्तादान, परिग्रह, सर्वथा त्याग, देशथी अने सर्वथी.

पाठ ८ मो.

उपाध्यायना पचवीश गुण.

उपाध्याय पद पण पंच परमेष्ठीमां छे, तेमनामां पचवीश गुण होय छे.

११ अंग, १२ उपांग, १ चरण सीत्तेरी, १ करण सीत्तेरी ए रीते पचवीश गुण उपाध्यायना समजवा.

११ अंगनां नाम.

१ आचारांग, २ सूयगडांग, ३ ठाणांग, ४ समवा-

थांग, ५ भगवती सूत्रांग, ६ ज्ञाता धर्मकथा अंग, ७ उ-
पासकदशांग, ८ अंतकृत दशांग, ९ अनुत्तरोपपातिक दशां-
ग, १० प्रश्नव्याकरण, ११ विपाक सूत्र अंग.

१२ उपांगनां नाम.

१ उववाइ सूत्र उपांग, २ राय पसेणी, ३ जीवाभि-
गम, ४ पन्नवणा, ५ सूर पन्नत्ती, ६ जंबुद्वीप पन्नत्ती, ७
चंद पन्नत्ती, ८ कप्प वडंसीआ, ९ निरीआवलीआ १०
पुप्फ चूलीआ, ११ वण्ही दशा १२ पुप्फया.

[1]चरण सीत्तरी. [2]करण सीत्तरी.

ए अगीआर अंगने अने बार उपांगने भणे तथा भ-
णावे ए मुख्य काम उपाध्यायनुं होय छे.

उप—अध्याय. जे समीपे रही भणीए ते उपाध्याय
कहेवाय.

सारांश प्रश्नो.

१ उपाध्यायमां केटला गुण होय ?

२ अंग केटलां तेनां नाम शुं ?

३ उपांग केटलां तेनां नाम शुं ?

४ उपाध्याय शुं करे ?

---

१ १९ मा पाठमा आवशे २ २० मा पाठमा आवशे

समज शिक्षके आपवी.

अंग, उपांग, तप, अध्याय.

पाठ ९ मो.

साधुना सत्यावीश गुण.

दोहा.

पंचमहाव्रत जे धरे, राते न करे आहार,
छकायनी रक्षा करे, करि [1]निजसम सुविचार. १

पंचेंद्रिय ने लोभनो, निग्रह करता आप,
क्षमा करे ने चित्त धरे, निर्मलतानी छाप. २

पडि लेहण उपयोगथीं, करे शुद्धिनी साथ,
संयमने अनुकूल जे, [2]त्रियोग करता हाथ. ३

रोके मन वच कायनी, अशुभ प्रवृत्ति रीत,
सहन करे परिषह बधा, बाविश धरिने प्रीत. ४

ए सत्याविश गुण धरे, साधु संयम धार,
ते परमेष्टी पांचमा हृदय, करो निर्धार. ५

व्याख्या.

५ पंचमहाव्रत, ६ रात्रि भोजननो त्याग, १२ छ का-

---

१ पोताना आत्मानी समान सारो विचार करी. २ मन, वचन, कायाना योग.

यजीवनी रक्षा, १८ पांच इंद्रियोनो अने लोभनो निग्रह, १९ क्षमा, २० हृदयनी निर्मलता, २१ पडिलेहण, २३ मन, वचन, अने कायाना शुभ योग, २६ मन, वचन, अने कायानी अशुभ प्रवृत्तिनो रोध, अने २७ परिषह-नुं सहन—ए सत्याविश साधुना गुण कहेवाय छे.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

छकाय, निग्रह, पडिलेहण, त्रियोग, अशुभप्रवृत्ति, परिषह.

पाठ १० मो.

शुद्ध देव.

जैन धर्ममां प्रथम शुद्ध त्रण तत्त्वो जाणवां जोइए. ते शुद्ध देवतत्त्व, शुद्ध गुरुतत्व अने शुद्ध धर्मतत्व एवां तेमनां नाम छे. तेओमां शुद्ध देवतत्व पहेलुं छे. देव एटले परमेश्वर ते केवा जोइए ? ते प्रथम जाणवुं जोइए. जेनामां बार गुण होय अने जेनामां अढार दूषण न होय ते शुद्ध देव कहेवाय छे. चार अतिशय अने आठ प्रातिहार्य—ए बार गुण तेम-नामां होय छे. ज्ञानातिशयथी ते प्रभु केवल ज्ञान तथा के-वलदर्शने करी भूत, भविष्य अने वर्त्तमान कालमां जे वस्तु

थने ते, तथा ते वस्तुनी उत्पत्ति, नाश अने कायम रहेवापणुं ए वधुं जाणी शके छे. बीजा वचनातिशयथी प्रभुना वचननी अंदर [1]पांत्रीश जातना बीजा अतिशय रहेला होय छे; के जेथी तेमना वचनमां जे खुबी छे, ते बीजा कोइना वचनमां होती नथी. त्रीजा अपायापगम अतिशयथी तेमनी आगळ कोइ जातना उपद्रव आवता नथी. चोथा पूजातिशय नामना अतिशयथी ते प्रभु त्रण लोकने पूजवा योग्य थइ शके छे. त्रीजा अने चोथा अतिशयमां बीजा चोत्रीश अतिशय पण रहेला छे.

सारांश प्रश्नो.

१ जैन धर्ममां शुद्ध त्रण तत्वो क्यां जाणवानां छे? २ देव एटले शुं? ३ देवमां केटला गुण होवा जोइए. ४ चार अतिशय क्या? ५ देवमां केटला दूषण न होय? ६ ज्ञानातिशयथी प्रभु शुं जाणी शके छे? ७ वचनना केटला अतिशय छे? ८ अपायगम अतिशयथी शुं बने छे? १० पूजातिशयथी शुं बने छे? ९ चोत्रीश अतिशय शेमां रहेला छे?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुद्ध, तत्व, परमेश्वर, दूषण, केवल ज्ञान तथा दर्शन, भूत, भविष्य, वर्त्तमान, उपद्रव, त्रण लोक.

---

[1] वचनना पात्रीश अतिशय बीजा पुस्तकमां कहेवामा आवशे

पाठ ११ मो.

अढार दूषण भाग १ लो.

जिन भगवंतमां अढार दूषण होतां नथी. तेमां पहेलुं दूषण दानांतराय एटले दान देवामां अंतराय थवानुं छे. अंतरायनो अर्थ विघ्न अथवा अडचण करवी थाय छे. वीजुं दूषण लाभांतरायनुं छे. त्रीजुं दूषण वीर्यांतरायनुं, चोथुं भोगांतराय अने पांचमुं उप भोगांतरायनुं; जे एक वखत भोगववामां आवे ते भोग अने जे वारंवार भोगववामां आवे ते उपभोगमां गणाय छे. पुष्पनी माळा विगेरे भोग वस्तु छे, अने स्त्री, घर, कंकण, कुंडल विगेरे आभूषण ते उपभोग वस्तु गणाय छे. छठुं हास्य दूषण जेनो अर्थ हसवुं थाय छे. सातमुं रति दूषण जेनो अर्थ पदार्थ उपर प्रीति करवानो थाय छे. आठमुं अरति दूषण जेनो अर्थ पदार्थ उपर अप्रीति करवानो थाय छे. नवमुं भय दूषण सात प्रकारनुं कहेवाय छे. १ इह लोक भय, २ परलोक भय, ३ आदान भय, ४ अकस्मात् भय, ५ आजीविका भय, ६ मरण भय अने ७ अपयशःभय-एवां तेनां नाम छे. माणसने पोतानी माणस जातिथी जे भय थाय ते इहलोक भय, अने वीजी तिर्यंच के देवतानी जातिथी जे भय थाय ते परलोक भय कहेवाय छे. चोर विगेरेथी पैसो के घरनी वीजी चीजो लेवानो जे भय लागे

ते आदान भय अने पोतानो निर्वाह तुटी जवानो भय लागे ते आजीविका भय कहेवाय छे.

पाठ १२ मो.

अढार दूषण भाग २ जो.

दशमुं जुगुप्सा दूषण छे. कोइ खराब गंदकी जेवी वस्तुओ जोइ सूग चडे ते जुगुप्सा कहेवाय छे, तेनो बीजो अर्थ निंदा पण थाय छे. अगीयारमुं शोक दूषण छे. बारमुं काम दूषण के जेमां विषय भोगनी इच्छा थाय छे. तेरमुं मिथ्यात्व दूषण छे. जेमां दर्शन मोह एटले विरूद्ध धर्म उपर मोह थाय छे. चौदमुं अज्ञान दूषण छे. जेमां मूढपणुं माप्त थाय छे, पंदरमुं निद्रा दूषण छे. तेमां प्रमादने लइ दरेक बाबतमां गफलत थया करे छे. सोळमुं अप्रत्याख्यान दूषण छे. प्रत्याख्यानने मागधी भाषामां पच्चख्खाण कहे छे, अमुक जातनी अभिलाषा ओछी करवी ए प्रत्याख्याननो हेतु छे. जे प्रत्याख्यान करे नहिं, ते सर्वनी अभिलाषावाळो एटले तृष्णावाळो कहेवाय छे. सत्तरमुं अने अढारमुं राग अने द्वेषनुं दूषण छे. जे रागी तथा द्वेषी होय, ते मध्यस्थ के तटस्थ रही शकतो नथी. तेवा रागी अने द्वेषीमां क्रोध, मान अने मायानो संभव छे.

उपर कहेलां अढार दूषणथी रहित एवा अर्हंत भग-

वंत परमेश्वर छे. जेमां अढार दूषण मांहेलुं एक दूषण होय ते परमेश्वर कहेवाता नथी.

सारांश प्रश्नो.

१ एकंदर अढार दूषणनां नाम आपो, २ अंतराय एटले शुं ? ३ अंतराय शब्द कोनी कोनी साथे लगाडाय ? ते जणावो, ४ भोग अने उपभोगनो शो अर्थ ? ५ हास्य, रति अने अरति ए शब्दोना अर्थ आपो, ६ भय केटला प्रकारना ? ७ इहलोक भय, परलोक भय, आदान भय, अने आजीविका भयना अर्थ समजावो. ८ जुगुप्सा एटले शुं ? ९ काम, मिथ्यात्व, अज्ञान, निद्रा, ए दूषणोनो अर्थ समजावो. १० प्रत्याख्यान एटले शुं ? तेनो शो हेतु ? अने तेने मागधी भाषामां शुं कहे छे ? ११ राग अने द्वेषथी माणसने शुं थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी व्याख्या करी बताववी.

विघ्न, वीर्य, लाभ, अकस्मात्, आजीविका, तिर्यंच, आदान, विषयभोग, दर्शनमोह, विरुद्धधर्म, मूढपणुं, प्रमाद, अभिलाषा, तृष्णा, मध्यस्थ, तटस्थ, मान, माया, अपयशः

पाठ १३ मो.

अढार दूषण विषे कवित्त.

दोहा.

दान, लाभ ने वीर्य ने, भोग अने उपभोग;
अंतराय जे [1]तेमना, हास्यतणो वळी योग. १

रति अरति भय शोक ने, निंदा ने वळी काम;
[2]मिथ्या ने अज्ञानता, ते पछीं निद्रा नाम. २

अविरति राग अने वळी, द्वेष अति दुःखकार;
जिनवर कदि न धारता, दूषण एह अढार. ३

पाठ १४ मो.

शुद्धगुरु.

पांच महाव्रतने धारण करनारा शुद्धगुरु कहेवाय छे. अहिंसा, सत्यवचन, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अने अपरिग्रह ए पांच महाव्रत कहेवाय छे. अहिंसा एटले जीवदया, सत्य-वचन एटले साचुं बोलवुं, अस्तेय एटले चोरी न करवी, ब्रह्मचर्य एटले शील पाळवुं, अने अपरिग्रह एटले वस्तु-

---

[1] दानांतराय, लाभांतराय, वीर्यांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय.

[2] मिथ्यात्व.

ओनो संग्रह न करवो. तेमां अस्तेयनुं बीजुं नाम अदत्ता-
दान कहेवाय छे. कोइए आप्या वगर लेवुं नहीं, एवो तेनो
अर्थ थाय छे. शीलनो अर्थ स्त्रीना भोगनो त्याग, एवो
थाय छे. ते शुद्धगुरु गमे तेवी मुश्केली आवे तोपण पो-
ताना व्रतमांथी चलायमान थता नथी, तथा तेओ खरे-
खरा धीर कहेवाय छे. तेओ पोताना फक्त शरीरना नि-
र्वाहनेमाटे बेतालीश जातनां दूषण विनानी भिक्षानो आ-
हार करे छे. ते भिक्षाने माधुकरी वृत्ति कहे छे. मधुकर
एटले भमरो जेम जुदां जुदां पुष्पमांथी सुगंधी रस ले
छे, तेम तेओ जुदा जुदा घरमांथी प्रासुक भिक्षा वोहोरे
छे. ते माधुकरी भिक्षा कहेवाय छे. प्रासुकनो अर्थ अचेत
थाय छे, अने तेवी अचेत भिक्षानो तेओ उपयोग करेछे.
धर्म साधननां उपयोगी उपकरण शिवाय बीजा पदार्थनो
तेओ परिग्रह राखता नथी. तेमनामां राग द्वेषनां परिणाम
बीलकुल होतां नथी. सर्वनी उपर तेओ मध्यस्थ भावे
वर्त्ते छे. भवी जीवोना उपकारने माटे अर्हत भगवंते नि-
रुपण करेल सम्यग् ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रुप धर्मनो
तेओ उपदेश आपे छे. धर्ममां बाधा पोहोंचे तेवा ज्यो-
तिष, शुकन, वैदक अने बीजा संसारना अर्थ शास्त्रनो
उपदेश तेओ करता नथी. तेवा शुद्ध गुरुनां यति, संयमी,
मुनि, संवेगी, साधु, व्रती, श्रमण अने अनगार एवां जुदां
जुदां नाम छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पांच महाव्रत क्यां ? तेमनां नाम आपो. २ दरेक महाव्रतना अर्थ समजावो. ३ अस्तेयनुं बीजुं नाम शुं छे ? ४ अदत्तादाननो अर्थ समजावो. ५ शलिनो अर्थ शो ? ६ भिक्षानां केटलां दूषणो छे ? ७ माधुकरी वृत्तिनो अर्थ शो ? ८ प्रासुकनो अर्थ शो ? ९ शुद्ध गुरुनां बीजां क्यां क्यां नाम छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.
संग्रह, चलायमान, निर्वाह, आहार, अचेत, उपकरण, परिणाम, मध्यस्थभावे, भवीजीव, निरुपण, बाधा, अर्थशास्त्र.

पाठ १५ मो.

चरण सीत्तेरी.

शुद्धगुरु एवा मुनिना धर्ममां चरण एटले नित्य करवानी क्रियाना सीत्तेर प्रकार छे, ते चरण सीत्तेरीना नामथी ओळखाय छे. व्रतना पांच प्रकार छे, श्रमण एटले साधुना धर्मना दश प्रकार छे, संयमना सत्तर भेद छे, वैयावृत्यना दश प्रकार छे, ब्रह्मचर्य गुप्तिना नव प्रकार छे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र त्रण प्रकारे छे, बार प्रका-

रनुं तप छे, अने क्रोध, मान, माया अने मोहनो निग्रह–ए चार प्रकार छे–ए सर्व मळी सीत्तेर भेद थाय छे. आ सीत्तेर प्रकारे वर्णवेलो मुनि धर्म शुद्ध गुरुमांज होय छे. ज्यांसुधी ए धर्म प्राप्त थयो न होय, त्यांसुधी खरेखरा शुद्ध गुरु कहेवाता नथी. आ चरण सीत्तेरीथी शुद्ध गुरुनी ओळखाण थाय छे. तेवा सीत्तेर प्रकारना चरणना भेदथी शुद्ध गुरुनो धर्म सर्वमां उत्तम गणाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ शुद्ध गुरुना धर्मना केटला प्रकार छे ? अने तेनुं शुं नाम छे ? २ व्रतना केटला प्रकार ? ३ श्रमण धर्मना केटला प्रकार ? ४ संयमना केटला भेद ? ५ वैयावृत्यना केटला प्रकार ? ६ ब्रह्मचर्य गुप्तिना केटला प्रकार ? ७ ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना केटला प्रकार ? ८ तप केटला प्रकारनुं ? ९ चरण सीत्तेरी एटले शुं ? १० चरण-शब्दनो अर्थ शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

श्रमण, संयम, वैयावृत्य, ब्रह्मचर्य गुप्ति, माया, निग्रह.

पाठ १६ मो.

करण सीत्तेरी.

शुद्धगुरुना धर्ममां करण एटले कांइ पण प्रयोजनने लइ करवानी क्रियाना बीजा सीत्तेर भेद कहेला छे, ते करण सीत्तेरीना नामथी ओळखाय छे. पिंड विशुद्धिमां पिंड, शय्या, वस्त्र अने पात्र आ चार प्रकार आवे छे. पिंड शब्दनो अर्थ आहार थाय छे. पांच प्रकारनी समिति, बार भावना, बार प्रतिमा, पांच इंद्रियोनो निरोध, प्रतिलेखनाना पचवीश प्रकार, त्रण गुप्ति अने चार अभिग्रह—ए कुल मळीने करणना सीत्तेर भेद थाय छे. प्रतिलेखनाने मागधी भाषामां पडिलेहणा कहे छे. आ सीत्तेर प्रकारनो धर्म पण शुद्ध गुरुमांज होय छे. खरेखरा शुद्ध गुरुए आ करण सीत्तेरी पण अवश्य आचरवा योग्य छे. नित्य करवानी अने कांइ पण प्रयोजनने लइ करवानी क्रियारूप चरण सीत्तेरी अने करण सीत्तेरी ए बंनेथी शुद्ध गुरुनुं स्वरूप सारी रीते ओळखी शकाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ करण एटले शुं ? अने तेना केटला भेद छे ? २ पिंड शब्दनो अर्थ शुं ? ३ करण सीत्तेरीना बधा भेद गणावो, ४ चरण सीत्तेरी अने करण सीत्तेरीमां शो त-

फावत छे? ५ प्रतिलेखनाने मागधी भाषामां शुं कहे छे?

शिक्षके नीचेना शब्दोना अर्थ समजाववा.

प्रयोजन, पिंड विशुद्धि, शय्या, निरोध, प्रतिलेखना, अवश्य.

पाठ १७ मो.

शुद्ध गुरु विषे कविता.

भुजंगी छंद.

[1]दया दिल विषे जीवनी नित्य धारे,
[2]सदा सत्य वाणी विवेके उचारे;
[3]न ले अन्यनी वस्तुओने अबुझी,
भजो श्रावको शुद्ध तेवा गुरुजी. १

[4]रही ब्रह्मचारी सदा शील पाळे,
[5]परिग्रह विषे मोहने नित्य टाळे;
महाव्रत धरी बोध आपे रमूजी,
भजो श्रावको शुद्ध तेवा गुरुजी. २

---

१ पेलु अहिंसा व्रत २ बीजु मृषावाद न बोलवानु ३ त्रीजु अस्तेय. ४ चोथु ब्रह्मचर्य. ५ पाचमु अपरिग्रह.

चळे नै कदी धर्मथी धीर रहेता,
फरी नित्य माधुकरी भीख लेता;
करी शुद्ध लेता बधी चीज पुंजी,[1]
भजो श्रावको शुद्ध तेवा गुरुजी. ३

न राखे कदी संग्रहीने पदार्थो,
न धारे हृदे राग ने द्वेष अर्थो;
रहे ध्यानमां भावथी देव पूजी,
भजो श्रावको शुद्ध तेवा गुरुजी. ४

तटस्थे रही धर्मनो बोध आपे,
न संसारना बोधमां चित्त स्थापे;
न छोडे हृदेथी प्रभावी प्रभुजी,
भजो श्रावको शुद्ध तेवा गुरुजी. ५

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

विवेके, उचारे, अन्यनी, माधुकरी, संग्रहीने, तटस्थे, प्रभावी, हृदेथी.

१ पुंजी एटले जतनाथी वाळीने.

पाठ १८ मो.

शुद्ध धर्म.

दुर्गतिमां पडता एवा प्राणीने धारण करे ते धर्म कहेवाय छे. कारण के, धर्म प्राणीने दुर्गतिमां पडवा देतो नथी. ए धर्मना १ सम्यक् ज्ञान, २ सम्यग् दर्शन अने ३ सम्यग् चारित्र—एवा त्रण भेद छे. सम्यक् एटले सारी रीते अर्थात् सात नय प्रमाण सहित एवा नव तत्वोनुं स्वरुप जेमां जाणवामां आवे छे, ते सम्यग् ज्ञान कहेवाय छे. जैन शास्त्रमां नव तत्वो मानेलां छे. १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव, ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बंध, ९ मोक्ष—ए नव तत्वो कहेवाय छे. शुद्ध धर्मनो बीजो प्रकार सम्यग् दर्शन छे. सम्यग् दर्शननो अर्थ सम्यक्त्व थाय छे. ए सम्यग् दर्शन अथवा सम्यक्त्वना १ व्यवहार सम्यक्त्व अने २ निश्चय सम्यकत्व एवा मुख्य बे प्रकार छे. यथार्थ तत्वना स्वरुपने जाणवा पूर्वक जे रुचि थाय तेज सम्यकत्व छे. १ देवतत्व, २ गुरुतत्व अने ३ धर्म तत्त्वने यथार्थ जाणवानी रुचि थवाथी सम्यकत्व थाय छे. तेवा सम्यकत्व उपर जे पुरुष श्रद्धा राखे, ते सम्यकत्ववाळो कहेवाय छे. ते श्रद्धा पण व्यवहार श्रद्धा अने निश्चय श्रद्धा एवा बे प्रकारनी छे.

शुद्ध धर्मनो त्रीजो प्रकार सम्यक् चारित्र छे. ते चारित्रना सर्व चारित्र अने देश चारित्र एवा बे भेद छे. सर्व चारित्र साधुमां होय छे. अने देश चारित्र श्रावकमां होइ शके छे. देश चारित्रना बार प्रकार छे. ते श्रावकनां बारव्रत कहेवाय छे. अने ते गृहस्थ धर्मना आधार रुप छे. सर्व चारित्र ते पंच महाव्रत रुप साधु धर्म. आ प्रमाणे सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन अने सम्यक् चारित्र ए शुद्ध धर्मना त्रण भेद छे. ए त्रण भेदवाळो शुद्ध धर्म आराधवाथी मनुष्य उत्तम गतिने प्राप्त करे छे. ज्यांसुधी माणस शुद्ध धर्मने प्राप्त करतो नथी, त्यांसुधी ते हलकी दशा भोगवे छे, अने मृत्यु पाम्या पछी नठारी गतिमां जाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ धर्म शब्दनो अर्थ शो ? २ धर्मना केटला भेद छे ? ३ सम्यग् ज्ञान एटले शुं ? ४ जैन शास्त्रमां केटलां तत्वो छे ? ५ सम्यग् दर्शननो अर्थ शो ? ६ सम्यक्त्वना केटला भेद छे ? ७ सम्यक्त्वनो अर्थ शुं ? ८ सम्यक्त्व थाय त्यारे शेमां रूचि थाय ? ९ सम्यक्त्ववाळो कोण कहेवाय ? १० श्रद्धाना केटला प्रकार ? ११ सम्यक् चारित्रना केटला भेद छे ? १२ साधु अने श्रावकमां केवुं चारित्र होय ? १३ श्रावकनां बार व्रतने शुं कहे छे ? १४ साधु

धर्म शुं कहेवाय ? १५ शुद्ध धर्मने आराधवाथी शुं थाय छे ? १६ धर्मनी आराधना न करवाथी केवी गति थाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

दुर्गति, धारण, नयप्रमाण, व्यवहार, निश्चय, जाणवा पूर्वक, रुचि, सर्व चारित्र, देशचारित्र, आधाररूप, आराधवाथी, मृत्यु, पंच महाव्रत.

पाठ १९ मो.

कुदेव.

जे देवनी पासे स्त्री होय, तथा जे देवनी प्रतिमानी पासे स्त्री होय, तेमज शस्त्र, धनुष, चक्र, त्रिशूल, जपमाल, अने कमंडल प्रमुख पासे होय, तेओ कुदेव कहेवाय छे. कारण के, ए बधां चिन्हो राग द्वेषनां छे. जे देव एवां दूषणवाळां चिन्हो पासे राखे, ते देव रागी, द्वेषी अने कामी होवा जोइए. काम रागने वश थवाथी तेवा कुदेवोए परस्त्री, पोतानी स्त्री, पुत्री, माता, बहेन अने पुत्रवधू प्रमुख स्त्रिओनी साथे अनेक कुचेष्टा अने काम क्रीडा करेली छे, एवुं तेमना चरित्रमांथी पण सांभळ-

वामां आवे छे. जे देव पोते रागी थइ कामरुप अग्निना कुंडमां प्रज्वलित थइ रह्या छे, तेनामां इश्वरपणुं कदिपण होइ शकतुं नथी, तेथीज तेओ कुदेव छे.

शस्त्र, धनुष, चक्र, त्रिशूल प्रमुख जे द्वेषनां चिन्ह छे, तेने जे पोताना पासे राखे, ते अवश्य कोइ शत्रुने मारनार होवो जोइए, ते विना शस्त्र राखवानुं प्रयोजन नथी. तेवा शत्रुना विरोधी देव ते कुदेव कहेवाय छे. वळी जेने बीजानो भय लागे, ते पोतानी पासे हथीयार राखे छे, ज्यारे परमेश्वर पोते भय संयुक्त छे, तो तेमनी सेवा करवाथी बीजा प्राणी निर्भय केम थइ शके ? आवा रागी अने द्वेषी न होय, तेवा वीतराग प्रभु एकज शुद्ध देव कहेवाय छे.

जेना हाथमां जपमाळा छे, ते सर्वज्ञ होइ शके नहिं. जे सर्वज्ञ होय, तेने जपमाळा राखवानी जरुर नथी. कारण के सर्वज्ञ होय, ते माळाना मणका विना जपनी संख्या करी शके छे. वळी जे सर्वथी श्रेष्ठ होय, तेने बीजा कोइना नामनो जप करवो जोइए नहीं. तेथी जपमाळाने धारण करनारा देव, ते कुदेव छे.

स्वारी करवी ते बीजा जीवने पीडा करवानुं कारण छे, अने परमेश्वर तो दयाळु छे, ते बीजा जीवने पीडा केम उत्पन्न करे ? एथी बीजा जीव उपर स्वारी करनारा देव पण कुदेव छे.

जे अपवित्र होय तेने जळनुं काम पडे छे, अने तेथी तेने जळनुं पात्र राखवुं पडे छे, पण परमेश्वर तो सदा पवित्र छे, तेने कमंडळ राखवानुं शुं काम छे ? आथी तेवुं चिन्ह राखनारा देव कुदेव कहेवाय छे.

जे शरीरे भस्म लगाडे, धुणी तापे, नग्न थइ कुचेष्टा करे, भांग, अफीण, धत्तुरो अने मदिरा प्रमुख पीए, अशुद्ध आहार करे, बळद, सिंह, पक्षी अने बीजां प्राणीनी उपर स्वारी करे, ते कुदेव छे. तेमज जे नाटक, हास्य, रासक्रीडा विगेरेना रसमां मग्न छे, तथा जे वाजित्रना नाद साथे नाचे छे, कुतुहळथी बीजाने नचावे छे, अने संगीत करे छे, ते पण कुदेव छे.

आवा कुदेवने भजवाथी प्राणीनुं कदि पण कल्याण थतुं नथी, माटे सर्व भव्य प्राणीओए अढार दूषण विनाना शुद्ध देवनी भक्ति अने सेवा पूजा करवी, के जेथी तेमने आलोक अने परलोकनुं कल्याण प्राप्त थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ केवा देव अने केवी प्रतिमा कुदेव कहेवाय छे ? २ राग द्वेषनां चिन्हो कयां गणाय ? ३ कुदेवना चरित्रमां केवुं सांभळवामां आवे छे ? ४ द्वेषनां चिन्हो केवां कहेवा-

य छे ? ५ शुद्धदेव कोण कहेवाय, ? ६ जपमाळा राखवाथी शी न्यूनता गणाय ? ७ उत्तमदेव दयाळु होय अने कुदेव दयाळु न होय तेनुं कारण कहो, ८ जळनुं कमंडल कोण राखे ? ९ एवुं चिन्ह राखनारा देव केवा कहेवाय ? १० कुदेवनां बीजां लक्षणो जे जाणता हो, ते कहो. ११ केवा देवनी भक्ति अने सेवा पूजा करवी जोइए ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शस्त्र, धनुष, चिन्ह, पुत्रवधू, कुचेष्टा, कामक्रीडा, प्रज्वलित, प्रयोजन, विरोधी, भय संयुक्त, निर्भय जपमाळा, उत्पन्न, भस्म, धुणी, मदिरा, रास क्रीडा.

पाठ २० मो.

कुगुरु अने कुधर्म.

स्त्री, धन, धान्य, सुवर्ण, रुपा प्रमुख धातु, क्षेत्र, घर, हाट, हवेली विगेरे सर्व स्थावर मिलकत तथा पशु, ढोर,

अश्व, वाहन विगेरे सर्व जंगम मीलकतनी जे इच्छा करे छे, मद्य, मांस विगेरे बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंत काय अने बीजा अशुचि एवा सर्व आहारनुं जे भोजन करनारा छे; सर्व जातना परिग्रहने जेओ पासे राखे छे; जेओ ब्रह्मचर्यने पाळता नथी, अने जेओ मिथ्या उपदेश करनारा छे, तेओ कुगुरु कहेवाय छे.

स्त्री प्रमुख परिग्रह धरनारा अने जीवहिंसाना आरंभने करनारा ए कुगुरु पोतेज बुडे छे, तो बीजाने शी रीते तारी शके ? जे पुरुष पोतेज दरिद्री होय, ते बीजाने केवी रीते धनवान् करी शके ? एवा गुरुनी पासेथी उत्तम प्रकारनो बोध मळतो नथी, तेवा कुगुरु शरीरनी शोभा वधारवाने मर्दन पूर्वक स्नान करे छे; भक्तोनी आगळ अनेक जातनी सेवा करावे छे; कोमळ पलंग उपर सुता सुता पंखो नखावे छे, पगचंपी करावे छे; गरमी लागे त्यारे, पाडानी जेम सरोवरमां जइ पडे छे, हाथी, घोडा, रथ, विगेरे वाहनोपर बेसी चाले छे, सर्व प्रकारनां फळ भक्षण करे छे, पैसानो संग्रह राखे छे, मोटां मोटां मकानोमां मठ बांधी बेसे छे; अनेक जातना सरंजाम राखी महंत बने छे, अने लोकोनी पासेथी बळात्कारे धन लइ जात जातना वैभव विलास भोगवे छे. आवा कुगुरुनी सेवा करवी न जोइए. दरेक श्रावके प्रथम शुद्ध गुरुनुं स्वरुप जाणी प्रवृत्ति करवी जोइए. आवा कुगुरुओ हमेशां मिथ्या

उपदेशने आपनारा छे. ए मिथ्या उपदेशना स्वरुपमां प्रथम त्रणसो ने त्रेसठ मत उत्पन्न थया छे. तेमां एकसो ने एंशी मत क्रियावादीना छे, चोराशी मत अक्रियावादीना छे, सडसठ मत अज्ञान वादीना छे, अने बत्रीश मत विनय वादीना छे. तेमणे चलावेला मतमां जे धर्मनुं स्वरुप रहेल छे, तेज कुधर्म समजवो. एवा कुधर्मने सेववाथी प्राणीओने दुर्गति प्राप्त थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ कुगुरु शेनी इच्छा करे छे ? २ कुगुरु केवुं भोजन करे छे ? ३ कुगुरु केवो उपदेश आपे छे ? ४ कुगुरु बीजाने तारी शके के नहि ? ५ कुगुरुनी बीजी केवी प्रवृत्तिओ होय, ते संक्षेपमां जणावो. ६ कुगुरुना मिथ्या उपदेशथी एकंदर केटला मत उत्पन्न थया छे ? ७ क्रियावादी अने अक्रियावादीना केटला मत छे ? ८ विनयवादीना केटला मत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

धान्य, स्थावर, अश्व, जंगम, अभक्ष्य, अनंतकाय, अशुचि, आरंभ, मर्दन, मत, क्रियावादी, अक्रियावादी, विनयवादी, कुधर्म.

पाठ २१ मो.

कुदेव विषे कविता.

सवैया एकत्रीशा.

जे [1]वानिता पासे निज राखे, प्रतिमानी पासे पण नार,
[2]शूल चक्र ने धनुष धरे जे, [3]नीर कमंडल ने जपमाळ;
राग द्वेषनां चिन्हो राखी, राग द्वेषनी राखे टेव,
श्रावक जन मानो नहि तेने, ए छे दूषित सर्व कुदेव. १

कर्म कुचेष्टा करता धरता, [4]निज पर नारीतणो न विवेक,
काम विषयमां लंपट थाता, रहेता नित्य छकेला छेक;
इश्वर नाम नकामुं धारे, तेवानी शुं करवी [5]सेव,
श्रावक जन मानो नहि तेने, ए छे दूषित सर्व कुदेव. २

क्यम [6]सर्वज्ञ धरे जपमाळा, [7]शुद्ध धरे शुं कमंडळ आप,
इश्वरमां होवे शुं क्यारे, कपट भरी छळतानी छाप;
पशु पक्षीपर स्वारी करता, क्यम पीडे परने शुभ देव,
श्रावक जन मानो नहि तेने, ए छे दूषित सर्व कुदेव. ३

भस्म लगावे, धूणी तापे, नग्न फरे करी [8]भंगापान,
नृत्य करे ने रास रमाडे, युद्ध करी ले परनां जान;

---

१ स्त्री. २ त्रिशूळ ३ जळनुं कमंडळ ४ पोतानी स्त्री अने परस्त्री.
५ सेवा. ६ सर्व जाणनार, ७ पवित्र—शुचि ८ भांग पवी ते.

एवा देवज दुर्गति आपे, सद्गति कापे ते [1]तत्खेव,
श्रावक जन मानो नहि तेने, ए छे दूषित सर्व कुदेव. ४

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वनिता, शूल, नीर, कुचेष्टा, सर्वज्ञ, शुद्ध, छळता, परने, भस्म, धूणी, रास, सद्गति.

पाठ २२ मो.

जिन प्रतिमा.

जैन शास्त्रमां विशेषावश्यक नामे एक सूत्र छे. तेनी अंदर घणी जातना धर्म संबंधी विषयो आपेला छे. तेमां चार जातना निक्षेप कहेला छे. निक्षेपनो अर्थ स्थापन करवुं थाय छे. १ नाम निक्षेप, २ स्थापना निक्षेप, ३ द्रव्य निक्षेप अने ४ भाव निक्षेप एवां तेनां नाम छे. नमो अरिहंताणं एम कहेवुं, ते पहेलो नाम निक्षेप कहेवाय छे, कारणके, एमां भगवंतना नामनो निक्षेप छे. ए पदनो जप करवाथी अनेक जीव आ संसाररुप समुद्रने तरी गया छे. बीजा स्थापना निक्षेपमां अर्हतनी प्रतिमा आवे छे. ते प्रतिमा दोषवाळां चिन्होथी रहित होय छे. स्वभावथीज सु-

१. तत्काळ.

दर होय छे. ते सम चोरस संस्थानवाळी अने पद्मासने बेठेली होय छे. ध्याननी मुद्रावाळी अने शांत देखाय छे. तेनी सेवा, पूजा अने भक्ति करवाथी अनंत जीवोनां कल्याण थयां छे. जेम आपणे शास्त्रने परमेश्वरनां वचन रुप सत्य मानीए छीए, तेवीज रीते आपणे भगवंतनी प्रतिमाने मानवी जोइए. जेम कागळो उपर श्याहीथी पडेला अक्षरोने वांचवाथी परमेश्वरना कथननो बोध थाय छे, तेवीज रीते परमेश्वरनी प्रतिमा देखवाथी पण परमेश्वरना स्वरुपनो बोध थाय छे. जेम शास्त्र सांभळवाथी परमेश्वरनां वचननो बोध थयो, तोपण आस्तिक भक्तजन जेम शास्त्रने उंचा स्थानमां राखे छे, सुंदर रुमालोमां लपेटी राखे छे, अने पूजा, भक्ति, बहुमान प्रमुख करे छे, तेम वळी जेम शास्त्रनां वचन विनयपूर्वक सांभळवाथी भक्तजनो अनेक लाभनो अनुभव करे छे, तेवीज रीते जिन प्रतिमानी विनय तथा बहुमान पूर्वक भक्ति करवाथी तेनी शांत मुद्रा सेवक जनने परम शांत रस आपी, अनेक लाभ उत्पन्न करावे छे. तेमज प्रतिमा देखवाथी पण परमेश्वरना स्वरुपनो बोध थाय छे. आथी अवश्य करी जिन प्रतिमानी पूजा करवी जोइए.

त्रीजा द्रव्य निक्षेपनुं स्वरुप एवुं छे के, जे जीवे तीर्थंकर नाम कर्मनो निकाचित बंध करेलो छे, ते जीवमां भविष्यना गुणने आरोपण करवा, एटले एम मानवुं के,

भविष्यमां आवा तीर्थंकर भगवान् थशे, एवो वर्त्तमान काळमां तेनामां आरोप करीने तेमनुं वंदन, पूजन करवुं, तेम करवाथी अनेक जीवोनां कल्याण थएल छे.

चोथा भावनिक्षेपनुं स्वरुप एवुं छे के, वर्त्तमानकाळमां सीमंधर विगेरे तीर्थंकर केवळ ज्ञानी, समवसरणमां विराजमान, भव्य जीवोने प्रतिबोध करनार अने चतुर्विध संघनी स्थापना करनारा भाव अर्हत छे, जेमनी सेवा करवाथी अनेक जीव मोक्ष मेळवे छे.

आ चारे निक्षेपे युक्त अरिहंत देवने जे परमेश्वर मानी सेवा करे, तेमनी आज्ञा माथे धरे, ते प्रथम व्यवहार शुद्ध देवतत्व छे.

सारांश प्रश्नो.

१ निक्षेप शब्दनो अर्थ शुं ? २ निक्षेप केटला ? अने तेनां नाम शुं ? ते कहो, ३ अर्हतनी प्रतिमा कया निक्षेपमां आवे ? ४ प्रतिमा केवी जोइए ? तेनुं वर्णन करो, ५ प्रतिमानी पूजा भक्तिथी केवी रीते लाभ थाय ? ते दाखला साथे समजावो, ६ द्रव्य निक्षेप अने भाव निक्षेपनुं स्वरुप समजावो, ७ व्यवहार शुद्ध देवतत्व एटले शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

जप, दोषवाळां चिन्हो, संस्थान, मुद्रा, अनंत, बहुमान, मम्मुख, परम शांतरस, आरोप, सीमंधर, देवाधिदेव, व्यवहार शुद्ध, देवतत्व, कल्याण.

पाठ २३ मो.

श्रावक दिन कृत्य.

श्रावकोनां छ कृत्य कहेवाय छे. १ दिनकृत्य, २ रात्रिकृत्य, ३ पर्वकृत्य, ४ चातुर्मासिक कृत्य, ५ संवत्सरकृत्य, अने ६ जन्म कृत्य. आ छ कृत्यनी अंदर पहेलुं दिन कृत्य श्रावके अवश्य जाणवुं जोइए. दिन कृत्य एटले श्रावके दिवसमां शुं शुं कार्य करवुं ते. सवारे बे घडी रात बाकी होय त्यारे दरेक श्रावके उठवुं जोइए. उठीने तेणे चितववुं के, 'हुं श्रावक छुं, हुं क्ये ठेकाणे सुतो हतो, अने क्यारे सुतो हतो ? एवुं चितवीने मंगलिक कार्यने माटे पंच परमेष्ठी नमस्कारनो मंत्र संभारवो. शय्यामां बेसीने तेनुं मनमां स्मरण करवुं; पण मुखथी उच्चार करवो नहीं. जो मुखथी उच्चार करवो होय तो, शय्याथी नीचे बेसी पवित्र थइने करवो. पछी तेणे धर्ममां जाग्रती क-

रवाने आ प्रमाणे चिंतववुं. हुं कोण छुं ? मारी जाति कइ छे ? मारुं कुळ शुं छे ? मारा इष्टदेव, मारागुरु अने मारो धर्म शो छे ? मारो अभिग्रह शो छे ? मारी अवस्था शी छे ? में पाप के पुण्य शां कर्यां छे ? हुं शुं करी शकुं अने शुं न करी शकुं ? मने कोइ देखे छे के नहि ? आत्मा पोतानी भुल जाणे छे, ते छतां केम तजतो नथी ? आज कइ तिथि छे ? क्या अरिहंतनो कल्याणक दिवस छे ? आज मारुं शुं कर्त्तव्य छे ? हुं क्या देशमां छुं, अने क्या काळमां छुं ? आम चिंतववुं ते धर्म जागरणा कहेवाय छे.

आ प्रमाणे धर्म जागरणा कर्या पछी जो बने तो प्रतिक्रमण करवुं, पण कदि प्रतिक्रमण न बने तो, दुष्ट स्वप्नां के दुष्ट विचार आव्या होय, तेने माटे सो अथवा एकसो आठ अगर एकसो वार उच्छ्वासनो कायोत्सर्ग करवो. पछी दिशा जंगल जवुं, अने दातण करवुं. दिशाए जवानुं अने दातण करवानुं स्थान निरवद्य होवुं जोइए. जो उपवास के कांइ व्रत करवुं होय तो, ते दिवसे दातण करवुं नहि. पछी उष्ण प्रासुक जळथी स्नान करवुं. जे भूमि उंची, नीची अने पोली न होय, त्यां श्रावके स्नान करवुं जोइए. जो उष्ण जळ न मळे तो, वस्त्रथी गळेला जळवडे स्नान करवुं, स्नान कर्या पछी भगवंतनी प्रतिमानी पूजा करवी, जो शरीरे गुंमडां थयां होय, अने रुधि-

र विगेरे कांइ झरतां होय, तो प्रभुनी अंगपूजा करवी नहिं. अग्र पूजा तथा भाव पूजा करवामां कांइ दोष नथी. स्नान कर्या पछी पवित्र स्थळे जइ, पवित्र अने कोमळ वस्त्र पहेरवां. ते सारां, नवां, फाटया विनानां, शीव्या विनानां, अने रंगमां धोळां होवां जोइए. जे वस्त्र केडमां पहेर्युं होय, अने जे पहेरीने दीशा जंगल तथा मैथुन सेवन कर्युं होय, तेवुं वस्त्र पहेरी पूजा करवी नहिं. स्त्री होय तो, तेणे कांचली पहेर्या विना पूजा न करवी. पुरूषने बे वस्त्र अने स्त्रीने त्रण वस्त्र पहेर्या विना पूजा करवी नहिं. कादि रेशमी वस्त्र रातां के, पीळां होय, तोपण पूजामां उपयोगी थाय छे. बीजां वस्त्रथी उत्तरासंग करवुं, ते वस्त्र पण अखंड होवुं जोइए, बे कटके शीवेलुं न होवुं जोइए. आ प्रमाणे तैयार थइ श्रावके जिनपूजा करवाने जवुं.

सारांश प्रश्नो.

१ श्रावकोनां केटलां कृत्य छे ? २ श्रावके सवारे क्यारे उठवुं जोइए ? ३ उठ्या पछी शुं चिंतववुं जोइए ? ४ परमेष्टी मंत्रनुं स्मरण क्यां थाय ? अने उच्चार क्यां थाय ? ५ धर्म जागरणामां शेनुं चिंतवन करवुं ? दुष्ट स्वप्नां के दुष्ट विचारो आव्या होय, तेने माटे शुं करवुं ? ७ दीशा अने दातण केवी जग्योए करवुं ? ८ केवी भूमिमां स्नान

करवुं ? ९ प्रभुनी अंगपूजा क्यारे न थाय ? १० स्नान कर्या पछी केवां वस्त्र पहेरवां ? ११ केवां वस्त्र पहेरीने पूजा न थाय ? १२ पूजा वखते केटलां वस्त्रो जोइए ? १३ स्त्रीए पूजा वखते केटलां वस्त्रो राखवां जोइए ? १४ रंगेलां वस्त्र केवां जोइए ? १५ उत्तरासंग केवां व-स्त्रनुं करवुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

पर्वकृत्य, चातुर्मासिककृत्य, संवत्सरकृत्य, जन्मकृत्य, मंग-लिक, जाग्रति, इष्टदेव, अभिग्रह, अवस्था, कल्याणक, धर्म जागरणा, १००–१०८–११२–उच्छ्वास, निरवद्य, प्रा-सुक, उष्ण, अंगपूजा, अग्रपूजा, भावपूजा, मैथुनसेवन, अखंड.

पाठ २४ मो.

जिनपूजा.

पूजा त्रण प्रकारनी छे. १ अंगपूजा, २ अग्रपूजा, अने ३ भावपूजा. अंगपूजामां प्रभुना अंगनी पूजा आवे छे. चडेलां निर्माल्य दूर करवां, प्रमार्जन करवुं, अंग पखाळवुं, पुष्पनी अंजलि करवी, पंचामृत स्नात्रथी शुद्ध जळनी धारा देवी, दूपेला, स्वच्छ, कोमळ अने सुगंधी कषायक

प्रमुख वस्त्रथी अंगलुहणा करवां, बरास, केशर, मिश्र चंदनथी विलेपन करवुं, गोरु चंदन तथा कस्तूरिनां तिलक करवां, सुगंधी पुष्पोथी आंगी रचवी, बहु मूल्यवाळा, सुवर्ण, रत्न, माणेक अने मोतीना अलंकार तथा घरेणां पहेरावबां. तेवी पूजा वस्तुपाळ मंत्रीए सवा लाख जिन बिंबोनी अने दमयंतीए पाछले भवे अष्टापद पर्वत उपर रची हती. [1]ग्रंथिम, [2]वेष्टिम, [3]पूरिम अने [4]संघातिम रुप चतुर्विध विधिथी कमळ, मोगरा, जाइ, जूइ, चंपक तथा गुलाब विगेरे पुष्पोनी माळा, मुगट, शेहरा विगेरेथी आंगी रचवी, फुलना चंदरवा, जाळी, झरुखा करवा, प्रभुना हाथमां बीजोरां, नाळीयर, सोपारी, नागरवेल, मोहोर, रुपीआ अने लाडु धरवा. वासक्षेप करवो, सुगंधमय दशांगधूप करे, आ सर्व अंगपूजामां आवे छे.

बीजी अग्रपूजा ते प्रभुनी आगळ करवामां आवे छे. रूपाना, सोनाना अथवा धोळा अक्षत (चोखा) तथा सरसव विगेरेथी अष्टमंगळ आळेखवा. आ प्रकार श्रेणिक राजाए दररोज एकसो ने आठ सोनाना जवथी साथीओ पूरी कर्यो हतो. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधना वास्ते अनुक्रमे पाटला उपर अक्षतना त्रण पुंज–ढगला करवा. तथा साथीआ करवा. [5]अशन, [6]पान, [7]खादिम

---

१ गुथीने, २ वींटाळीने, ३ पूरीने, ४ जथ्थो करीने—एम चार प्रकारे पुष्पनी पूजा थाय छे. ५ रोटली, भात प्रमुख. ६ शेलडी रस प्रमुख. ७ पकवान्न विगेरे

अने [१]स्वादिम—आ चार प्रकारनां नैवेद्य भगवंतनी आगळ धरवां, जात जातना लीला तथा सुका फळ मेवा आगळ धरवा, तथा चंदनना विलेपनथी अने पुष्पना प्रकरथी पूजन करी, आरति उतारी दीपक पूजा करवी. आ बधी अग्रपूजा गणाय छे.

त्रीजी भावपूजा ते प्रभुनी आगळ मात्र भावथी करवामां आवे छे. आ पूजामां द्रव्य पूजानो व्यापार निषेधवा वास्ते त्रीजी निस्सीही त्रण वार करवी जोइए. भगवंतनी जमणी बाजुए पुरुषे अने डाबी बाजुए स्त्रीए रहेवानुं छे. आशातना टाळवाने माटे जघन्यथी भूमिनो संभव होय तो, नव हाथ प्रमाण, घर देरासरमां जघन्यथी एक हाथ प्रमाण, अने उत्कृष्टथी साठ हाथ प्रमाण अवग्रह छे. तेनी बाहेर बेसीने चैत्यवंदन करवुं. चैत्यवंदनमां प्रभुनां स्तवनो कहेवां, अने पूजाने लगती उत्तम प्रकारनी भावना भाववी. आनुं नाम भावपूजा कहेवाय छे. आ त्रणे प्रकारनी पूजा प्राणीने आलोक तथा परलोकना कल्याणने करनारी छे. गीत अने नृत्य ते अग्रपूजामां अने भावपूजामां पण आवी शके छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पूजाना केटला प्रकार छे ? २ अंगपूजा पूर्वे

---

[१] तांबूल विगेरे.

कोणे कोणे करी हती? ३ पुष्पनी पूजाना प्रकार केटला? तेना शब्द आपीने कहो. ४ अग्रपूजा एटले शुं? ५ पूर्वे अग्रपूजा कोणे कोणे करी हती? ६ नैवेद्यना केटला प्रकार? ते नाम आपी समजावो. ७ अग्रपूजामां पाटला उपर अक्षतना त्रण ढगला करवामां आवे छे, तेनो हेतु शुं छे? ८ भावपूजा केवी रीते करवामां आवे छे? ते समजावो. ९ भावपूजामां त्रण वार निस्सीही कहेवानो शो मतलब छे? १० त्रण प्रकारनी पूजा करवाथी शो लाभ थाय छे? ११ गीत अने नृत्य कइ पूजामां गणाय छे?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

निर्माल्य, प्रमार्जन, अंजलि, पंचामृत स्नान, कषायक, प्रमुख, लुहणा, मिश्र, वासक्षेप, दशांगधूप, अष्टमंगळ, अनुक्रमे, पुंज, प्रकर, व्यापार, निषधवा, निस्सीही, जघन्यथी, उत्कृष्टथी, अवग्रह, परलोक, गीत, नृत्य.

पाठ २५ मो.

पूजाविधि.

जिनपूजा बे प्रकारनी, त्रण प्रकारनी, चार प्रकारनी, पांच प्रकारनी, आठ प्रकारनी, सत्तर प्रकारनी अने ए-

कत्रीश प्रकारनी होय छे. बे प्रकारनी पूजामां १ द्रव्यपूजा अने २ भावपूजा गणाय छे. १ पोते पोतानी जाते पूजानी सामग्री लावे, २ वचनथी बीजा पासे मंगावे, अने ३ मनथी पूजानी सामग्री कल्पी पूजा करे, ए त्रण प्रकारनी पूजा कहेवाय छे. १ फळ, २ नैवेद्य, ३ स्तुति अने ४ भगवंतनी आज्ञा पाळवी—ए चार प्रकारनी पूजा कहेवाय छे. १ पुष्प, २ अक्षत, ३ गंध, ४ दीप अने ५ धूप करवा—ए पांच प्रकारनी गणाय छे. १ जळ, २ चंदन, ३ पुष्प, ४ धूप, ५ दीप, ६ अक्षत, ७ नैवेद्य, अने ८ फळ—ए आठ प्रकारनी पूजा छे १ स्नात्र, २ विलेपन, ३ चक्षुजोडा अथवा बे वस्त्र, ४ वास सुगंध, ५ पुष्पनुं आरोपण, ६ पुष्पनी माळा, ७ पंचरंगी पुष्प चडाववां, ८ भीमसेनी बरासनुं चूर्ण छांटवुं, ९ आभरण पेहेराववां, १० पुष्पनां घर बनाववां, ११ पुष्पनी वृष्टि करवी, १२ पुष्पनी आंगी रचवी, १३ अष्ट मंगळ रचवां, १४ धूप, १५ गीत, १६ नृत्य, अने १७ वाजित्र—ए सत्तर प्रकारनी पूजा कहेवाय छे. १ स्नात्र, २ विलेपन, ३ आभरण, ४ पुष्प, ५ वासपूजा, ६ धूप, ७ दीप, ८ फळ, ९ अक्षत, १० तांबूल, ११ सोपारी, १२ नैवेद्य, १३ जळ, १४ वस्त्र, १५ चामर, १६ छत्र, १७ वाजित्र, १८ गीत, १९ नाटक, २० स्तुति अने २१ भंडारनी वृद्धि—ए एकवीश प्रकारनी पूजा गणाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पूजा केटला प्रकारनी थाय छे ? २ बे प्रकारनी पूजानां नाम आपो. ३ भगवंतनी आज्ञा पाळवी, ते क्या प्रकारनी पूजामां गणाय छे ? ४ पुष्पनी वृष्टि अने पुष्पना घर करवां ते क्या प्रकारनी पूजामां छे ? ५ भंडारनी वृद्धि करवी ते क्या प्रकारनी पूजामां छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

द्रव्यपूजा, भावपूजा, कल्पी, अक्षत, चक्षु, जोडा, भीमसेनीबरास, वृष्टि, वाजिंत्र, तांबूल, वृद्धि.

पाठ २६ मो.

पूजाविधि—भाग २ जो.

स्नान करी शुद्ध वस्त्र पहेरी श्रावके जिनपूजा करवा जवुं. प्रथम देरामां जइ प्रभुनी उपरथी निर्माल्य उतारवां. पछी प्रभुने प्रक्षालन करवुं. प्रथम संक्षेपथी पूजा करी लइ आरति तथा मंगल दीवो करवो. पछी स्नात्र विगेरे पूजा साथे बीजी वार पूजानो आरंभ करवो, देवनी पासे पंचा-

मृत सहित कलशनी स्थापना करवी, अने प्रभुना अलंकार उतारी लेवा. पछी मंत्र बोलतां प्रभुना जमणा अंगने कळशथी प्रक्षालन करी, चंदन चर्ची धूप उखेववो. पछी श्रेणिबंध कळशनी स्थापना करी ते उपर सुंदर वस्त्र ढांकी, केशर, चंद्रने अने धूपथी हाथने पवित्र करवा. पछी श्रावके मस्तकपर तिलक करवुं. हाथ उपर चंदननुं कंकण करवुं अने हाथने धूपथी वासित करवा. पछी स्नात्र करनाराओए श्रेणिबंध उभा रही कुसुमांजलिनो पाठ उच्चारवो. ते पाठनो उच्चार करी एक श्रावक जिनराजना चरण उपर कुसुमांजलि चढावे. सर्व कुसुमांजलिना पाठमां तिलक करवां, तथा चंदन, पुष्प, पत्र विगेरे धूप वासित करी एक स्थळे चढाववां. सर्व कुसुमांजलि करी रह्या पछी जे जिनेश्वर भगवान्नी स्थापना करी होय, तेमना जन्माभिषेकना कळशनो पाठ मधुर स्वरे करवो. [1]घी, शेलडीनो रस, अथवा साकर दुध, दहीं अने सुगंधी जळवडे करी राखेला पंचामृतथी प्रभुने स्नात्र कराववुं. ते वखते धूप करवो, भगवंतनुं शरीर पुष्प रहित न राखवुं. तेमज ज्यां सुधी स्नात्रनी समाप्ति न थाय, त्यां सुधी भगवान्नुं मस्तक शून्य न राखवुं, निरंतर जळधारा अने उत्तम पुष्पोनी वृष्टि प्रभुनी उपर जारी राखवी. वळी स्नात्र करती वखते चामर, संगीत, अने वाजित्र विगेरेनो आडंबर पोतानी शक्ति प्रमाणे करवो. आ प्रमाणे मोटी पूजा भणाववानो

१ घी, दुध, पचामृतमां जे लेवुं, ते गायनुं लेवुं.

विधि जाणी लेवो.

संक्षेपथी जो पूजा करवी होय, तो श्रावके स्नान करी पवित्र थइ देरासरमां जवुं. मुख उपर वस्त्र बांधी आशातना निवारवी. प्रथम प्रभुने स्नात्र करावी, अंग लूही, चंदनथी विलेपन करवुं, पछी पुष्प चडाववां, धूप, करवो, अने उत्तम जातनां नैवेद्य तथा फळ चडाववां. पोतानी शक्ति प्रमाणे जे पदार्थो मळी शक्या होय, ते प्रभुनी पूजामां वापरवा. आ प्रकारे पूजा करवाथी श्रावकने कल्याणनो मोटो लाभ प्राप्त थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पंचामृत एटले शुं ? तेमां कया पदार्थो आवे ते कहो. २ प्रभुने कुसुमांजलि क्यां चडावाय छे ? ३ स्नात्रनी समाप्ति न थाय त्यां सुधी शुं करवुं ? ४ संक्षेप पूजामां श्रावके शुं करवुं जोइए ? ५ पूजा करवाथी शेनो लाभ थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

निर्माल्य, प्रक्षालन, संक्षेप, पंचामृत, कळश, चर्चा, उखेववो, अग्निबंध, मस्तक, कंकण, वासित, कुसुमांजलि, एक स्थळे, जन्माभिषेक, पुष्परहित, समाप्ति, शून्य, निरंतर, वृष्टि, आडंबर.

पाठ २७ मो.

जिनपूजा विषे कविता.

भुजंगी छंद.

करी स्नान ने शुद्धताथी शरीरे,
पछी चैत्य मांहे धरो पाय धीरे;
धरो सद्य सामग्री सर्वे न जुनी,
करो भावथी नित्य पूजा प्रभुनी. १
उतारो प्रभुनाज निर्माल्य अंगे,
पछी स्नात्रने आदरो एक रंगे;
करो स्नात्र कर्ता महामंत्र धूनी,
करो भावथी नित्य पूजा प्रभुनी. २
अभिषेक सारु करो कळश धारा,
भली रीतथी धारजो भाव सारा;
करो लूंहणा शुद्ध राखी विभुनी,
करो भावथी नित्य पूजा प्रभुनी. ३
पछी चंदने चर्चजो शुद्धताथी,
करी केशरे ते सुगंधी सनाथी;
धरो धन्यता भव्यताथी अशूनी,
करो भावथी नित्य पूजा प्रभुनी. ४
पछी धूप सारो सुगंधी प्रसारो,
प्रभु चर्ण पुष्पांजलि सद्य धारो;

धरो भावना अंतरे जे अनूनी,
करो भावथी नित्य पूजा प्रभुनी. ५

मनहर छंद.

स्नात्र, विलेपन, [१]चक्षु [२]वास [३]पुष्प पुष्पमाल,
पंचरंगी कुसुमने बरासनुं चूर्ण छे,
आभरण, पुष्प गृह पुष्पना पगर अने,
पुष्पतणी आंगी शुभ रचनाथी पूर्ण छे;
अक्षतना अष्टमंगल ने धूप गीत नृत्य,
वाजित्र ए पूजा तणा सत्तर प्रकार छे,
एवी पूजा प्रभु तणी प्राणी करो प्रेम धरी,
प्रगट प्रभाव एथी पुण्यनो प्रसार छे. १

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

शुद्धताथी, चैत्य, रंगे, महामंत्र, धूनी, शुद्ध, सनाथी, अनूनी, अशूनी, चक्षु, प्रभाव.

---

१ चक्षु जोडा. २ वास सुगंध ३ पुष्प.

भाग २ जो.

पाठ २८ मो.

जीवनां पांच द्वार.

जीवना बे भेद छे, संसारना जीव, अने मोक्षना जीव. जेमने कर्म होय ते संसारना जीव, अने जेमने कर्म न होय ते मोक्षना जीव कहेवाय छे. जे संसारना जीव छे, तेओने शरीर, आयुष्य, स्वकाय स्थिति, प्राण अने योनि-ना प्रमाणरुप पांच द्वार होय छे. पहेला द्वारथी जीवना शरीरनुं प्रमाण केटलुं छे, ते आपणे जाणी शकीए छीए. बीजा द्वारथी जीवनुं आयुष्य केटलुं छे, ते जाणी श-काय छे. त्रीजा द्वारथी जीवने स्वकाय स्थिति एटले ते जीव मरण पाम्या पछी फरी तेज कायमां केटली वार उ-त्पन्न थाय छे, ए जाणी शकाय छे. चोथा द्वारथी ते जीवमां दश प्राणमांथी केटला प्राण छे, ते आपणे जा-णी शकीए छीए. अने पांचमा द्वारथी ते जीवने चोराशी लाख योनिओमांथी केटली योनिओ छे, ते जाणवामां आवे छे.

आ पांच द्वारथी जीव संबंधी घणी हकीकत आपणने मळे छे. बीजा जे मोक्षना जीव छे, ते सिद्ध परमात्मारूप

होवाथी तेमने कर्मरुप आयुष्य होतुं नथी. ज्यारे आयुष्य न होय, त्यारे प्राण अने योनि पण होतां नथी. अने तेथी करीने तेमने स्वकाय स्थिति तो क्यांथीज होय? ए मोक्षना जीवनी स्थिति आदि सहित अने अंतरहित छे; एटले जे दिवसे अहिंथी तेमनुं सिद्धमां जवानुं थाय, तेथी आदि सहित छे, अने पछी फरीने त्यांथी च्यववानुं नथी, तेथी अंतरहित छे.

सारांश प्रश्नो.

१ जीवना केटला भेद छे? २ जेमने कर्म होय ते कया जीव? अने जेमने कर्म न होय ते कया जीव? ३ जीवनां पांच द्वार कयां? ते गणावो. ४ स्वकाय स्थिति एटले शुं? ५ प्राण केटला छे? ६ योनिओ केटली छे? ७ मोक्षना जीव केवा कहेवाय? ८ मोक्षना जीवने पांच द्वार होय के नहिं? ते कारण साथे जणावो. ९ मोक्षना जीव आदि सहित अने अंतरहित छे, ते केवी रीते?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कर्म, आयुष्य, स्वकाय स्थिति, प्राण, योनि, प्रमाणरुप, पांचद्वार, सिद्ध, परमात्मा, आदि सहित, आदि रहित, च्यववुं.

पाठ २९ मो.

जीवना दश प्राण.

जीवमां वधारेमां वधारे दश प्राण होय छे. ए दश प्राणनां नाम स्पर्शेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, श्रोत्रेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य, मनोबळ, कायबळ, अने वचनबळ, एवां छे. स्पर्शेंद्रिय एटले जेनाथी स्पर्श-(अडकवा) नुं ज्ञान थाय तेवी त्वचा (चामडी) रुप इंद्रिय समजवी. जेनाथी वस्तु जातना स्वाद जाणी शकाय तेवी जिभने रसनेंद्रिय कहे छे. जेनाथी सारी के नठारी गंध लई शकाय, ते नासिका घ्राणेंद्रिय कहेवाय छे. जेनाथी रुप ओळखाय, ते चक्षुरिंद्रिय कहेवाय छे. जेनाथी दरेक शब्द सांभळी शकाय, तेवा कानने श्रोत्रेंद्रिय कहे छे. जे आपणे नीचे अने उंच श्वास लइए छीए, ते श्वासोच्छ्वास कहेवाय छे. अमुक वखत सुधी जेनाथी जीवी शकाय, ते आयुष्य कहेवाय छे. जे मन एटले हृदय तेनुं बळ ते, मनोबळ कहेवाय छे. काया एटले शरीर तेनुं बळ ते, कायबळ कहेवाय छे, अने वचन एटले बोलवानुं बळ ते, वचनबळ कहेवाय छे.

आ दश प्राणना योगथीज जीव जीवी शके छे. तेओमांथी दरेक जीवमां ए दशे प्राण होता नथी. कोइमां ओछा वधता होय छे. अमुक जीवमां केटला प्राण छे, ते विषे आगळ कहेवामां आवशे.

सारांश प्रश्नो.

१ वधा मळी प्राण केटला छे? तेंओनां नाम आपो. २ स्पर्शनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास अने मनोबळना अर्थ समजावो. ३ दरेक जीवमां आ दश प्राण होय के ओछा वधता होय? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्रोत्रेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य, मनोबळ, वचनबळ, कायबळ, त्वचा, स्वाद, हृदय, काय, योग.

पाठ ३० मो.

दशप्राण विषे कविता.

चोपाइ.

सघळा मळी जीवना दश प्राण,
ते पण १ओछा वधता जाण. १

स्पर्श अने रसना वळी घ्राण,
चक्षु श्रवण श्वासोच्छ्वास प्रमाण. २

---

१ एटले कोइ जीवमां ओछा प्राण होय छे, अने कोइ जीवमां वधता प्राण होय छे.

आयुष्य ने ऋणवळ छे जेह,
वचन काया ने मनना तेह. ३

जीवनुं जीवन तेथी होय,
तेह विना नव जीवे कोय. ४

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रमाण, ऋणवळ, जीवन.

पाठ ३१ मो.

संसारी स्थावरजीव भाग १ लो.

जीवना बे भेद छे, संसारी जीव अने मोक्षना जीव. संसारी जीव कर्म सहित अने मोक्षना जीव कर्म रहित कहेवाय छे. ते संसारी जीवना स्थावर जीव अने त्रस जीव एवा बे भेद छे. जे स्थिर रहे ते स्थावरजीव, अने जे हाले चाले ते त्रसजीव कहेवाय छे. अहिं स्थावरजीव विषे प्रथम कहेवानुं छे. स्थावरजीव एक इंद्रियवाळा छे. अने तेना पांच भेद थाय छे. १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय, ४ वायुकाय अने ५ वनस्पतिकाय एवां तेमनां

नाम छे. पृथ्वीकाय जीव पृथ्वीना माटी पाषण विगेरे पदार्थोमां गणाय छे. स्फाटिक, चंद्रकांत, विगेरे जातना मणिओ, खाणमां उत्पन्न थनारां रत्नो, परवाळां, हींगळो, हडताळ, मणसील, पारो अने सोनुं, रुपुं, त्रांबुं, कथीर, जसत, शीसुं तथा लोढुं–ए सात धातु, खडी, माटी, चाक विगेरे हरमजी जातनी लाल रंगनी माटी, पाषाणना कटका साथे मळेली माटी, पलेवा जातनो पाषण, पंचरंगी अबरख, तूरी जातनी माटी, साधारण माटी, दरेक जातना पथ्थर, सुरमो अने सींधालुण, विगेरे ए बधा पृथ्वीकाय जीव गणाय छे.

बीजा अप्‌काय स्थावरजीव, ते पाणीना जीव कहेवाय छे. कूवा विगेरे पृथ्वीमां रहेनारुं जळ, मेघनुं जळ, झाकळनुं पाणी, बरफ, करा, हरितनुं, धुंवरीनु पाणी अने जेने आधारे पृथ्वी रहेल छे, ते घनोदधि विगेरे–ए बधा अप्‌काय स्थावरजीव कहेवाय छे.

त्रीजा तेउकाय स्थावर जीव ते अग्निना जीव कहेवाय छे. अंगारा, तणखा, उल्कापात, अशनि, आकाशमां उडता अग्निना तणखा (कणीया) अने विजळी–ए बधा तेउकाय स्थावर जीव कहेवाय छे.

चोथा वायुकाय स्थावरजीव ते वायुना जीव कहेवाय छे. आकाशमां घास विगेरेने भ्रमावनारो उद्‌भ्रामक वायु, उपरथी नीचे पडतो उत्कलिक वायु, वंटोळीयानो

वायु, महावायु, गुंजारव करनारो गुंजवायु अने नरक तथा देवलोकने आधार आपनारो घनवात अने तनुवात ए बधा वायुकाय जीवना भेद छे.

सारांश प्रश्नो.

१ मुख्य जीवना केटला भेद छे? २ संसारी जीव अने मोक्षना जीवनुं लक्षण शुं? ३ स्थिर अने त्रस जीवमां शो तफावत? ४ स्थावर जीवने केटली इंद्रियो होय छे? ५ स्थावर जीवना केटला भेद छे? ६ पृथ्वीकाय एटले शुं? अने तेमां कइ कइ जात छे? ते कहो. ७ सात धातुओ गणावो. ८ माटीनी कइ कइ जाति पृथ्वीकायमां छे? ९ अप्काय एटले शुं? अने ते कया जीव? ते गणावो. १० तेउकाय जीव एटले शेना जीव? तेनां मुख्य नाम गणावो. ११ वायुकायनी बधी जात कहो. १२ घनोदधि, घनवात अने तनुवात ए कइ जातिना जीवमां छे?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कर्मरहित, कर्मसहित, पृथ्वी, अप्, तेउ, पाषाण, स्फटिक, चंद्रकांत, हरमजी, पलेवा, तूरी, हरितनु, धुंवरी, घनोदधि, घनवात, तनुवात.

पाठ ३२ मो.

संसारी स्थावर जीव भाग २ जो.

वनस्पतिकाय.

पांचमा वनस्पतिकाय स्थावर जीव, ते झाडपाला विगेरेना जीव गणाय छे. ते वनस्पतिकाय जीवना साधारण अने प्रत्येक एवा बे भेद छे. जे एकज शरीरमां अनंता जीव होय, ते साधारण वनस्पतिकाय, अने एक शरीरने विषे एकज जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पतिकाय कहेवाय छे. तेमां साधारण वनस्पतिकाय जीवोमां सूरण विगेरे जेटलां कंद छे ते, उगीने बाहेर नीकळेला अंकुर, कुंपलीया, पांच रंगनी सेवाळ, भूमिफोडा (बीलाडीनी टोप) लीलुं आदु, लीली हळदर, लीलो कचूरो, गाजर, नागरमोथ, वथुलांनुं शाक, थेगी, पालखानुं शाक, बीज बीनानां कुणां फळ, अने जेनो कणशलो अथवा पोंक छानो होय एटले जेना कण पाधरा देखाता न होय, तथा जेनी नसो अथवा सांध्यो स्पष्ट देखाती न होय ते, शण तथा जुवार विगेरेनां पात्रां, सर्व जातना थोर, कुंवारनां लावरां, गूगळ, अने गळो विगेरे आवे छे. ए शिवाय जे काप्या होय तोपण वाव्याथी फरीने उगे ते बधा साधारण वनस्पति अथवा अनंतकाय कहेवाय छे.

ते अनंतकायने ओळखवा माटे तेनां लक्षणो जीववि-

चारना कर्त्ताए आ प्रमाणे आप्या छे के, जे झाडमां क-णसलां, सांधाओ अथवा नसो अने पर्व एटले गांठो ए त्रण जोवामां आवतां न होय, अने जेने भांगवाथी बे सरखां फाडीयां थइ शकतां होय, जेमां तांतणा न होय, अने जे छेदवाथी पण फरी वार उगतां होय, ते साधारण वनस्पतिकाय अथवा अनंतकाय कहेवाय छे. तेनाथी उ-लटां जेनां लक्षण होय, ते प्रत्येक वनस्पतिकाय समजवां.

प्रत्येक वनस्पतिकायमां एक शरीरनी अंदर एकज जीव होय छे. ते आ प्रमाणे छे— १ सर्व प्रकारनां फळ, २ सर्व जातनां फुल, ३ सर्व जातनी उपरनी छाल, ४ सर्व जातनां लाकडां, ५ सर्व जातनां मूळ, ६ सर्व जा-तनां पांदडां अने ७ सर्व जातनां बीज—ए सातेमां एक एक जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पतिकाय कहेवाय छे. का-रण के, ते साते प्रत्येक एटले जुदा जुदा जीवरुप छे.

आ पांचे संसारी स्थावर जीवना भेद बादर कहे-वाय छे. एवी रीते बीजा पांच स्थावर सूक्ष्म कहेवाय छे. ए सूक्ष्म जातना स्थावर जीव वधा चौद राजलोक-मां व्यापीने एवी बारीकीथी रह्या छे के, आपणी आंखो-थी जोइ शकाता नथी. तेमनुं आयुष्य अंतर्मुहूर्त्तनुंज होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ वनस्पतिकायना जीव क्या कहेवाय ? २ तेओना मुख्य केटला भेद छे ? ३ साधारण वनस्पतिकाय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय कोने कहेवाय ? ४ साधारण वनस्पतिकायना जीव क्या ? तेनां नाम आपो. ५ अनंतकाय जीव शी रीते ओळखाय ? तेनां लक्षण कहो. ६ साधारणकाय अनें अनंतकाय जीव जुदा जुदा छे के एकज छे ? ७ प्रत्येक वनस्पतिकायना जीव शी रीते होय ? ८ वादर अने सूक्ष्म ए कोना भेद छे ? ९ सूक्ष्म स्थावर जीव क्यां रहे छे ? अने ते जोइ शकाय तेवा छे के नहिं ?

पाठ ३३ मो.

संसारी स्थावर जीव भाग ३ जो.

वधा सूक्ष्म अने वादर पृथ्वीकाय विगेरे एकेंद्रिय जीवोना शरीरनुं प्रमाण अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं होय छे. तेमां प्रत्येक वनस्पतिना शरीरनुं प्रमाण एक हजार योजनथी कांइक वधारे छे. समुद्र विगेरेमां उत्सेध अंगुल प्रमाण हजार योजनना उंडा पाणीमां कमलनां नाळवां रहेलां होय छे, अने आ अढी द्वीपनी वाहेर एवी पण केटलीक लताओ पण रहेली छे, एम शास्त्रमां

कहेवाय छे. अंगुलना असंख्यातमा भागना घणा भेदो छे, ते आगळ वीजां पुस्तकोमां स्पष्ट करवामां आवशे. ए संसारी पांच प्रकारना स्थावर जीवनुं आयुष्य दरेक भेदनुं जुदुं जुदुं कहेलुं छे. पृथ्वीकाय जीवोनुं आयुष्य वावीश हजार वर्षनुं छे, अप्काय जीवोनुं सात हजार वर्षनुं छे, वायुकाय जीवोनुं त्रण हजार वर्षनुं छे, प्रत्येक वनस्पतिकायनुं दश हजार वर्षनुं छे, अने तेउकाय जीवोनुं त्रण अहोरात्र (रात अने दिवस) छे. आ आयुष्यनुं प्रमाण उत्कृष्टथी जाणवुं. जघन्यथी तो तेमनुं आयुष्य अंतर्मुहूर्त्तनुं छे, तेमज पृथ्वीकाय विगेरे पांचे प्रकारना स्थावर जीव जे सूक्ष्म, साधारण वनस्पति अने संमूर्छिम मनुष्यो जे गर्भज मनुष्योनां मळ, मूत्र विगेरेमां उत्पन्न थाय छे, ते वधाओनुं आयुष्य उत्कृष्टथी अने जघन्यथी एक अंतर्मुहूर्त्त मात्रनुं छे.

ए पृथ्वीकाय विगेरे पांच स्थावर एकेंद्रिय जीवो छे, तेमनी स्वकाय स्थिति एटले एकेंद्रियपणे रहेवानी स्थिति, असंख्य उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी काळ सुधी होय छे, एटले तेओ तेज कायमां उत्पन्न थइने फरीने त्यांज नाश पामे छे, अने अनंतकाय वनस्पतिना जीवो अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळ सुधी पोतानी कायमां उत्पन्न थइने तेज कायमां नाश पामे छे. जीवोमां वधा मळीने दश प्राण होय छे. स्पर्श, इंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्रोत्रेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य, मनोवळ, कायबळ अने वचनबळ, ए दश प्राण कहेवाय छे. एकें-

द्रिय स्थावर जीवोने ए दश प्राणमांथी स्पर्शेन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य अने कायबल, ए चार प्राण होय छे. पांच प्रकारना स्थावरोमां पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय अने वायुकाय, ए चार प्रकारना जीवने दरेकने सात सात लाख योनिओ छे, प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोने दश लाख अने साधारण वनस्पतिकाय जीवोने चौद लाख योनिओ होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय विगेरे स्थावर जीवोना शरीरनुं प्रमाण केटलुं ? २ प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोना शरीरनुं प्रमाण केटलुं छे ? ३ वनस्पतिकायमां तेटला प्रमाणवाळा वनस्पति होय छे के नहिं ? अने ते क्यां होय छे ? ४ अंगुलना असंख्याता भागना केटला भेद छे ? ५ पांच प्रकारना स्थावर जीवोनुं जुदुं जुदुं आयुष्य कहो. ६ ते आयुष्य उत्कृष्टथी अने जघन्यथी केटलुं छे ? ७ स्थावर जीवनी स्वकायस्थिति केटली छे ? ८ प्राण केटला होय छे ? ९ स्थावर जीवमां केटला प्राण छे ? १० पांच प्रकारना स्थावरोने केटली योनिओ छे ? ११ छेल्ला वनस्पतिकाय जीवने केटली योनिओ छे ?

पाठ ३४ मो.

त्रसकाय बेरिंद्री जीव.

जेमने शरीर अने जीभ बे इंद्रियो होय, ते बेरिंद्री जीव कहेवाय छे. शरीरथी स्पर्शेंद्रिय अने जीभथी रसनेंद्रिय आवे छे. मोटा अने नाना शंखो, कोडीओ, गंडोला, जळो, अरिया, अणसींया, लाळीया, मेहरी जातना लाकडाना कीडा, क्षतना कीडा, पूरा, चूडेल अने वाळा विगेरे बेरिंद्री जीव कहेवाय छे. गंडोळा ए जीव गगुताना नामथी ओळखाय छे, अने ते पेटमां उत्पन्न थाय छे. अरिया जातिना जीव अक्ष एवा नामथी ओळखाय छे, अने तेने साधुओ स्थापनाचार्यमां राखे छे. लाळीया ए जीव वासी रहेला पकावेला अन्नमां पडे छे. हरस, के गुंमडां विगेरेमां जे जीव पडे छे, ते कृमि एवा नामना क्षतना कीडा कहेवाय छे. आ बधा जीवो जळमां अने स्थळमां बंनेमां उत्पन्न थाय छे.

आ बेरिंद्री जीवोनां पांच द्वार आ प्रमाणे छे. बेरिंद्री जीवना शरीरनी उंचाइ उत्कृष्टथी बार योजन सुधीनी होय छे. तेमनुं आयुष्य उत्कृष्टथी बार वर्ष सुधीनुं होय छे. तेओ संख्याता वर्ष सुधी पोतानी कायामां उत्पन्न थाय छे, अने पाछा चवे छे. तेमने स्पर्शेनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य, कायबळ अने वचनबळ ए छ प्राण होय छ. अने बे लाख योनिओ होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ बेरिंद्री जीवने कइ कइ बे इंद्रियो छे ? २ ते बेरिंद्री जीव कया ? तेमनां नाम आपो. ३ गंडोला, ए जीव केवा नामथी ओळखाय छे ? अने ते क्यां उत्पन्न थाय छे ? ४ अरिया जातिना जीव कया नामथी ओळखाय छे ? अने ते क्यां होय छे ? ५ ळाळीया अने क्षतना कीडा ए विषे जे जाणता हो ते कहो. ६ बेरिंद्री जीव क्यां उत्पन्न थाय छे ? ७ तेमना शरीरनी उंचाइ, आयुष्य, स्वकाय स्थिति प्राण अने योनि ए पांच द्वार केवी रीते छे ? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्पर्शेंद्रिय, रसनेंद्रिय, स्थापनाचार्य, अन्न, योजन, चवे छे.

पाठ ३५ मो.

त्रसकाय तेंद्रि जीव.

जेमने शरीर, जीभ अने नाक, ए त्रण इंद्रियो होय, ते तेंद्री जीव कहेवाय छे. नाकनी इंद्रियने घ्राणेंद्रिय कहे छे. कानखजुरा, मांकड, जूं, लींख, कीडी, ऊधेइ, मंकोडा, येळ, घीमेल, सावा, गींगोडा, उत्तिंगा (गधैयां), विष्टाना

अने छाणना कीडा, धनेडां, कंथवा, गोपालिक, इलिका, अने इंद्रगोळ अथवा मामणमुंडा, ए विगेरे बधा तेंद्री जीव कहेवाय छे. सावा ए जीव आंखनी पांपणोमां पडे छे. गोपालिक जातना कीडा बहु प्रसिद्ध नथी. इलिका, ए खांड अथवा चोखाना जीव छे.

आ तेंद्री जीवोनां पांच द्वार आ प्रमाणे छे. तेंद्री जीवोना शरीरनी उंचाइ उत्कृष्टथी त्रण गाउ सुधीनी होय छे. तेमनुं आयुष्य उत्कृष्टथी ओगणपचास दिवसोनुं छे. तेओ संख्याता वर्ष सुधी पोतानी कायाने विषे उत्पन्न थाय छे, अने चवे छे. तेमने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य, कायबळ अने वचनबळ—ए सात प्राण होय छे, अने बे लाख योनिओ होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ तेंद्री जीवोने कइ कइ त्रण इंद्रियो होय छे ? २ नाकनी इंद्रियने शुं कहे छे ? ३ तेंद्री जीवो क्या ? ते गणावो. ४ सावा, गोपालिक अने इलिका—ए जीव विषे शुं जाणो छो ? ते कहो. ५ तेंद्री जीवोनां पांच द्वार कहो.

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

उधेइ, उत्तिंगा, विष्टा, संख्याता वर्ष.

पाठ ३६ मो.

त्रसकायचतुरिंद्रिय जीव.

जेमने शरीर, जीभ, नाक अने आंख—ए चार इं-
द्रियो होय ते चतुरिंद्रिय जीव कहेवाय छे. आंखनी इं-
द्रियने चक्षुरिंद्रिय कहे छे. वींछी, बगाइ, भमरा, भमरी,
तीड, माखी, डांस, मशला, कंसारी, खडमाकडी अने
पतंग विगेरे चतुरिंद्रिय जीव कहेवाय छे. बेरिंद्री, तेंद्री,
अने चतुरिंद्रिय—ए त्रणे विकलेंद्रियना नामथी पण ओळ-
खाय छे.

आ चतुरिंद्रिय जीवना शरीरनुं प्रमाण उत्कृष्टथी
एक योजन सुधीनुं होय छे, तेमना आयुष्यनुं प्रमाण छ
मास सुधीनुं छे. तेओ संख्याता वर्ष सुधी पोतानी का-
याने विषे उत्पन्न थाय छे, अने पाछा चवे छे. तेमने स्प-
र्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, श्वासोच्छ्वास,
आयुष्य, कायबळ, अने वचनबळ—ए आठ प्राण होय छे,
तेमने बे लाख योनिओ छे.

सारांश प्रश्नो.

१ चतुरिंद्रिय जीवनी चार इंद्रियो कइ कइ छे ? २
चतुरिंद्रिय जीव कया ? ते गणावो. ३ विकलेंद्रिय जीव
कया कया कहेवाय ? ते कहो. ४ चतुरिंद्रिय जीवनां

पांच द्वार कयां ? ते जणावो. ५ आंखनी इंद्रियने शुं कहे छे ? ते नाम आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वगाइ, कंसारी, खडमाकडी, विकलेंद्रिय.

पाठ ३७ मो.

सवैया एकत्रीशा.

शंख कोडिओ गंडोळा ने जळो अक्ष अणसीया जात,
वळी लाळीया लाकड कीडा क्षत कीडा पूरा साक्षात;
चुडेल ने वाळा ए सघळा बेरिंद्री जंतु कहेवाय,
योजन बार सुधी ते उंचा बार वर्ष आयुष्य गणाय.
निज कायामां ते संख्याता वर्ष सुधी उपजेछे आप,
पाछा लय पामे छे तेमां मरता ते कायानी छाप;
स्पर्श अने रसनेंद्रिय श्वासोच्छ्वास अने आयुष कहेवाय,
काय अने वळी वचनतणुं बळ ए छ प्राण तणी छे स्हाय.
धारण करतां लाख योनि बे ए पांचे ते द्वार गणाय,
ते बेरींद्री जीव तणुं जे ज्ञान सकळ शास्त्रे संभळाय;
कानखजूरा माकड ने जूं लींख कीडियो उधेइ जे,
मंकोडा एळो घीमेलो सावा गींगोडा छे ते.

चीडीयां, वडवागुल्ल विगेरे चर्मज पक्षीओ कहेवाय छे. बीजां समुद्ग पक्षी अने वितत पक्षीओ छे, ते मनुष्य लोकनी बाहेर रहेनारां छे, तेओमां समुद्ग पक्षीओनी पांखो हमेशां संकोचायेली होय छे, अने वितत पक्षीनी पांखो हमेशां विस्तारवाळी होय छे.

ते जळचर, स्थळचर अने खेचर जीवोना संमूर्छिम अने गर्भज एवा बे भेद पडे छे. जे जीव माता पितानी अपेक्षा विना उत्पन्न थाय, ते संमूर्छिम कहेवाय छे, अने जे माता पितानी अपेक्षाथी गर्भमां उत्पन्न थाय, ते गर्भज कहेवाय छे.

ते तिर्यंच पंचेंद्रिय जीवोनां पांच द्वार आ प्रमाणे छे—गर्भज अने संमूर्छिम ए प्रकारना तिर्यंच जीवोनां शरीरनुं प्रमाण जुदुं जुदुं छे. गर्भज एवा मत्स्य अने उरःपरि सर्पनां शरीरनुं प्रमाण एक हजार योजननुं छे, एवां मोटां माछलांओ आ अढीद्वीपनी बाहेर आवेला स्वयंभूरमण समुद्रमां रहे छे. गर्भज एवा भुजपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण बे गाउथी मांडीने नव गाउ सुधीनुं छे. गर्भज एवा पक्षीओना शरीरनुं प्रमाण बे धनुष्यथी लइने नव धनुष्य सुधीनुं छे. संमूर्छिम एवा खेचर अने भुजपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण बे धनुषथी मांडीने नव धनुष सुधीनुं छे. संमूर्छिम एवा उरःपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण बे योजनथी मांडीने नव योजन सुधीनुं छे. संमूर्छिम एवां चोपगां माणीना शरीरनुं प्रमाण बे गाउथी मांडीने नव गाउ सुधी-

नुं छे. गर्भज एवां चोपगां प्राणीना शरीरनुं प्रमाण उत्कृ-ष्टथी छ गाउनुं छे. ते पंचेंद्रिय तिर्यंच जीवनुं आयुष्य उ-त्कृष्टथी त्रण पल्योपमनुं अने जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनुं होय छे. तेओमां गर्भज अने संमूर्छिम एवा उरःपरि सर्प तथा भुजपरि सर्पनुं आयुष्य उत्कृष्टथी पूर्व कोटीनुं छे. अने ग-र्भज एवां पक्षीओनुं आयुष्य पल्योपमना असंख्याता भाग जेटलुं छे. सित्तेरलाख अने छप्पन हजार कोटी वर्षनो एक पूर्व थाय छे. तेमनी स्वकाय स्थिति एवी छे के, तेओ तेज भवमां केडेकेडे अनंतर सात अथवा आठ भव करे छे. एटले तेमने उत्कृष्ट संख्याता वर्ष सुधीमां सात भव थइ शके छे, अने उत्कृष्ट असंख्याता वर्ष सु-धीमां आठ भव थइ शके छे. अने जघन्यथी तेमनी स्व-काय स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी छे. तेओमां जे गर्भज तिर्यंच छे, तेओ संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच कहेवाय छे, तेथी तेमने दश प्राण होय छे, अने जे संमूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच छे, तेओ असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच कहेवाय छे, तेथी तेमने मनोबळ होतुं नथी, एटले तेओने नव प्राण होय छे. अने तेमनी चार लाख योनिओ छे.

सारांश प्रश्नो.

१ तिर्यंच पंचेंद्रिय जीवना मुख्य केटला भेद छे ? २ जळचर, स्थळचर अने खेचर एटले शुं ? ३ जळचरना

कया भेद ? ते गणावो. ४ स्थळचर जीवोमां कयां कयां प्राणी गणाय छे ? ५ उरःपरि सर्प अने भुजपरि सर्प कोने कहे छे ? ६ खेचर जीवना मुख्य केटला प्रकार छे ? ७ रोमजपक्षी अने चर्मज पक्षी एटले शुं ? ८ रोमजपक्षी कयां ? अने चर्मज पक्षी कयां ? तेमनां नाम आपो. ९ संमूर्छिम अने गर्भज एटले शुं ? अने ते कोना भेद थाय छे ? १० तिर्यंच पंचेंद्रिय जीवोना शरीरनुं प्रमाण केवी रीते छे ? ११ गर्भज माछलां अने उरःपरि सर्पना शरीरनुं उत्कृष्टथी प्रमाण केटलुं छे ? अने तेवां प्राणी क्यां रहे छे ? १२ गर्भज भुजपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण केटलुं छे ? १३ गर्भज पक्षीओना शरीरनुं प्रमाण केटलुं छे ? १४ संमूर्छिम खेचर अने भुजपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण केटलुं छे ? १५ संमूर्छिम उरःपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण केटलुं छे ? १६ संमूर्छिम अने गर्भज एवां चोपगां प्राणीना शरीरनुं प्रमाण केटलुं छे ? १७ तिर्यंच पंचेंद्रियनुं उत्कृष्टथी अने जघन्यथी केटलुं आयुष्य छे ? १८ गर्भज तथा संमूर्छिम एवा उरःपरि सर्प अने भुजपरि सर्पनुं उत्कृष्टथी केटलुं आयुष्य छे ? १९ गर्भज पक्षीओनुं केटलुं आयुष्य छे ? २० पूर्व कोटीमां एक पूर्व केटला वर्षनो गणाय छे ? २१ तिर्यंच पंचेंद्रियनी काय स्थिति केवी रीते छे ? २२ संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच अने असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच कोने कहेवां ? संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंचने केटला प्राण होय अने असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंचने केटला प्राण

होय ? ते समजावो. २३ तिर्यंच पंचेंद्रियने केटली यो-
निओ छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

जळजंतु, उरःपरि सर्प, भुजपरि सर्प, वडवागुळ, अ-
पेक्षा, स्वयंभू रमण समुद्र, पल्योपम, पूर्व कोटी, असं-
ख्याता भाग, संज्ञी, असंज्ञी.

पाठ ३९ मो.

तिर्यंच पंचेंद्रिय जीव विषे कविता.

मनहर छंद.

पंचेंद्रिय तिर्यंचना त्रण भेद मुख्य थाय,
जळचर, स्थळचर, खेचर गणाय ते;
सुसुमार माछलां ने काचवा शुड मघर,
जळचर जीवमांहि मुख्य ते भणाय ते;
स्थळचर जीवमांहि चार पगवाळां प्राणी,
उरपरि सर्प बीजा भुजपरि सर्प छे;
खेचरमां रोमज ने चरमज पक्षी गण्यां,
जुदी जुदी जात तेनी गणावानी तर्त छे. १

रोमवाळी पांखोवाळा पोपट शुडा ने हंस,
सारस पारेवां काग चकलांनी जात छे;
चाम चीडियां ने वडवांदरी विगेरे बीजां,
चरमनी पांखोवाळां पक्षीओनी भात छे;
संकोच ने विस्तारनी पांखोवाळां बीजां पक्षी,
मनुष्यना लोक थकी बाहेर विचरे छे;
संमूर्छिम गरभज बीजा बे प्रकार तेना,
तेनां पांच द्वार वळी जुदां जुदां फरे छे. २.

पाठ ४० मो.

नारकी पंचेंद्रिय.

जेमने स्पर्शेनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय अने श्रोत्रेंद्रिय—ए पांच इंद्रियो होय, ते पंचेंद्रिय कहेवाय छे. ते पंचेंद्रिय जीवना नारकी, मनुष्य, तिर्यंच अने देवता एवा चार भेद छे. तेमां नारकी पंचेंद्रियने विषे जे जाणवानुं छे, ते आ स्थळे कहेवामां आवे छे. नारकीना जीवना सात प्रकार छे, ते प्रकार नारकीनी सात पृथ्वीओ उपरथी पडेला छे. ते सात पृथ्वीओना रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा अने तमस्तमःप्रभा एवां गोत्रनां नाम छे. अने वळी घमा, वंशा, शैला, अंजणा, रिष्टा, मघा अने माघवती एवां तेनां नाम

छे. ते सातेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम गणतां नारकीना एकंदर चौद भेद थाय छे.

तेमनां पांच द्वार आ प्रमाणे छे. छेवटनी नारकीनी भूमिना जे नारकी छे, तेमना शरीरना प्रमाणथी अडधीं अडधी संख्या ओछी करवाथी साते नारकीना शरीरनुं प्रमाण थाय छे. सातमी पृथ्वीना नारकीओना शरीरनी उंचाइ पांचसो धनुष्यनी छे. छट्ठी भूमिना नारकीओना शरीरनी उंचाइ अढीसो धनुष्यनी छे. पांचमीमां सवासो धनुष्यनी, चोथीमां साडी वासठ धनुष्यनी, त्रीजीमां सवा एकत्रीश धनुष्यनी, वीजीमां साडा पंदर धनुष्य अने वार आंगुलनी अने पहेलीमां पोणा आठ धनुष्य अने छ आंगुलनी उंचाइ छे. ते नारकीना जीवनी आयुष्यनी स्थिति उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपमनी* छे, अने जघन्यथी दश हजार वर्षनी छे. नारकीनी स्वकाय स्थिति एवी छे के, तेओ मरण पामी फरी वार तेज गतिमां उत्पन्न थता नथी. एटले नारकी मरीने फरी वार अनंतर नारकीमां उत्पन्न थता नथी, तेम देवतामां पण उत्पन्न थता नथी. नारकी जीवने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, श्रोत्रेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य, मनोवळ, वचनवळ अने कायवळ—ए दश प्राण होय छे, अने चार लाख योनिओ होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पंचेंद्रिय जीवनी पांच इंद्रियो कइ ? ते गणावो. २ पंचेंद्रियना केटला भेद छे ? ३ नारकी पंचेंद्रियना केटला प्रकार छे ? ४ नारकीनी सात पृथ्वीओनां गोत्र तथा नाम आपो. ५ तेमनां पांच द्वारमां शरीरनुं प्रमाण कहो. ६ दरेक पृथ्वीना नारकीओना शरीरना प्रमाणमां केवी रीते गणना थाय छे ? ७ नारकीनी आयुष्यनी स्थिति उत्कृष्टथी अने जघन्यथी केटली छे ? ८ तेमनी स्वकाय स्थिति केंवी रीते छे ? ९ नारकीना जीव देवतामां उत्पन्न थाय के नहिं ? १० तेमने केटला प्राण अने केटली योनि छे ? ११ बधा मळीने नारकीना भेद केटला छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

तिर्यंच, प्रकार, पर्याप्ता, अपर्याप्ता, संख्या, धनुष्य, आंगुल, सागरोपम, गति, उत्पन्न.

पाठ ४१ मो.

पंचेंद्रिय मनुष्य जीव.

पंचेंद्रिय मनुष्यना मुख्य त्रण भेद छे. कर्मभूमि क्षेत्रना मनुष्य, अकर्म भूमि क्षेत्रना मनुष्य अने अंतरद्वीप क्षेत्रना मनुष्य. जेमां खेती व्यापार विगेरे कर्म मुख्य रीते थाय छे, ते भूमिने कर्मभूमि क्षेत्र कहे छे. तेमां उत्पन्न थयेला मनुष्यो कर्मभूमि क्षेत्रना मनुष्यो कहेवाय छे. ते कर्मभूमिना पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महा विदेह—एम मळीने पंदर क्षेत्रो छे. जे भूमिमां खेती व्यापार कांइ पण कर्म थतुं नथी, ते अकर्म भूमि क्षेत्र कहेवाय छे. तेमां उत्पन्न थयेला मनुष्यो अकर्म भूमि क्षेत्रना मनुष्यो कहेवाय छे. ए अकर्म भूमिनां पांच हैमवंत, पांच ऐरवत, पांच रम्यक, पांच देव कुरु, पांच हरिवर्ष अने पांच उत्तर कुरु—एम मळीने त्रीश क्षेत्रो छे. आ जंबूद्वीपनी अंदर हिमवंत अने शिखरी एवा बे पर्वतो छे, ए पर्वतोमांथी पूर्व अने पश्चिमे लवण समुद्रमां आठ गजदंता नीकळेला छे, ते तेनी दाढा तरीके ओळखाय छे. ते दरेक गजदंता उपर सात सात क्षेत्रो आवेलां छे. एटले बधां मळीने अंतरद्वीपनां छप्पन क्षेत्रो थाय छे, ए छप्पन अंतरद्वीपनां क्षेत्रोमां उत्पन्न थयेला मनुष्यो अंतरद्वीप क्षेत्रना मनुष्यो कहेवाय छे, तेओ जुगलियाना नामथी ओळखाय छे.

तेओनां पांच द्वार आ प्रमाणे छे. उत्कृष्टथी तेमना शरीरनुं प्रमाण त्रण गाउ सुधीनुं होय छे, तेटला प्रमाणना युगलिया मनुष्यो देवकुरु विगेरे क्षेत्रोमां रहेला छे. तेमनुं आयुष्य उत्कृष्टथी त्रण पल्योपमनुं होय छे, अने एटलां आयुष्यवाळा मनुष्यो देवकुरु विगेरे क्षेत्रोमां उत्पन्न थाय छे. मनुष्य पंचेंद्रियना जीव स्वकाय स्थितिमां पोतानी तेज कायामां सात अथवा आठ भव करे छे. तेमने उत्कृष्टा संख्याता वर्ष सुधीमां सात भव थइ शके छे, अने उत्कृष्टा असंख्याता वर्ष सुधीमां आठ भव थइ शके छे. जघन्यथी तेमनी स्वकाय स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी होय छे. तेओमां जे संज्ञी पंचेंद्रिय मनुष्यो छे, तेमने दश प्राण होय छे, अने जे असंज्ञी पंचेंद्रिय मनुष्योने सात अगर आठ प्राण होय छे, अने व्यवहारथी नव प्राण कहेवाय छे. तथा तेमने चौद लाख योनिओ होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पंचेंद्रिय मनुष्यना केटला भेद छे? २ कर्मभूमिक्षेत्र अने अकर्मभूमिक्षेत्र कोने कहेवाय? ३ कर्मभूमिक्षेत्र केटलां छे ते गणावो. ४ अकर्मभूमिक्षेत्र केटलां छे? ते गणावो अने ते क्यां रह्यां छे? ५ जुगलिया मनुष्यो क्यां रहे छे? ६ पंचेंद्रिय मनुष्योना शरीरनुं प्रमाण उत्कृष्टथी केटलुं छे? ७ तेमनुं उत्कृष्टथी आयुष्य केटलुं छे? ८ तेओनी स्वकाय स्थिति

केवी रीते छे ? ९ संज्ञीपंचेंद्रिय अने असंज्ञीपंचेंद्रिय मनुष्योने केटला प्राण होय छे ? १० तेमने केटली योनिओ छे ?

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

कर्मभूमिक्षेत्र, अकर्मभूमिक्षेत्र, अंतरद्वीपक्षेत्र, लवणसमुद्र, गजदंता, जुगलिया, पल्योपम, संख्यातावर्ष, असंख्याता वर्ष.

पाठ ४२ मो.

पंचेंद्रिय देवता.

पंचेंद्रिय देवताना भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क, अने वैमानिक–एवा मुख्य चार भेद छे. तेओमां पहेला भवनपति देवताओना दश भेद पडे छे. १ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुपर्णकुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीपकुमार, ७ उदधिकुमार, ८ दिशिकुमार, ९ वायुकुमार अने १० स्तनितकुमार–एवां तेमनां नाम छे.

बीजा व्यंतर देवताओना मुख्य बे भेद छे. व्यंतर अने वाण व्यंतर, तेमां व्यंतरना आठ भेद छे. १ पिशाच, २ भूत, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ म-

होरग अने ८ गंधर्व एवां नाम छे. बीजा वाण व्यंतरना पण आठ भेद थाय छे. १ अणपन्नी, २ पणपन्नी, ३ रुषिवादी, ४ भूतवादी, ५ कंदित, ६ महाकांदित, ७ कोहंड अने ८ पतंग—एवां तेमनां नाम छे.

त्रीजा ज्योतिषी देवताना मुख्य पांच भेद छे. चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने तारा एवां तेमनां नाम छे. आ पांचेना वळी चर अने स्थिर एवा बे प्रकार थाय छे. जे मनुष्य क्षेत्रमां रहेनारा ज्योतिषी छे, ते चर कहेवाय छे. कारण के, ते हमेशां फरता रहे छे. अने जे मनुष्य क्षेत्रनी बाहार रहेनारा छे, तेओ स्थिर कहेवाय छे. कारण के, तेमनां विमानो फरतां नथी.

चोथा वैमानिक देवताना मुख्य बे प्रकार छे, कल्पोपपन्न अने कल्पातीत तीर्थंकरादिकना पांच कल्याणकमां आव जाव करनारा देवताओ कल्पोपपन्न कहेवाय छे. अने जे ते प्रसंगे आवजाव करता नथी, ते कल्पातीत कहेवाय छे. वळी जे कल्पोपपन्न देवता छे, तेओ बार देवलोकमां रहेनारा छे, माटे तेमना बार भेद पण थइ शके छे. ते बार देवलोकनां नाम आ प्रमाणे छे—१ सुधर्म देवलोक, २ इशान देवलोक, ३ सनत्कुमार देवलोक, ४ माहेंद्र देवलोक, ५ ब्रह्म देवलोक, ६ लांतक देवलोक, ७ महाशुक्र देवलोक, ८ सहस्रार देवलोक, ९ आनत देवलोक, १० प्राणत देवलोक, ११ आरण देवलोक, अने १२ अच्युत देवलोक.

बीजा कल्पातीतना बे भेद छे. ग्रैवेयक अने अनुत्तर विमानवासी. तेमां ग्रैवेयक नव कहेवाय छे, तेमनां १ सुदर्शन, २ सुप्रतिबंध, ३ मनोरम, ४ सर्व भद्र, ५ विशाळ, ६ सुमनस, ७ सुमणुस, ८ प्रियंकर अने ९ आदित्य–एवां नाम छे. अनुत्तर विमान पांच छे. तेमनां १ विजय, २ विजयंत, ३ जयंत, ४ अपराजित अने ५ सर्वार्थसिद्ध एवां नाम छे.

तेमनां पांच द्वार आ प्रमाणे छे–बीजा इशान देवलोकना छेडा सुधी जे भवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी देव छे, तेमना शरीरनुं जे प्रमाण होय, तेनाथी अनुक्रमे एक एक हाथ घटाडता जवाथी अन्य देवलोकना शरीरनुं प्रमाण थाय छे. एटले बीजा इशान देवलोकना छेडा सुधी रहेला भवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी देवताना शरीरनुं प्रमाण सात हाथनुं छे, सनत्कुमार अने माहेंद्रमां रहेलानुं प्रमाण छ हाथनुं छे, ब्रह्म अने लांतक देवलोकमां रहेलानुं प्रमाण पांच हाथनुं छे, शुक्र अने सहस्रार देवलोकमां रहेलानुं प्रमाण चार हाथनुं छे, आनत, प्राणत, आरण, तथा अच्युत देवलोकमां रहेलानुं प्रमाण त्रण हाथनुं छे, नव ग्रैवेयकमां रहेला देवतानुं प्रमाण बे हाथनुं छे, अने पांच अनुत्तरवासी देवतानुं प्रमाण एक हाथ होय छे. आ बधुं प्रमाण उत्सेधांगुलनी रीते जाणवुं.

देवताओना आयुष्यनुं प्रमाण उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपमनुं होय छे. देवताओनी स्वकाय स्थिति एवी छे के,

देवताओ मरण पामीने (चवीने) अनंतर फरी वार तेज गतिमां उत्पन्न थता नथी. संज्ञी पंचेंद्रिय देवताने दश प्राण होय छे, देवताओनी योनिओ चार लाख छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पंचेंद्रिय देवताना मुख्य केटला भेद छे ? अने ते गणावो. २ व्यंतर देवताना केटला भेद छे ? ३ व्यंतरना भेदनां नाम आपो. ४ वाण व्यंतर देवतानां नाम आपो. ५ ज्योतिषी देवताना मुख्य केटला भेद छे ? ६ चर अने स्थिर एवा ज्योतिषी देवताओने माटे शुं जाणोछो ? ७ वैमानिक देवताना मुख्य केटला भेद छे ? ८ कल्पोपपन्न अने कल्पातीत विषे समजावो. ९ बार देवलोकनां नाम आपो. १० कल्पातीतना केटला भेद छे ? ११ ग्रैवेयक केटला ? अने तेनां नाम आपो. १२ अनुत्तर विमानवासी देवताओ केटला छे ? अने तेमनां नाम आपो. १३ पंचेंद्रिय देवताना शरीरनुं प्रमाण, केवी रीते छे ? ते समजावो. १४ तेमना शरीरनुं प्रमाण केवा अंगुलथी लेवानुं छे ? १५ देवताओना आयुष्यनुं प्रमाण अने तेमनी स्वकाय स्थिति केवी रीते छे ? ते समजावो. १६ तेमने प्राण केटला ? अने योनिओ केटली ? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

चर, स्थिर, कल्पोपपन्न, कल्पातीत, अन्य, उत्सेधांगुल.

पाठ ४३ मो.

सिद्धना जीवो.

सिद्धना जीवो ते सिद्ध परमात्माना जीव कहेवाय छे. तेओ आ संसारमांथी मुक्त थयेला छे, तेओना तीर्थंकर तथा अतीर्थंकर विगेरे पंदर भेद थाय छे. पांच द्वारमां तेमने कर्म न होवाथी आयुष्यनुं प्रमाण होतुं नथी. ज्यारे आयुष्य नथी, त्यारे तेमने प्राण अने योनि पण होती नथी. अने तेथी करीने तेओने स्वकाय स्थिति तो क्यांथीज होय ?

तेओ सर्व कर्मरुप उपाधिथी मुक्त थइ लोकना अग्र भाग उपर रहेला छे. तेमनी स्थिति सादि एटले आदि ए सहित छे, अने अनंत एटले अंतथी रहित छे. कारण के, जे दिवसे तेमनुं अहिंथी सिद्धमां गमन थाय छे, माटे ते आदिवाळा छे, अने फरीने त्यांथी तेमने चववानो अभाव छे, माटे अंतरहित छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सिद्धना जीव केवा कहेवाय ? २ तेमना केटला भेद छे ? ३ तेमने पांच द्वार नथी, तेनां कारण समजावो. ४ तेओ क्यां रहेला छे ? ५ सादि अने अनंत एटले शुं ?

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

सिद्ध परमात्मा, मुक्त, तीर्थंकर, अतीर्थंकर, कर्मरुप उपाधि, अग्रभाग, सादि, अनंत.

पाठ ४४ मो.

जीवोना भेदनी संख्या.

प्रथम पांच स्थावर सूक्ष्म अने पांच बादर मळीने दश भेद थाय छे. तेमां प्रत्येक वनस्पतिकाय के जे एकला बादरज होय छे, तेथी ते एक भेद तेमां मेळवतां कुल अगीयार भेद थाय छे. ते अगीयार भेदने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम प्रकारे गणतां ते बेवा मळीने बावीश भेद थाय छे.

बीजा त्रस जीवना बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री, अने पंचें-

द्री–ए चार भेद मूळ छे, तेमां बेंद्री, तेंद्री, अने चौरेंद्री ए त्रण विकलेंद्रियने पर्याप्ता अने अपर्याप्तानी साथे गणतां छ भेद थाय, ते उपरना बावीश भेदनी साथे मेळवतां बधा मळीने अठ्यावीश भेद थाय छे.

पंचेंद्रिय तिर्यंचना जळचर, स्थळचर, खेचर, उरःपरि सर्प अने भुजपरि सर्प–ए मूळ पांच भेद छे, तेना संमूर्छिम अने गर्भजना मळी दश भेद थाय छे, ते दशने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता–एम गणतां तेना वीश भेद थाय, तेमने उपरना अठयावीश भेदनी साथे मेळवतां एकंदर पंचेंद्रिय तिर्यंचना अडतालीश भेद थाय छे.

मनुष्य पंचेंद्रियना कर्मभूमि अने अकर्मभूमिना भेद गणतां पीस्तालीश भेद थाय छे, अने तेमने अंतरद्वीपना छप्पन भेदनी साथे मेळवतां कुल एकसो ने एक भेद थाय छे, ते बधाने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता–एम गणतां कुल मळीने बसो ने बे भेद थाय छे, तेमां जे संमूर्छिम मनुष्य छे, ते एकला अपर्याप्ताज होय छे, तेथी तेमना एकसो ने एक भेद अने उपरना बसो ने बे भेदनी साथे मेळवता कुल मळीने मनुष्य पंचेंद्रिय त्रणसो ने त्रण भेद थाय छे.

देवताओमां भवनपतिना दश भेद, चर अने स्थिर ज्योतिषीना दश भेद, पांच भरत अने पांच ऐरवतना वैताढय पर्वत उपर रहेनारा जृंभक देवताना दश भेद, परमाधार्मीना पंदर भेद, व्यंतरना आठ भेद, वाण व्यंत-

रना आठ भेद, किल्विषियाना त्रण भेद, लोकांतिकना नव भेद, देवलोकना बार भेद, नव ग्रैवेयकना नव भेद अने पांच अनुत्तर विमानना पांच भेद, ए सर्व मळी नवाणुं भेद थाय छे, तेमने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता—एम बे प्रकारे लेतां कुल मळीने एकसो ने अठाणुं भेद थाय छे.

उपर कहेला तिर्यंचना अडतालीश, नारकीना चौद, मनुष्यना त्रणसो ने त्रण अने देवताना एकसो ने अठाणुं भेद मळी एकंदर जीवोना पांचसो ने त्रेसठ भेद थाय छे. आ प्रमाणे संसारी जीवना भेद छे, अने बीजा जे सिद्धना जीव छे, तेमना पंदर भेद छे, ते तेनाथी जुदा छे.

सारांश प्रश्नो.

१ स्थावरजीवना एकंदर केटला भेद छे ? ते गणावो. २ विकलेंद्रियना वधा मळीने केटला भेद थाय ? ३ स्थावर अने विकलेंद्रियना वधा मळीने केटला भेद थाय ? ४ पंचेंद्रिय तिर्यंचना वधा मळीने केटला भेद थाय ? ते गणावो. ५ पंचेंद्रिय मनुष्यना वधा मळीने केटला भेद थाय ? ६ पंचेंद्रिय देवताना वधा मळीने केटला भेद थाय ? ७ तिर्यंच, नारकी, मनुष्य अने देवता—ए वधा जीवना कुल केटला भेद थाय ? ते आंकडो कहो. ८ सिद्धना केटला भेद थाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

जृंभकदेवता, परमाधार्मी, किल्बिषिया.

पाठ ४५ मो.

जीवना भेदनी संख्या विषे कविता.

चोपाइ.

स्थावर सूक्ष्म ने बादर जात,
तेमां बावीश भेदनी भात. १
त्रसना अठयावीश छे भेद,
तिर्यंचना मुख्य छे वीश भेद. २
अडताळीश ते गणतां थाय,
त्रणसो ने त्रण मनुष्य गणाय. ३
शत एक ते अठ्ठाणुं देव,
एवा भेद तणी त्यां टेव. ४
पांचसो ने त्रेसठ कुळ थाय,
संसारीना ते भेद गणाय. ५
पंदर बीजी सिद्धनी जात,
आगममां ते छे विख्यात. ६

पाठ ४६ मो.

जीव विचार विषे कविता.

चोपाइ.

संसारिना बे भेद गणाय,
स्थावर ने त्रस ते कहेवाय.

स्थिर रहे स्थावरनी जात,
हाले चाले ते त्रसनी भात.

स्थावर पांच एकेंद्रिय जाण,
त्रसतणा भेद चार प्रमाण.

[1]एक अने बे त्रण ने चार,
पांच क्रमे इंद्रियना धार.

बे इंद्रिय धरे जीभकाय,
नाकथकी तेरिंद्रिय थाय.

आंखथकी चौरिंद्रिय जेह,
कानथी पंचेंद्रिय छे तेह.

नारक तिर्यंच [2]मानव [3]देव,
पंचेंद्रियना चारे भेद.

नाराकिनी छे संख्या सात,
तेमां वसे नारकीनी जात.

---

१ एकेंद्रिय, बेरिंद्रि, तेरिंद्रिय, चौरिंद्रिय, पंचेंद्रिय. २ मनुष्य. ३ देवता.

तिर्यंचना छे त्रण प्रकार,
जळचर, स्थळचर खेचर सार.
जळमां रहे ते जळचर जात,
स्थळचर रहे स्थळमां साक्षात.
खेचर फरता जे आकाश,
तेमां [1]पूरो प्राण प्रकाश.
[2]कर्म अकर्म ने अंतर द्वीप,
मानवना त्रण भेद [3]प्रदीप.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्थिर, धार, वध्ये, मानव, तिर्यंच, सार, साक्षात, प्रदीप.

---

१ पाच इद्रियोथी प्राणनो प्रकाश पूरो छे. २ कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अने अतरद्वीपक्षेत्र. ३ प्रकाशित छे.

भाग ३ जो.

पाठ ४७ मो.

ऋषभ देव. भाग १ लो.

चोवीश तीर्थंकरोमां पहेला तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान् कहेवाय छे. तेओ त्रीजा आरानी छेवटे आ भरत क्षेत्रमां थया हता, तेमने बार भव करवा पडया हता. धना सार्थवाह, युगलिया, सौ धर्म देवता, महाबळ विद्याधर, ललितांग देव, वज्रजंघ, युगलिया, सौ धर्म देवता, जीवानंद, बारमा देवलोकमां देवता, वज्रनाभ चक्रवर्त्ती अने सर्वार्थ सिद्धि विमानमां देवता—ए बार भव तेमना कहेवाय छे. जंबूद्वीपना दक्षिण भरत क्षेत्रमां आ वेली युगलीक भूमिमां ऋषभदेवनो जन्म थयो हतो. तेमना पितानुं नाम नाभि अने मातानुं नाम मरुदेवा हतुं. नाभि ते वखते जुगलीया जातिना मनुष्योना राजा हता. तेओ कुलकर एवा नामथी ओळखाता हता. जुगलियानी जात प्राचीन काळमां प्रख्यात हती, ते जातिमां स्त्री अने पुरुषने एकज वार जोडलानो जन्म थतो, अने तेनो जन्म थया पछी तरतज ते स्त्री पुरुषनो नाश थइ जतो हतो, ते जोडुं पाछुं स्त्री अने पुरुषरुपे थतुं हतुं. नाभि अने मरुदेवा पण तेवी रीते उत्पन्न थयां हतां. ते

जुगलियानो जमानो हाल चालता संसारथी तद्दन अजा-
ण्यो हतो, तेमनो निर्वाह ते वखतना कल्पवृक्षने आधारे
चालतो हतो. ज्यारे ऋषभ स्वामी मरुदेवा माताना गर्भ-
मां आव्या, त्यारे तेमनी माताए वळद, हाथी, केशरीसिंह,
लक्ष्मी, पुष्पमाळा, चंद्र, सूर्य, ध्वजा, कळश, पद्म सरोवर,
क्षीर समुद्र, विमान, रत्ननो ढगलो अने धूमाडा विनानो
अग्नि, एवां चौद स्वप्नां जोयां हतां. तेमनो जन्म चैत्र
मासनी वद आठमे थयो हतो. तेमना सूतिका गृहमां प्र-
सवनी बधी जातनी क्रियाओ करवाने छप्पनदिक्कुमारी-
ओ आवी हती. तेमना जन्मनो उत्सव करवाने सौधर्म
नामे इंद्र आव्यो हतो. तेणे पोताना पांच रुप विकुर्वी
प्रभुना बाल स्वरुपनी जुदी जुदी योग्य सेवा करी हती,
अने बाल क्रीडामां पण ते प्रभुनी तावेदारीमां रह्यो हतो.
ज्यारे ऋषभ भगवान् जुवान थया, त्यारे तेमनो विवाह
सुनंदा अने सुमंगला नामनी बे स्त्रीओनी साथे थयो
हतो. इंद्रनी प्रार्थनाथीज प्रभुए ते विवाह स्वीकार्यो हतो.
सुनंदा अने सुमंगळा एक युगालिया जातिनी स्त्रीओ ह-
ती, तेमांथी एक स्त्रिनो पति अकस्मात् मृत्यु पामवाथी
तेना विवाहनो योग भगवंतनी साथे थयो हतो. अने
बीजी भगवंतनी साथेज जन्म पामेली हती. केटलोक काळ
ते बन्ने स्त्रीओ साथे संसारी सुख भोगवतां प्रभुने सो
पुत्र अने बे पुत्रीओ थइ हती. सो पुत्रोमां भरत सौथी
मोटो हतो. पुत्रीओनां नाम ब्राह्मी अने सुंदरी हतां. भ-

गवंते ब्राह्मीने जमणा हाथथी अढार लिपिओ अने सुंद-
रीने डाबा हाथे गणितविद्या शीखवी हती. तेमना वख-
तमां युगलियानो धर्म मंद थवाथी लोकोए ऋषभ भगवं-
तने पोताना राजा तरीके स्वीकार्या हता. कुबेरे तेमनी रा-
जधानी करवाने विनिता नगरी वसावी, जेनी रचना अ-
द्भुत करवामां आवी हती. आ अरसामां भगवंते उप-
कारने माटे सृष्टिनी जुदी जुदी क्रियाओ लोकोने शीख-
वी हती. शिल्प कळा विगेरेनुं वारीक ज्ञान तेओने द-
र्शाव्युं हतुं, तेथी आ विश्वनी स्थितिरूपी नाटकना ते सूत्र-
धार बन्या हता. तेमणे कार्यने लइने जुदी जुदी जातो
बनावी, वर्ण व्यवस्था करी हती. तेमणे राजनीतिनी सा-
री रचना करी प्रजाने सारी रीते पाळी हती, ते साथे
हाथी, घोडा, रथ, पेदल विगेरे राज्य वैभवनी जाहोज-
लाली पण तेमणेज प्रवर्तावी हती. एक वखते वसंत ऋतु-
नो देखाव जोइ भगवंतने क्षणिक अने दुःख मिश्रित पूर्व-
ना सुखनुं स्मरण थइ आवतां तेमज पोतानो दिक्षाकाळ
समीपे आवेलो अवधी ज्ञानथी जाणी, वैराग्य उत्पन्न थ-
यो हतो, तेमने वैराग्य थतांज लोकांतिक देवताओए आ-
वी दीक्षा लेवानी प्रार्थना करी हती. पछी प्रभुए पोताना
मोटा पुत्र भरतने राज्याभिषेक करी बीजा पुत्रोने जुदा
जुदा देश वेंहेची आपी सांवत्सरिक दान आप्युं हतुं. ए
महा दान अपाया पछी इंद्रे आवी प्रभुनो दीक्षा महोत्सव
कर्यो हतो. चारित्रनी साथेज मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थ-

युं हतुं. ते प्रसंगे इंद्रे स्तुति करी, अने स्तुति कर्या पछी प्रभुए जुदा जुदा देशोमां विहार करवा मांडयो हतो.

सारांश प्रश्नो.

१ ऋषभदेव भगवान् केटलामा तीर्थंकर हता ? २ तेओ क्यारे थया हता ? ३ तेमना बार भव कया कया ते जणावो. ४ तेमनो जन्म कइ भूमीमां थयो हतो ? ५ तेमनां माता पितानां शुं नाम छे ? ६ जुगलिया मनुष्यो-नी जाति केवी होय ? ते विषे जे जाणता हो ते कहो. ७ मरुदेवाए केटलां स्वप्नो जोयां हतां ? तेनां नाम आ-पो. ८ प्रभुनो जन्म कया मासमां अने कइ तिथिए थयो हतो ? ९ प्रभुना सूतिका गृहनी क्रिया कोणे करी हती ? १० प्रभुनो विवाह कोनी साथे थयो हतो ? ते स्त्रीनुं नाम आपो. ११ प्रभुने केटला पुत्र अने केटली पुत्रीओ थइ हती ? १२ सौथी मोटा पुत्रनुं अने पुत्रीओनुं शुं नाम हतुं ? १३ ब्राह्मी अने सुंदरी कइ कइ विद्या जाणती हती ? १४ भगवंतनी राजधानी कोणे रची हती ? १५ पहेली शिल्प कळाओ कोणे शीखवी ? १६ प्रभुने शुं जोइने वैराग्य थयो हतो ? १७ प्रभुने चारित्र लेतां कयुं ज्ञान उपज्युं हतुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सौधर्म देवता, जुगलिया, सर्वार्थ सिद्ध विमान, दक्षिण भरत क्षेत्र, कुलकर, कल्पवृक्ष, कळश, पद्म सरोवर, क्षीर समुद्र, सूतिका गृह, प्रसव, दिक्कुमारी, विकुर्वी, लिपि, मंद, शिल्प, सूत्रधार, वर्ण व्यवस्था, लोकांतिक देवता, सांवत्सरिक, मनःपर्यवज्ञान.

पाठ ४८ मो.

रुषभदेव-भाग २ जो.

भगवान् रुषभदेवनी स्थिति जोइ तेमनी साथे कच्छ तथा महाकच्छ विगेरे केटलाएक राजाओ चाली नीकल्या हता. प्रभुए तो भिक्षा न मळवाथी ते परिषह सह न कर्यो, पण ते राजाओ तेने सहन करी शक्या नहीं आथी तेमणे तापस वृत्ति स्वीकारी, कंद, फळ, मूळ विगेरेनो आहार करवा मांडयो. आ अरसामां कच्छ महाकच्छना नमि विनमि नामे बे पुत्रो प्रभुनी पासे राज्यनी मागणी करवा आव्या. पोताना पिताओनी तापस वृत्ति माटे तेमणे घणी चिंता करी. ते बंने राज्य लोभनी इच्छाथी प्रभुनी घणी सेवा करवा लाग्या, तेवामां धरणेंद्र प्रभुने वांदवा आव्यो. नमि विनमिनी प्रभु तरफ भ

ति भक्ति जोइ धरणेंद्रे प्रसन्न थइ, तेमने अनेक विद्याओ साथे वैताढय पर्वतनुं विशाल राज्य आप्युं. आथी खुशी थइ, तेओ वैताढय पर्वत उपर आव्या. तेमणे त्यां एकसो ने दश नगर नवां वसाव्यां. धरणेंद्रे आवीने विद्याधरोने माटे मर्यादा बांधी आपी, अने विद्याधरोना सोळ निकाय-नी व्यवस्था करी आपी. भगवंत भिक्षा लेवानो निर्णय करी हस्तिनापुरमां आव्या हता. बाहुबलिना पुत्र सोम-प्रभ राजाना श्रेयांसे कुमारे पोताने स्वप्नमां मेरु पर्वतने दूधना घडाथी अभिषेक करतो जोयो हतो. ते शिवाय सुबुद्धि नामना एक शेठे अने सोमयशा राजाए पण बीजां स्वप्नो जोयां हतां. हस्तिनापुरना लोको प्रभुने जोइ अनेक जातनी वस्तुओ अर्पण करवा आवता, पण प्रभु तेनी उपेक्षा करता हता. श्रेयांसकुमार प्रभुनी पासे आव्यो, एटले तेने जाति स्मरण थइ आव्युं. प्रभुए तेने हाथे शेलडीना रसनुं दान लीधुं, ते वखते पंच दिव्य प्रगट थया. १ आकाशमां देवताओ दुंदुभिनो ध्वनि, २ रत्ननी, ३ पुष्पनी, ४ सुगंधी जळनी अने वस्त्रोनी वृष्टि, ५ तथा अहोदानं अहोदानं एवी उद्घोषणा करे, ते पांच दिव्य कहेवाय छे. आ दान वैशाख शुद त्रीजने दिवसे करवामां आव्युं हतुं. अने ते दान श्रेयांसने अक्षयरुप थयुं, तेथी प्रभुए ते त्रीजने अक्षय तृतीया (अखात्रीज) ना नामथी जगतमां स्थापन करी.

भगवंत त्यांथी पोताना पुत्र बाहुबलिनी राजधानी तक्ष-

शिला नगरीमां आव्या हता, बाहुबलि प्रभुने मोटा आडं-
बरथी वांदवा आव्यो हतो, पण बाहुबलिने आवतां विलं-
ब थयो, अने प्रभु त्यांथी विहार करी चाल्या गया, तेथी
तेने प्रभुनां दर्शन थयां नहिं. आथी तेने पारावार खेद
थयो हतो. तेणे ते पछी त्यां धर्मचक्रनी स्थापना करी,
अठाइ उत्सव कर्यो हतो. प्रभु त्यांथी विहार करी आगळ
चाल्या हता. विविध जातना तप करता अने जुदां जुदा
प्रकारना अभिग्रह धारण करता प्रभुए अनेक देशोमां वि-
हार करी एक हजार वर्ष निर्गमन कर्यां. तेमना विहार-
थी अनेक लोकोनो उपकार थयो हतो. अनुक्रमे ते अ-
योध्या नगरीना पुरिमताल नामना परामां आवी चड्या.
ते परानी उत्तर दिशामां जाणे बीजुं नंदनवन होय, तेवुं
शकट मुख नामे एक उद्यान आवेलुं हतुं. तेमां प्रभुए प्र-
वेश कर्यो, अने त्यां तेमने त्रिकाळ विषयने जणावनारुं
केवळज्ञान प्रगट थयुं. अवधिज्ञानथी आ खबर जाणी, इंद्र
ऐरावत हस्ती उपर बेसी केवळज्ञाननो महोत्सव क-
रवाने त्यां आव्यो. ते काळे सर्व देवताओए समवसरण-
नी रचना करी. तेमां प्रभु पोते पधार्या, अने तेमनी आस-
पास जुदी जुदी बार पर्षदाओ गोठवाइ गइ. प्रभुना आ-
व्या पछी इंद्रे तेमनी स्तुति करी.

आ तरफ प्रभुनी माता मरुदेवाने खबर पड्या के,
पोताना पुत्र ऋषभे दीक्षा लीधी छे, तेथी तेमने पुत्रना
विरहथी घणो खेद थवा लाग्यो, ते वखते भरत तेमने

बोध आपी समजावता हता, त्यां तेमनें खबर थया के, आयुधशाळामां चक्ररत्न अने प्रभुने केवळ ज्ञान प्रगट थयेल छे. ते वखते पोतानुं प्रथम कर्त्तव्य शुं छे, तेनो निर्णय करी भरत प्रभुने वांदवा जवाने तैयार थयो. तेणे माता मरुदेवाने पण वांदवा आववानी प्रार्थना करी. माता मरुदेवा हाथी उपर चडी प्रभुने वांदवा नीकळ्यां, ते वखते प्रभुनी समृद्धि मार्गेथी जोतांज तेमनां नेत्रनां पडळ दूर थइ गयां, अने शुभ भावनी वृद्धि थतां तेमने केवळ ज्ञान उत्पन्न थयुं. ते साथे तेओ अंतकृत केवळी थइ मोक्ष गतिने प्राप्त थयां. आथी भरत घणुं आश्चर्य पामी प्रभुना समवसरणमां आव्यो.

सारांश प्रश्नो.

१ कच्छ महाकच्छ कोण हता ? २ तेओ तापस शामाटे थया हता ? ३ नमि विनमि कोण हता ? ४ तेओए प्रभुनी सेवा शामाटे करी हती ? ५ नमि विनमिने वैताढय पर्वतनुं राज्य कोणे आप्युं ? अने ते शा माटे आप्युं ? ६ नमि विनमिए वैताढय पर्वत उपर केटलां नगरो वसाव्यां ? ७ धरणेंद्रे विद्याधरोना केटला निकायनी व्यवस्था करी ? ८ भगवंते क्या नगरमां भिक्षा लीधी ? अने ते कोना तरफथी मळी ? ते बराबर कहो. ९ श्रेयांसनो पिता अने तेना पितानो पिता कोण हता ?

१० प्रभुए प्रथम भिक्षामां शुं वोहोर्युं हतुं ? ११ पांच दिव्य क्या क्या ते गणावो. १२ अक्षयतृतीया केवी रीते थइ ? १३ बाहुबलिनी राजधानीनुं शुं नाम ? १४ बाहुबलिए भगवंतने मोटा आडंबरथी वांद्या हता के नहि ? १५ धर्मचक्र कोणे स्थापन कर्युं ? १६ प्रभुने केवळज्ञान क्यां थयुं हतुं, ते नगरी पर्ण अने उद्याननां नाम आपो. १७ समवसरण कोण करे छे ? अने तेमां केटली पर्षदाओ वेसे छे ? १८ मरुदेवा माताए केवळज्ञान केवी रीते अने क्यां जतां थयुं हतुं ? १९ मरुदेवा केवी जातनां केवळी कहेवायां ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

परिषह, तापसवृत्ति, धरणेंद्र, विशाळ, मर्यादा, निकाय, व्यवस्था, निर्णय, अभिषेक, उपेक्षा, जातिस्मरण, पंचदिव्य, दुंदुभिनोध्वनि, अक्षय, धर्मचक्र, अठ्ठाइ उत्सव, निर्गमन, नंदनवन, उद्यान, त्रिकाळ विषय, अवधिज्ञान, समवसरण, पर्षदा, विरह, आयुधशाळा, चक्ररत्न, कर्त्तव्य, समृद्धि, शुभभाव, अंतकृत केवळी.

पाठ ४९ मो.

ऋषभदेव भाग ३ जो.

भरत राजाए समवसरणमां आवी प्रभुनी असरकारक स्तुति करी. ते प्रसंगे भगवंते उत्तम प्रकारनी देशना आपी हती. जेमां आ संसारनी असारता, मोक्ष मेळववाने करवा योग्य प्रयत्न अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्रनी आवश्यकता, ए त्रण बाबतोनुं विवेचन सारी रीते करवामां आव्युं हतुं. भगवंतनी देशनाथी भरतना पुत्र ऋषभसेनने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेणे पोताना बीजा पांचसो भाइओ अने तेमना सातसो पुत्रोनी साथे प्रभुनी पासे दीक्षा लीधी. आ अरसामां भरतना पुत्र मरिचिए अने तेनी बहेन ब्राह्मीए पण दीक्षा लीधी हती. ज्यारे सुंदरी पण व्रत लेवाने तैयार थइ, एटले भरते तेने अटकावी. अने तेने प्रभुनी प्रथम श्राविका करी. पोताना भोग कर्म भोगव्या शिवाय चारित्रनी प्राप्ति थती नथी, एवुं धारी भरते पोतानी मेळे श्रावकपणुंज अंगीकार कर्युं. आथी साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका,—एम चतुर्विध संघनी व्यवस्था त्यारथी प्रवर्त्ती. ऋषभसेननुं बीजुं नाम पुंडरीक हतुं, अने ते नामथी ते प्रभुना मुख्य गणधर थया. तेमने प्रभुए उत्पत्ति, ध्रौव्य अने नाश ए त्रिपदी संभळावी. ते उपरथी तेमणे द्वादशांगीनी रचना करी हती, ते पछी बीजी पोरसीए पुंडरीक गणधरे देशना आपी.

त्यारबाद प्रभुना तीर्थमां गोमुख नामनो यक्ष प्रभुनी पासे रहेनार अधिष्टायक थयो, अने प्रतिचक्रा नामे एक शासन देवी थइ. त्यांथी प्रभु वीजे विहार करी चाल्या गया.

भरतनो पुत्र मरिचि के जे, प्रभुनी पासे दीक्षा लइ रहेतो हतो, तेने चारित्र धर्म पाळवामां मुश्केली लागी, आथी तेणे त्रिदंडी संन्यासीनो नवो मार्ग उत्पन्न कर्यो. कर्म योगे मरिचिने भयंकर रोग थयो एटले उत्सूत्र प्ररुपणा करनारा मरिचिनी बीजा मुनिओए सेवा न करी. तेथी तणे कपिल नामना एक राजपुत्रने उत्सूत्र प्ररुपणा करी शिष्य कर्यो, कपिले मरिचिना मतने फेलाव्यो, अने संसारनी वृद्धि संपादन करी.

भगवंत विहार करतां अष्टापद पर्वत उपर समोसर्या. त्यां देवताओए प्रभुनुं समवसरण रच्युं. भरत मोटा ठाठमाठथी त्यां प्रभुने वांदवा आव्यो. आ प्रसंगे प्रभुए भरतनी समक्ष समवसरणमां देशना आपी. त्यार बाद पछी केटलेक काळे प्रभु फरी वार अष्टापद उपर आव्या हता. त्यां भरते केटलाएक प्रश्नो पुछया हता. तेमां धर्मचक्री अने चक्री संबंधी प्रश्नना उत्तरमां प्रभुए चोवीश तीर्थंकर अने वार चक्रवर्त्तीनुं वर्णन करी वताव्युं हतुं. ते प्रसंगे वासुदेव, वळदेव अने प्रतिवासुदेवनुं पण केटलुंएक विवेचन करवामां आव्युं हतुं. आ समये आ चोवीशीमां तीर्थंकर थनार कोइ जीव अहिं छे ? एवो भरते प्रश्न करवाथी भगवंते छेल्ला तीर्थंकर थनार म-

रिचिनुं नाम आपतां मरिचिने अति गर्व भरेलो आनंद थयो हतो, अने तेथी तेणे नीच गोत्रनुं कर्म बांध्युं हतुं. ते वखते भरते मरिचिने भविष्यना तीर्थंकर जाणी वंदना पण करी हती.

ते पछी केटलेक काळे प्रभु शत्रुंजय उपर आव्या हता. पुंडरीक गणधर विगेरे परिवारनुं त्यां निर्वाण थयुं हतुं. पाछा प्रभु अष्टापद पर्वत उपर आव्या हता, अने त्यां अनशन करी तेमनुं निर्वाण थयुं हतुं. आ वखते भरतने अपार शोक थयो हतो. इंद्रे आवीने त्यां प्रभुनो निर्वाण महोत्सव कर्यो. ज्यारे अवसर्पिणी काळना त्रीजा आरानां नवाणुं पखवाडीयां बाकी रह्यां, त्यारे माघ मासनी कृष्ण पक्षनी तेरसने दिवसे पहेला पोहोरे प्रभु निर्वाणने प्राप्त थया हता.

भगवंत ऋषभदेवने केवळज्ञान थयुं, त्यारथी मांडीने तेमना परिवारमां चोराशी हजार साधुओ, त्रण लाख साध्वीओ, त्रण लाख ने पचाश हजार श्रावको, पांच लाख ने चोपन हजार श्राविकाओ, चार हजार सातसो ने पचाश चौद पूर्वी, नव हजार अवधिज्ञानी, वीश हजार केवळज्ञानी, छसो वैक्रियलब्धिवाळा, बार हजार ने साडा छसो मनःपर्यवज्ञानी, तेटलाज वादीओ, अने बावीश हजार अनुत्तर विमानवासी—महात्माओ थया हता. ऋषभदेवनां आदिनाथ, आदीश्वर, युगादिप्रभु, नाभेय अने धर्मचक्री एवां नाम कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ भगवंत ऋषभदेवनी देशनामां कया कया विषयोनुं वर्णन थयुं हतुं ? २ ऋषभसेन विषे जे जाणता हो ते कहो, ते कोण हतो ? ३ ऋषभसेननी साथे कोणे दीक्षा लीधी ? ४ मरिचि कोण हतो ? ते विषे जे जाणता हो ते कहो. ५ भगवंतनी प्रथम श्राविका कोण थइ ? ६ भगवंतना तीर्थमां चतुर्विध संघ शी रीते थयो ? ७ पुंडरीक ए नाम कोनुं छे ? ८ भगवंते त्रिपदीनो उपदेश कर्यो, ते त्रिपदी कइ ? ९ प्रभुना तीर्थनो अधिष्ठायक यक्ष अने शासनदेवीनां माम शुं ? १० त्रिदंडी संन्यासीनो नवो धर्म कोणे चलाव्यो ? अने ते शा माटे चलाव्यो ? ११ कपिल कोण छे ? ते जणावो. १२ भरत, प्रभुने पहेली वार मोटा ठाठमाठथी वांदवाने क्यां आव्यो हतो ? १३ भरते प्रभुने कया विषय उपर प्रश्न पुछया हता ? १४ मरिचिए नीचुं गोत्र केम बांध्युं ? १५ पुंडरीक गणधर विगेरेनुं निर्वाण क्यां थयुं ? १६ प्रभुनुं निर्वाण क्यां थयुं हतुं ? १७ प्रभुना निर्वाणनो दिवस कयो ? अने मास कयो ? १८ प्रभुनुं निर्वाण थयुं त्यारे त्रीजा आरानो केटलो वखत बाकी रह्यो हतो ? १९ भगवंतना परिवारमां साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका केटली हती ? २० चौद पूर्वी, अवधिज्ञानी, केवळज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, केटला थया हता ? २१ ऋषभदेव प्रभुनां बीजां नाम आपो.

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, भोगकर्म, अंगीकार, चतुर्विध, उत्पत्ति, ध्रौव्य, त्रिपदी, द्वादशांगी, अधिष्टायक, त्रिदंडी, उत्सूत्र, प्ररूपणा, धर्मचक्री, चक्री, वासुदेव, बळदेव, प्रतिवासुदेव, विवेचन, नीच गोत्र, अनशन, निर्वाण, अवसर्पिणी, कृष्णपक्ष, चौद पूर्वी, अवधिज्ञानी, वैक्रियलब्धि, मनःपर्यवज्ञानी, अनुत्तर विमान, महात्माओ, युगादि प्रभु, नाभेय.

पाठ ५० मो.

रुषभनाथ चरित्र विषे कविता.

मनहर छंद.

आदि देव आदि गुरु आदि अरिहंत प्रभु,
प्रगट थया छे आदि भरतनी भूमिमां;
बार भव करी तेणे जिनवर नाम धर्युं,
तार्या घणा भविजन भरतनी भूमिमां. १

जुगलिक जाति तणा कुलकर नाभि पिता,
माता मरुदेवा तणा गर्भमांहि आविया;
स्वपन चतुर्दश माताए विशद जोयां,
छपन कुमारिओए भाव धरि भाविया. २

उत्सव अधिक करे जनमनो सुरपति,
बाळ क्रीडा करी प्रभु रगथी रमाडिया;
सुनंदा ने सुमंगळा साथ प्रभु परणिने,
भवतणा भोग कर्म पतावी नसाडिआ. ३

भरतादि सो कुमार पुत्री ब्राह्मी सुंदरीने,
लिपि गणितनी विद्या भणावी उमंगथी;
विनिता पुरी रचावी राजधानी करी तांहि,
शिल्पकळा शीखवी तमाम अति रंगथी. ४

चारित्रने लेता साथ मनपर्यवज्ञान,
धरी प्रभु श्रेयांसनी भिक्षा धरे हर्षथी;
अक्षयनी त्रीज स्थापे जगतमां पर्वरुप,
धरे पछी केवळनुं ज्ञान उत्कर्षथी. ५

समवसरण रचे देवता सुभाव धरी,
मरुदेवा माता धरे केवळ प्रभावथी;
तीर्थरुप संघतणी स्थापना करीने प्रभु,
पुंडरीक गणधर मुख्य करे भावथी. ६

त्रिपदीनो बोध करी द्वादशांग रचावीने,
गोमुख ने प्रतिचक्रा शासनमां स्थापता;
सिद्धाचळ आवी पुंडरीक आदि परिवार,
धरे निर्वाण सुख कर्म वधां कापता. ७

माघ वद तेरशने पहेले पहोर आदि जिन,
अष्टापद गिरिपर निर्वाण पामता;

जिनमत जगतमां जोरथी जमावी करी,
महा उपकारी अरिहंत ते विरामता. ८

चोराशी हजार साधु त्रण लाख साध्वीजी,
पचाश हजार त्रण लाख श्रावको थया;
चोपन हजार पांच लाख थइ श्राविकाओ,
कर्यो संघ परिवार एटलो करी दया. ९

सातसो पचाश चार हजार छे चौद पूर्वी,
ज्ञान धारी अवधिना नव तो हजार छे;
केवळी हजार वीश केवळना जाणनार,
वैक्रियनी लब्धि तणा छसो धारनार छे. १०

मनपर्यव तणा जाण छे हजार वार,
साडा छसो उपरांत तेटलाज वादी छे;
अनुत्तर विमानना वासी बाविश हजार,
परिवार प्रभुतणो एटलो अनादि छे. ११

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

भरतनी भूमिमां, विशद, भोगकर्म, सिद्धाचळ, विरामता, वादी.

पाठ ५१ मो.

भरत चक्रवर्त्ती–भाग १ लो.

भरत चक्रवर्त्ती श्री रुषभ भगवंतना सौथी मोटा पुत्र कहेवाय छे, पूर्वे इशानचंद्र राजाना सुनासीर नामना मंत्रीनी स्त्री लक्ष्मीना उदरथी सुबुद्धि नामनो एक पुत्र थयो हतो. ते मृत्यु पामीने बाहु नामे वज्रनाभ चक्रवर्त्तीनो भाइ थइ अवतर्यो. ते पछी छ लाख पूर्वथी कांइक ओछो समय वीत्या पछी ते बाहुनो जीव सुमंगळा देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो हतो. तेज भरत चक्रवर्त्ती थयो हतो. भरत चक्रवर्त्तीने ब्राह्मी नामे एक सहोदर बेन हती, अने अठाणुं बीजा भाइओ हता. बाहुबलि अने सुंदरी ए तेनां ओरमान भाइ बेन थतां हतां. तेओनी माता सुनंदा हतां. ज्यारे भरत सुमगंळाना उदरमां आव्या, त्यारे ए देवीए चौद स्वप्नो जोयां हतां. तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तीनी माता चौद स्वप्नो जुवे छे, पण तीर्थंकरनी माताना करतां चक्रवर्त्तीनी माता ते स्वप्नां जरा झांखां जुवे छे; एटलो तेमां तफावत छे.

भरत ज्यारे लायक उम्मरनो थयो, एटले तेना पिता रुषभ भगवंते तेने पुरुषनी बोंतेर कळा भणावी हती. तेनी बेन ब्राह्मीने अढार लिपिओ शीखवी हती. तेनो भाइ बाहुबलि पण स्त्रीनी चोसठ कळा शिख्यो हतो. अने तेनी बेन सुंदरीने गणितविद्या शीखववामां आवी हती.

ज्यारे ऋषभदेवने देवताओए तीर्थ प्रवर्त्तावबानी सूचना करी अने प्रभु ते प्रमाणे समय जाणी संयम लेवाने तैयार थया, त्यारे तेमणे भरतने अयोध्यानुं राज्य सोंप्युं हतुं, अने बाहुबलिने बहुलि देशनुं राज्य आप्युं हतुं, जेमां बळवान् बाहुबलिए तक्षशिला नामनी नगरीमां पोतानी राजधानी करी हती. ते शिवाय बीजा पुत्रोने योग्यता प्रमाणे बीजा देश अने गाम प्रभुए वहेंची आप्यां हतां. दीक्षा लीधा पछी एक हजार वर्ष जातां फागण वदी अगीयारसने दिवसे आदीश्वर प्रभु पुरिमताळ नामना नगरनी पासे आवेला शकट नामना वनमां एक वृक्ष नीचे अट्टमनो तप करी रहेला हता, त्यां तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी देवताओए आवी त्यां समवसरण रच्युं हतुं.

ते वखते अहिं एवुं बन्युं के, भरतनी आयुधशाळामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. आ चक्ररत्न उत्पन्न थवानी अने प्रभुने केवळज्ञान थवानी—ए बंने वधामणी एकज वखते भरतने कहेवामां आवी. ते जाणी भरते विचार्युं के, मारे हवे शुं करवुं ? पहेली चक्ररत्ननी पूजा करवा जवुं के, पिताना केवळज्ञानना उत्सवमां जवुं ? छेवटे तेणे निश्चय कर्यो के, आ चक्र तो आलोकना सुखनुं कारण छे, अने पिता तो परलोकना सुखनुं कारण छे. माटे प्रथम प्रभुना केवळज्ञानमां सामेल थवुं, आवुं विचारी भरत पोताना पितानी माता मरुदेवी के जेमने पुत्रना

वियोगथी आंसु पाडी पाडी आंखे पडळ आव्यां हतां, तेमने हाथीनी उपर बेसारीने प्रभुने वंदन करवा गयो. प्रभुनुं समवसरण जोइ भरते पोतानां पितामहीने कह्युं, " हे माता! आपना आ पुत्रनी अद्भुत समृद्धि जुवो. तेनी आगळ मारी अल्प समृद्धि कोण मात्र छे? वळी आ दुंदुभिना शब्दो सांभळो." आ वखते मरुदेवीए ते दुंदुभिना शब्द सांभळया एटले तेमने हर्षनां आंसु आव्यां, तेथी करीने तरत नेत्रनां पडळ उतरी गयां हतां. ज्यारे नेत्र शुद्ध थयां, एटले तेमणे प्रभुनुं समवसरण जोयुं. ते जोतांज संसारमां कोइ कोइनो नथी, एम भावतां कर्मनो क्षय थवाथी मरुदेवीने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं, अने ते साथेज आयुष्य पूर्ण थवाथी तेओ काळ करी मोक्षे गयां, अने देवताओए आवी तेमने अग्नि संस्कार कर्यो. ते पछी भरत समवसरणमां जइ प्रभुने त्रण प्रदाक्षिणा आपी वंदना करी धर्म उपदेश सांभळवा बेठो. त्यां प्रभुए तेनो शोक दूर करवाने देशना आपी; जे देशनामां आ संसारना मोह विषे मधुबिंदुनुं असरकारक दृष्टांत आपवामां आव्युं हतुं.

पाठ ५२ मो.

भरत चक्रवर्त्ती–भाग २ जो.

पछी भरत प्रभुने वंदना करी पाछो अयोध्यामां आ-

व्यो, अने तेणे आयुधशाळामां जइ भक्तिथी चक्ररत्ननी पूजा करी. अने अठ्ठाइ उत्सव कर्यो हतो. शुभ दिवसे पोताना तावाना घणा राजाओने एकठा करी भरत ते चक्ररत्ननी पाछळ दिग्विजय करवाने नीकळ्यो. चक्र जे मार्गे आगळ चाले, ते मार्गे ते चालतो हतो. प्रथम ते मागध तीर्थनी पासे आवी पहोंच्यो. त्यां पोताना सैन्यनो पडाव नांखी अठ्ठमनो तप कर्यो, तपनुं पारणुं करी रथ उपर वेसी नाभि प्रमाण जळमां रही तेणे पोताना नामनुं वाण मागध तीर्थना अधिपति मागध कुमारनी उपर छोडयुं. मागध कुमार ते वाण उपर भरत चक्रीनुं नाम वांची तत्काळ त्यां आव्यो, अने ' हुं आपनो सेवक छुं ' एम कही मुगट तथा कुंडल विगेरेनी तेने भेट आपी. भरत ते भेट लइ तेने पोताना सेवक वर्गमां स्थापी छावणीमां पाछो आव्यो. एवीज रीते दक्षिण समुद्रना अधिपति वरदाम देवने अने पश्चिम समुद्रना अधिपति प्रभास देवने तेणे साध्या हता.

ते पछी भरत वैताढय पर्वतनी दक्षिण श्रेणि उपर आवी पोतानी छावणी नाखी. त्यां प्रथमनी रीति प्रमाणे वैताढय देवनी आराधना करी, तमिस्रा नामनी गुफा पासे आव्यो. ते गुफाना रक्षक कृतमाल देवने आराधीने दक्षिण सिंधुना कांठाने साधवाने तेणे सुषेण सेनापतिने मोकल्यो. वहादूर सुषेण सेनापति जळ अने स्थलना किल्लाओमां रहेली वर्वर, विगेरे म्लेच्छोनी जातिओने वश करी

वियोगथी आंसु पाडी पाडी आंखे पडळ आव्यां हतां, तेमने हाथीनी उपर बेसारीने प्रभुने वंदन करवा गयो. प्रभुनुं समवसरण जोइ भरते पोतानां पितामहीने कह्युं, "हे माता! आपना आ पुत्रनी अद्भुत समृद्धि जुवो. तेनी आगळ मारी अल्प समृद्धि कोण मात्र छे? वळी आ दुंदुभिना शब्दो सांभळो." आ वखते मरुदेवीए ते दुंदुभिना शब्द सांभळया एटले तेमने हर्षनां आंसु आव्यां, तेथी करीने तरत नेत्रनां पडळ उतरी गयां हतां. ज्यारे नेत्र शुद्ध थयां, एटले तेमणे प्रभुनुं समवसरण जोयुं. ते जोतांज संसारमां कोइ कोइनो नथी, एम भावतां कर्मनो क्षय थवाथी मरुदेवीने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं, अने ते साथेज आयुष्य पूर्ण थवाथी तेओ काळ करी मोक्षे गयां, अने देवताओए आवी तेमने अग्नि संस्कार कर्यो. ते पछी भरत समवसरणमां जइ प्रभुने त्रण प्रदाक्षिणा आपी वंदना करी धर्म उपदेश सांभळवा बेठो. त्यां प्रभुए तेनो शोक दूर करवाने देशना आपी; जे देशनामां आ संसारना मोह विषे मधुबिंदुनुं असरकारक दृष्टांत आपवामां आव्युं हतुं.

पाठ ५२ मो.

भरत चक्रवर्त्ती—भाग २ जो.

पछी भरत प्रभुने वंदना करी पाछो अयोध्यामां आ-

ळ्यो, अने तेणे आयुधशाळामां जइ भक्तिथी चक्ररत्ननी पूजा करी. अने अट्ठाइ उत्सव कर्यो हतो. शुभ दिवसे पोताना तावाना घणा राजाओने एकठा करी भरत ते चक्ररत्ननी पाछळ दिग्विजय करवाने नीकळ्यो. चक्र जे मार्गे आगळ चाले, ते मार्गे ते चालतो हतो. प्रथम ते मागध तीर्थनी पासे आवी पहोंच्यो. त्यां पोताना सैन्यनो पडाव नांखी अट्ठमनो तप कर्यो, तपनुं पारणुं करी रथ उपर बेसी नाभि प्रमाण जळमां रही तेणे पोताना नामनुं बाण मागध तीर्थना अधिपति मागध कुमारनी उपर छोडयुं. मागध कुमार ते बाण उपर भरत चक्रीनुं नाम वांची तत्काळ त्यां आव्यो, अने ' हुं आपनो सेवक छुं ' एम कही मुगट तथा कुंडल विगेरेनी तेने भेट आपी. भरत ते भेट लइ तेने पोताना सेवक वर्गमां स्थापी छावणीमां पाछो आव्यो. एवीज रीते दक्षिण समुद्रना अधिपति वरदाम देवने अने पश्चिम समुद्रना अधिपति प्रभास देवने तेणे साध्या हता.

ते पछी भरत वैताढय पर्वतनी दक्षिण श्रेणि उपर आवी पोतानी छावणी नाखी. त्यां प्रथमनी रीति प्रमाणे वैताढय देवनी आराधना करी, तमिस्रा नामनी गुफा पासे आव्यो. ते गुफाना रक्षक कृतमाल देवने आराधीने दक्षिण सिंधुना कांठाने साधवाने तेणे सुषेण सेनापतिने मोकल्यो. बहादूर सुषेण सेनापति जळ अने स्थलना किल्लाओमां रहेली बर्बर, विगेरे म्लेच्छोनी जातिओने वश करी

तेमनी पासेथी नजराणां तथा भेटो लइ पोताना स्वामी भरतनी पासे आव्यो. पछी भरते तमिस्रा गुफा उघाडवानो इरादो कर्यो. अने तेने माटे तेना अधिष्ठायक देवनुं आराधन कर्युं. आराधन कर्या पछी दंडरत्नवडे प्रहार करीने तेणे गुफानुं द्वार उघाडयुं. ज्यारे गुफा उघडी एटले तेमां भरते हस्तिरत्न उपर बेसी प्रवेश कर्यो. गुफानी अंदर घणुं अंधकार हतुं, एथी तेणे हाथीना कुंभस्थळ उपर रत्न मुकी प्रकाश कर्यो. अने पछी काकिणी नामना रत्नवडे बार योजन सुधी प्रकाश पाडतो गोमूत्रिकाने आकारे गुफानी भींतो उपर एक एक योजनने आंतरे पांचसो योजनना विस्तारवाळा ओगणपचाश मांडला करतो गुफानी अंदर चाल्यो हतो.

आ मोटी भयंकर गुफामां आगळ चालतां रस्तामां उन्मग्ना अने निमग्ना नामनी बे नदीओ आवी. उन्मग्ना नदीमां एवो प्रभाव छे के, तेमां शिला मुकी होय तोपण ते तुंबडीनी जेम तरी शके छे, अने निमग्नामां तुंबडी मुकी होय तोपण ते शिलानी जेम डुबी जाय छे. आ बन्ने नदीओनी उपर वार्द्धकि नामना रत्नथी पुल बांधवामां आव्यो, पछी भरत चक्रवर्त्ती सेना सहित तेने सुखेथी उतरी गयो. पचाश योजन विस्तारवाळी ते गुफानी बाहेर नीकळतां किरात जातिना बळवान् लोको तेनी सामे थया, तेओने भरते क्षण बारमां जीती लीधा. पराभव पामेला ते लोकोए पोतानी गोत्र देवीनी आराधना

करी, अने तेनी मदद मेळवी चक्रवर्त्तीनी सेना उपर बार योजन सुधीमां अतिवृष्टि करावी. ते वखते प्रभाविक चक्रवर्त्तीए पोताना चर्मरत्नने बार योजन सुधी प्रसारी तेमां छावणी नखावी, अने माथा उपर छत्र रत्नने तेटलाज प्रमाणमां प्रसारी, पोतानी तमाम सेनानी रक्षा करी, तथा अंदर प्रकाश पाडवाने माटे छत्रना दांडा आगळ मणिरत्नने स्थापित कर्युं. आ प्रमाणे सात दिवस सुधी तेने ते स्थळे रहेवुं पडयुं. पछी ज्यारे किरात लोको काइ गया, त्यारे ते चर्म रत्नमांथी चक्र बाहेर नीकळ्युं, अने तेनी पाछळ वधो काफलो बाहेर आव्यो, ते देखाव उपरथी ब्रह्ममांथी इंडुं नीकळ्युं, ए कहेवत लोकोमां प्रवर्त्ती अने तेनुं ब्रह्मांड एवुं नाम पडयुं.

पाठ ५३ मो.

भरत चक्रवर्त्ती–भाग ३ जो.

ते पछी क्षुद्र हिमालयना अधिष्टायक देवने साधी भरत आगळ चाल्यो, अने वैताढय पर्वतनी दक्षिण अने उत्तर श्रेणिमां आव्यो. त्यां कच्छ अने महा कच्छना पुत्र नमि अने विनमि हता, तेओनी साथे बार वर्ष सुधी युद्ध चाल्युं. आखरे तेओने बळवान् चक्रवर्त्तीए जीती लीधा. हारी गयेला विनमिए चक्रवर्त्ती भरतने पोता-

नी सुभद्रा नामनी पुत्री आपी. ते पछीं ते बंनेने वैराग्य उत्पन्न थयो, अने तेओए पोतानां राज्यो पुत्रोने सोंपी आदीश्वर भगवंतनी पासे दीक्षा लीधी.

त्यांथी भरत चक्रवर्त्ती गंगा नदीने कांठे आव्यो. त्यां पोताना सैन्यनो पडाव नाखी सुषेण सेनापतिने आज्ञा करी, एटले तेणे पूर्वनी रीते गंगा नदीना उत्तर कांठाने साधी लीधो. चक्रवर्त्तीनी महत्ता जोइ गंगा देवी तेनीपर आसक्त थइ, अने भरतनी साथे रमवा आवी, भरते एक हजार वर्ष सुधी तेणीनी साथे क्रीडा करी. अहिं गंगाना कांठापर रहेला भरत चक्रवर्त्तीने नव निधि प्राप्त थया.

१ नैसर्प, २ पांडुक, ३ पिंगल, ४ सर्वरत्नक, ५ महापद्म, ६ काळ, ७ महाकाळ, ८ माणवक अने ९ शंख–एवां ते नव निधिनां नाम होय छे. ते नामना नागकुमार निकायना देवताओ तेमना अधिष्टायक थइ तेओनी रक्षा करे छे. ते नवनिधि दरेक बार योजन लांबा, नव योजन पहोळा, अने आठ योजन उंचा होय छे. ते दरेक निधानमांथी जुदा जुदा लाभ मेळवी शकाय छे. पेला नैसर्प निधिमांथी छावणी, शहेर, गाम, खाण विगेरे स्थाननुं निर्माण थइ शके छे. बीजा पांडुक नामना निधानमांथी मान, उन्मान अने प्रमाण–ए सर्वनुं गणित तथा धान्य अने बधी जातनां बीज उत्पन्न करी शकाय छे. त्रीजा पिंगळ नामना निधिथी पुरुष, स्त्री,

हाथी अने घोडा विगेरेनां आभूषणोनो विधि जाणी श
काय छे. चोथा सर्वरत्नक नामना निधिथी चक्ररत्न वि
गेरे एकेंद्रिय अने पंचेंद्रिय रत्नो उत्पन्न करी शका
छे. पांचमा महापद्म नामना निधिथी सर्व जातनां शु
अने रंग वेरंगी वस्त्रो बनावी शकाय छे, छठ्ठा काळ न
मना निधिमांथी भूत, भविष्य अने वर्त्तमान—ए त्रण का
ळनुं ज्ञान, खेती विगेरे अने कर्म शिल्प शास्त्रनुं ज्ञान मेळव
शकाय छे. सातमा महाकाळ निधिमांथी प्रवाळां, सोनुं
रुपुं, मोती, अने वीजी सात धातुओनी खाणो उत्प
करी शकाय छे. आठमा माणवक नामना निधिमांथी यु
नीति, दंडनीति अने लडाइनी सर्व सामग्री संपादन कर
शकाय छे. अने नवमा शंखक नामना महानिधिथी का
व्य, नाटक अने संगीतने लगतां बधां साधनो मेळव
शकाय छे.

आ प्रमाणे चक्रवर्त्तीनी सर्व समृद्धिने पूरी पाड
नारा नव निधिने मेळवी भरत साठ हजार वर्ष सुधी
फरी दिशाओने साधी पोतानी राजधानी अयोध्यामां पा
छो आव्यो हतो. तेणे त्यां आवीने बार वर्ष सुधी मोट
उत्सवथी चक्रनी पूजा तथा अभिषेक कर्यो. तेने हवे च
क्रवर्त्तीनी बधी समृद्धि पूरी थइ हती. तेना अंतःपुरम
चोसठ हजार स्त्रीओ हती, सवा लाख बीजी वारांगना
ओ हती. तेनी सेनामां चोराशी लाख हाथी, चोराशी
लाख घोडा, चोराशी लाख रथ अने छन्नुं क्रोड पेदल

हतुं. तेना तावामां बहोंतेर हजार शहेर अने छन्नुं क्रोड गामडां हतां, तेनी राजधानीमां अढार श्रेणि जातना अनेक वेपारीओ रहेता हता. तेना दरबारमां पण मोटी समृद्धि हती. त्रणसो ने त्रेसठ तो तेना रसोडामां रसोइआ हता. भरत हवे खरेखरा चक्रवर्त्ती महाराजा कहेवाया हता. एक वखते महाराजा भरते पोतानी सावकी बहेन अने बाहुबलिनी सगी बहेन सुंदरीने शरीरे दुबळी जोइने तेम थवानुं कारण पुछ्युं हतुं. धार्मिक हृदयनी राजकुमारी सुंदरी तो कांइ बोली नहिं, पण तेना अंगित परिवारे भरत राजाने आ प्रमाणे कह्युं,—स्वामी ! आप दिग्यात्रा करवा पधार्या त्यारथी, अमारां कुंवरीवाए आंबेलनो तप करवा मांडयो छे, ते तप करतां तेमने आजे साठ हजार वर्ष थइ गयां छे. तेमनी धीरता समुद्रनी जेम द्रढ रही छे. तेओ दुबळां थइ गयां छे, ते छतां मोहरुपी समुद्रमां निमग्न एवा आप महाराजा अने बाहुबलिना करतां पण तेओ पोताना शील गुणने लीधे वधारे बलवान् छे. नाभिराजानी संततिमां धर्म अखंडित रहे तेमां शुं आश्चर्य ? सुंदरीनी आ आश्चर्यकारी वात सांभळी भरत खुशी थया, अने तेने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी, पछी सुंदरीए पिताश्री भगवंतनी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं हतुं.

पाठ ५४ मो.

भरत चक्रवर्त्ती–भाग ४ थो.

एक वखते कोइ सेवके आवी भरतचक्रीने खवर आप्या के, चक्ररत्न आयुधशाळामां हजु पेशतुं नथी. ते सांभळी महाराजाए पोताना मंत्रीने तेनुं कारण पुछयुं. मंत्रीए कहयुं के, राजाधिराज! तमारो ओरमान भाइ वाहुवलि हजु तमारे तावे थइ तमारी सेवामां आव्यो नथी, तेथी एटलो विजय वाकी छे, माटे चक्ररत्न आयुधशाळामां पेशतुं नथी. भरते तरतज सुवेग नामना दूतने वाहुवलिनी पासे मोकल्यो. सुवेगे वाहुवलिने सभामां आवी कहयुं के, तमारा भाइ भरत राजा छ खंड पृथ्वीने साधीने चक्रवर्त्ती थया छे, मोटा मोटा राजाओए तावे थइने तेमने मोटी मोटी भेटो आपी छे, ते छतां तमे हजु भाइने मळवाने पण केम आव्या नथी? हवे सत्वर चालो, अने तेमनी सेवा करो, तमने तेओ वोलावे छे. खुशी थयेला राजाधिराज भरत तमने कोइ देश वक्षीसमां आपशे. सुवेगनां आवां वचन सांभळी गर्वना अभिमानी वाहुवलिने घणो गुस्सो चडयो, अने ते वोल्यो–अरे दूत! जा तारा भरतने कहे के, भाइ कोनो? हुं पिता शिवाय कोइनी सेवा करवानो नथी. जो हुं तेनी सेवा करुं तो, मारुं सर्वस्व गयुं, एम समजवुं. आ देश उपर कांइ तेनो हक नथी. आ देश मने मारा पिता तरफथी मळेलो छे;

तेमां भरतने शी तृष्णा छे ? सुवेगे फरीथी जणाव्युं, श्री-मान् बाहुबलि ! हृदयमां विचारो. तमारा भाइ तमाराथी चडीआता छे, तेमज सैन्यथी अने बाहुना बळथी तमारा करतां ते घणा बळवान् छे; माटे तमे त्यां आवी तेमने नमशो तो, तमने घणो लाभ थशे. अने जो नहिं नमो तो, ते पोते अंहि आवीने तमने मारी तमारो देश ताबे करी लेशे. बाहुबलि लाल नेत्र करी बोल्यो—सुवेग ! शुं तारो अभिमानी भरत पूर्वनी वात भुली गयो ? एक वखते गंगा नदीने कांठे रमतां रमतां में तेने दडानी जेम उछाळी आकाशमां उडाडयो हतो, अने पृथ्वीपर पडया पहेलां तेने हाथमां झीली लीधो हतो. ए शुं भुली गयो के ? अत्यारे पोतानुं बळ जणाववाने शुं आव्ये छे ? सुवेग बोल्यो—स्वामी ! ए वात अत्यारे याद करवानी नथी. अत्यारे भरत चक्रवर्त्ती सर्व प्रकारे वध्या छे. जेमनी सेना चालवाथी पृथ्वी कंपी चाले छे, अने वैताढयमां वसनारा नमि, विनमि विद्याधर अने मागध कुमार विगेरेने पण जेमणे साधी लीधा छे. सुवेगनां आवां वचन सांभळी बाहुबलिने घणी रीस चडी अने तेणे तत्काळ सुवेगने अपमान करी सभामांथी काढी मुक्यो.

सुवेगे आवी भरत चक्रीने ए बधा खबर आप्या. ते सांभळी भरते बाहुबलिना देश उपर चडाइ करी, अने त्यां जइने तेनी राजधानी तक्षशिला नगरी उपर मोटो घेरो नाखीने ते रह्यो. भरतनुं सैन्य आवेलुं जोइ, बाहुब-

लि जरा पण डर्यो नहिं, तरतज युद्ध करवाने माटे तै-
यार थइ ते चालवा लाग्यो, ते वखते तेना सुमतिसागर
नामना मंत्रीए आवी प्रणाम करी जणाव्युं. महाराज !
उतावळा थाओ नहिं. पाछा वळो. श्री आदिनाथ प्रभुनी
पूजा करी वधा सैनिकोने जमाडीने पछी युद्ध करवा
जाओ. धार्मिक हृदयनो वाहुवलि मंत्रीनां वचनथी तर-
तज पाछो वळयो. ते पछी ऋषभदेव प्रभुनी पूजा करी,
तेणे पोताना सैनिकोनी साथे भोजन लीधुं. त्यार
पछी ते रण भूमिमां आव्यो. भरत अने वाहुवलिनी व-
च्चे वार वर्ष सुधी भयंकर युद्ध चाल्युं हतुं. तथापि वं-
नेमांथी कोइनी हार जीत थइ नहिं. युद्धमां अनेक जी-
वोनो संहार थतो जोइ, शक्र इंद्र आवी तेमनी वच्चे पडयो.
इंद्रे तेमने विनंति करी के, घणा जीवनो संहार थाय ते-
वुं युद्ध तमारे न करवुं जोइए. तमे परस्पर युद्ध करो. पछी
शक्र इंद्रे दृष्टियुद्ध, वाहुयुद्ध, मुष्टियुद्ध, दंडयुद्ध अने वचन
युद्ध एवां पांच प्रकारनां युद्ध करवानो ठराव कर्यो, अ-
ने तेमां पोते साक्षीरुपे उभो रह्यो. प्रथम तेमनी वच्चे
दृष्टियुद्ध एटले नजरनुं युद्ध चाल्युं, तेमां वळवान् वाहुव-
लिए भरतने हरावी दीधो. देवताओए वाहुवलिनी उपर
पुष्पनी वृष्टि करी, पछी अनुक्रमे वाहुयुद्ध, मुष्टियुद्ध, दं-
डयुद्ध अने वचनयुद्ध करवामां आव्यां, ए सर्वमां पण
भरते मोटी हार खाधी. पोतानो जवरो पराभव थयेलो
जोइ, भरते वाहुवलिनी उपर चक्ररत्न छोडयुं, पण ते

बाहुबलिने हणी शक्युं नहिं. चक्र तेनी आसपास प्रदक्षिणा करी पाछुं भरतनी पासे आव्युं. चक्रवर्त्तीनुं चक्र एक गोत्रवाळा उपर चाली शकतुं नथी. पछी भरते बाहुबलिना माथामां मुष्टिनो घा कर्यो, एटले बाहुबलि जमीनमां जांघ सुधी पेशी गयो. पछी बाहुबलि प्रचंड मुष्टि करी भरतनी उपर धसी आव्यो, तेवामां देवताओए तेने अटकाव्यो. देवतानां वचनथी बाहुबलिए विचार कर्यो, अने ते विचारमांज तेने वैराग्य उत्पन्न थयो. जे मुष्टि तेणे भरतने मारवा तैयार करेल, तेज मुष्टिथी पोताना मस्तकना केशनो लोच कर्यो, अने पोताना आत्माने वोशरावीने ते कायोत्सर्ग करीने रह्यो. त्यां भरते आवी तेने वंदना करी, अने राज्य लेवाने माटे विनंति करी. बाहुबलिए केटली वार मौन राख्युं हतुं, पण पछी पोताना भाइ भरतने खमाव्या हता.

भरते बाहुबलिना पुत्र सोमयशाने तेना राज्य उपर वेसार्यो, अने बीजा केटलाएक देशनी सत्ता वधारी आपी तेने संतोष पमाड्यो. पछी भरत पोतानी राजधानीमां आव्या, अने बार वर्ष सुधी तेमणे चक्रवर्त्तीपणानो राज्याभिषेक कराव्यो. नाना भाइने न वांदवारुप अभीमानथी अहिं एक वर्ष सुधी बाहुबलि अन्न पाननो त्याग करी कायोत्सर्गे रह्यो हतो, तेवामां ऋषभदेव भगवंते तेमने बोध करवाने ब्राह्मी अने सुंदरी के जे साधवी थइ

हती, तेमने मोकली. तेमणे आवी बाहुबलिने कह्युं के, भाइ ! हाथी उपरथी नीचे उतरो. मतलब एवी छे के, अभिमानरुप हाथी उपरथी उतरो. एटले अभिमाननो त्याग करो. बाहुबलिना मनमां एवुं अभिमान थयेल के, जो हुं केवळज्ञान थया विना पिताश्रीनी पासे जइश तो, मारे मारा अठाणुं भाइओ के जेओ, माराथी वये नाना छे, तेओ पेहेलांना दीक्षित होवाथी तेमने मारे वंदन करवुं पडशे. आ अभिमान तोडवाने माटेज प्रभुए ब्राह्मी अने सुंदरीने मोकली हती. ते वखते बाहुबलिनुं अभिमान तुटी गयुं, अने कर्मनो क्षय थवाथी केवळज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं हतुं. पछी तेओ भगवंतने वांदी तेमनी केवळीनी पर्षदामां जइने बेठा हता.

पाठ ५५ मो.

भरत चक्रवर्त्ती—भाग ५ मो.

एक वखते भरत राजा पक अन्ननां पांचसो गाडां भरी श्री ऋषभदेव भगवान्‌नी पासे आव्या, अने तेमणे भगवंतने कह्युं, स्वामी ! आ अन्न ग्रहण करी मारी उपर अनुग्रह करो. भगवंते उत्तर आप्यो. साधुओने राजाओना घरनो आहार कल्पे नहिं. तेथी ते साधर्मी बंधुओने आपो. ते पछी भरते ब्रह्मचर्य व्रतवाळा श्रावकोने जमाडवा मां-

डया. ज्यारे घणा लोको जमवाने एकठा थवा लाग्या, एटले रसोइआए भरतने विनंति करी के, अमे पहोंची शकता नथी. पछी भरते ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनां त्रण चिन्ह ओळखवारुपे श्रावकनी परीक्षा करी, तेमने गळे काकणी रत्नथी त्रण त्रण रेखाओ करवा मांडी, अने ते चिन्हथी ओळखी जमाडवा मांडया, अनुक्रमे ते चिन्ह ब्राह्मणोनी जनोइरुपे थयुं.

एक वखते भरते प्रभुने पुछ्युं हतुं के, आ चोवीशीमां थनारा तीर्थंकरो मांहेलो कोइ जीव अहिं छे के नहि ? प्रभुए भरतना पुत्र मरिचिनुं नाम आप्युं हतुं, पछी भरते मरिचिने कुळनी प्रशंसा करवा पूर्वक वंदना करी. ते सांभळी मरिचिने अभिमान थइ आव्युं. अने तेथी करीने तेणे नीच गोत्र बांध्युं. जे मरिचि महावीररुपे भिक्षुक कुळमां प्रगट थयो हतो.

ए भरत चक्रवर्त्तीए शत्रुंजय तीर्थ उपर रुषभदेव अने पुंडरीक गणधरनी प्रतिमा साथे एक मोटो प्रासाद कराव्यो हतो. ते शिवाव अष्टापद पर्वत उपर आदिनाथ प्रभुना निर्वाणने स्थाने बेठेला सिंहने आकारे एक बीजो प्रासाद पण कराव्यो हतो. तेनी आसपास चोवीश जिनेश्वरनी प्रतिमाओ तेमना शरीरना मान प्रमाणे चारे दिशाओमां स्थापन करी हती. वळी ते तीर्थनी रक्षाने माटे दंडरत्नथी पर्वतनां शिखरोने छेदीने एक एक योजन प्रमाणे आठ पगथीआं कराव्यां हतां. एक वखते भरत

अंतःपुरनी अंदर अरिसा भवनमां उभा रही पोताना शणगारेला शरीरने जोता हता. अकस्मात् तेमनी आंगळीमांथी एक वींटी नीकळी पडी, तेथी शोभा वगरना हाथने जोतांज तेणे वधां आभूषण उतार्यां. पछी देहनो देखाव जोइ वैराग्य उत्पन्न थयो. तेना भविक हृदयमां अनित्य भावना उत्पन्न थइ, अने तरतज तेने गृहस्थपणामां केवळज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. भरत चक्रवर्त्तीनी साथे बीजा दश हजार राजाओए दीक्षा लीधी हती. तेमनुं निर्वाण अष्टापद पर्वत उपर थयुं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ भरत पूर्व भवमां कोण हता ? २ भरतनी मातानुं नाम शुं ? ३ तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तीनी मा जे स्वप्नां जुवे तेमां शो तफावत छे ? ४ बाहुबलिनी राजधानी क्यां हती ? ५ भरतनी आयुधशाळामां चक्र प्रगट थयुं, ते वखते बीजुं शुं बन्युं हतुं ? ६ मरुदेवा माताने केवळज्ञान केवी रीते थयुं ? ते हकीकत कहो. ७ भगवंते भरतने पहेली देशनामां शेनुं दृष्टांत आप्युं हतुं ? ८ प्रथम भरत कोने साधवा गयो ? अने साधवाने माटे केवुं तप कर्युं हतुं ? ९ दक्षिण अने पश्चिम समुद्रना अधिपति कोण हता ? अने तेमने भरते साध्या हता के नहिं ? १० तमिस्रा गुफा क्यां छे ? अने तेमां भरते शुं कर्युं हतुं ? ते बधी हकीकत कहो. ११ बर्बर विगेरे म्लेच्छ लोकोने भ-

रते केवी रीते साध्या हता ? १२ तमिस्रा गुफामां केवी जातनी नदीओ आवी हती ? अने तेने भरत केवी रीते उतर्यो ? ते हकीकत कहो. १३ भरते चर्मरत्ननो अने छत्र-रत्ननो उपयोग क्यारे कर्यो हतो ? १४ ब्रह्मांड ए नाम क्यारे पडयुं ? १५ नमि अने विनमि कोना पुत्र हता ? अने भरतने तेमनी साथे केटलां वर्ष युद्ध चाल्युं हतुं ? १६ विनमिए भरतने शेनी भेट आपी हती ? १७ गंगा नदीने कांठे भरतने शुं बन्युं हतुं ? ते बधी हकीकत कहो. १८ नवनिधिनां नाम आपो. १९ छावणी तथा शहेर वसावानुं कया निधिमांथी बनी शके छे ? २० सर्व जातनां रंगबेरंगी वस्त्रो कया निधिमांथी बनी शके छे ? २१ शिल्प शास्त्रनुं ज्ञान कया निधिथी मेळवाय छे ? २२ भरतने केटलां वर्ष सुधी दिशाओ साधवी पडी हती ? २३ भरत चक्रवर्त्तीने केटलां वर्ष सुधी अभिषेक थयो हतो ? २४ भरतना अंतःपुरमां केटली स्त्रीओ हती ? २५ वारांगनाओ केटली हती ? २६ तेनी सेनामां हाथी, घोडा, रथ अने पेदल केटलां हतां ? २७ तेने शहेर अने गाम केटलां हतां ? २८ तेना रसोडामां रसोइआ केटला हता ? २९ सुंदरीए केवो तप करेल, अने क्यां सुधी करेल ? ३० भरते बाहुबलिने समजाववा कोने मोकल्यो हतो ? ३१ भरते बाहुबलि उपर चडाइ करी, त्यारे तेना समाधान माटे कोण आव्युं हतुं ? ३२ बाहुबलिए भरतने केटली प्रकारना युद्धमां हराव्यो हतो ? ३३ भरते छोडेलुं चक्र

बाहुबलि उपर केम न चाल्युं ? ३४ बाहुबलिने वैराग्य क्यारे थयो ? अने ते केवी रीते थयो ? ३५ सोमयशा कोण हतो ? ३६ बाहुबलि केटली मुदत सुधी कायोत्सर्ग करी रह्यो हतो ? ३७ बाहुबलिने सुंदरीए शो बोध आप्यो हतो ? ३८ ब्राह्मणोने जनोइ पहेरवानो चाल शी रीते थयो ? ते बधी हकीकत कहो. ३९ महावीर भगवंतनो जीव कोण हतो ? अने तेणे नीच गोत्र केम बांध्युं ? ४० भरते क्यां क्यां जिन प्रासाद करावेल ? ते कहो. ४१ भरतने वैराग्य थवामां शुं बन्युं हतुं ? ४२ भरते केटला राजाओनी साथे दीक्षा लीधी हती ? ४३ भरतनुं निर्वाण क्यां थयुं हतु ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

चक्ररत्न, समवसरण, दुंदुभि, अग्नि संस्कार, मधुबिंदु, अट्ठाइ उत्सव, दिग्‌विजय, मागधतीर्थ, अठ्ठम, म्लेच्छ, दंडरत्न, हस्तिरत्न, कुंभस्थल, काकिणी, गोमूत्रिका, मांडला, उन्मग्ना, निमग्ना, प्रभाव, शिला, वार्द्धकिरत्न, किरात, गोत्रदेवी, अतिवृष्टि, प्रभाविक, छत्ररत्न, मणिरत्न, चर्मरत्न, ब्रह्मांड, आसक्त, निधि, उन्मान, शिल्पशास्त्री, युद्धनीति, दंडनीति, सामग्री, अढारश्रेणि, सापत्न, दिग्‌यात्रा, धीरता, निमग्न, छखंड पृथ्वी, सर्वस्व, तृष्णा, दृष्टियुद्ध, बाहुयुद्ध, मुष्टियुद्ध, दंडयुद्ध, वचनयुद्ध, एकगोत्र, प्रचंड, पर्षदा, काकणीरत्न, भिक्षुक.

पाठ ५६ मो.

ढंढण कुमार.

आपणे एटलुं तो हमेशां याद राखवुं के, कादिपण कोइने आहारनो अंतराय करवो नहिं. माणस मात्रनुं जीवन आहार उपर होय छे. बने त्यां सुधी मुख्याने भोजन आपवुं, ए श्रावकनो धर्म छे. सौथी पेहेला आपणा स्वधर्मीने अहार आपवो जोइए. पण जो कोइ अन्य धर्मी दुःखी थतो होय तो, अनुकंपादान तरीके पण तेने अन्न आपवानी गोठवण करवी. कोइ तेवी गोठवण करतुं होय तो, तेमां अनुमोदन करवुं. आहार आपवामां कदिपण अंतराय करवो नहिं, अंतराय करवाथी ढंढण कुमारनी पेठे आहार विना दुःखी थवाय छे.

द्वारका नगरीना राजा श्रीकृष्ण वासुदेवने ढंढणा नामनी राणीथी ढंढण कुमार नामे एक पुत्र थयो हतो. ते स्वरुपे सुंदर हतो. जेवुं तेनामां स्वरुप हतुं, तेवा गुण पण सारा हता. एक वखते ते कुमार नेमिनाथ प्रभुनी पासे जइ चडयो. ते वखते प्रभु धर्म देशना आपता हता. त्यां प्रभुना मुखथी तेणे सांभळयुं के, " सारा कुळमां जन्म, आरोग्य, सारां भाग्य, लक्ष्मी, आयुष्य, यश, विद्या, गुणवान, हाथी, घोडा, नोकर विगेरेनी समृद्धि अने चक्रवर्त्ती तथा इंद्रनी पद्वी ए बधुं धर्म करवाथी प्राप्त थाय छे. जे माणस निर्मळ हृदयथी संयमने पाळे छे, ते अव-

ज्य कल्याणना सुखनो भोगवनार थाय छे. आलोक अने परलोकनुं सुख मेळववाने भगवंते श्रावक धर्म अने साधु धर्मना बे मार्ग दर्शाव्या छे." नेमिनाथ प्रभुनी आ देशना सांभळी ढंढण कुमारने तरत वैराग्य थइ आव्यो. अने तेणे संसाररुप समुद्रने तारनारी दीक्षा भगवंतनी पासे ग्रहण करी.

मुनि धर्मथी सुशोभित एवा ढंढण कुमारे एवो अभिग्रह धारण कर्यो के, "ज्यारे हुं मारी पोतानी लब्धिए शुद्ध भिक्षा मेळवीश, त्यारेज पारणुं करीश." आवो अभिग्रह धारी तेणे आखी द्वारका नगरीमां फरवा मांडयुं, पण तेने कोइ ठेकाणेथी भिक्षानो एक कोळीओ पण मळ्यो नहिं. पछी तेणे भगवान् नेमिनाथनी पासे आवीने पुछयुं, प्रभु! मने शुद्ध भिक्षा केम न मळी? भगवंत बोल्या—पूर्वे मगध देशमां धान्यपूरक नामना गाममां पराशर नामे एक कुल पुत्र रहेतो हतो. ते राजाना क्षेत्रमां खेती करावतो हतो. एक दिवस भात आव्युं, तोपण तेणे हळे जोडेला पांचसो बळदोने छोडया नहिं, अने खवराववानी वेळा थइ गइ, तोपण तेमणे खवराव्युं नहिं, आथी करीने तेणे निकाचित अंतराय कर्म बांध्युं. त्यांथी ते पराशर मृत्यु पामी केटलाक भवमां भ्रमण करी तुं कृष्णना पुत्र ढंढण कुमार थइ अवतर्यो छुं, आथी तने भिक्षा मळी नहिं.

प्रभुनां आवां वचन सांभळी ढंढण मुनिए तपस्या

करी ते कर्मने तोडवा मांडयां. एम करतां एक वार तेमने भिक्षामां लाडु मळ्या, ते वखते तेणे प्रभुने पुछ्युं, स्वामी! मारुं पूर्वनुं कर्म क्षीण थयुं के नहिं? प्रभुए कह्युं, ते कर्म क्षीण थयुं नथी. अने तने जे अहार मळ्यो, ते कृष्णनी लब्धिए, तारी लब्धिए नहिं. आ सांभळी ढंढण मुनि ते लाडुने परठववानी इच्छाए कोइ कुंभारना नींभाडे गया, अने मोदकने चूर्ण करी नाख्या. पछी शुक्ल ध्यानने ध्याता एवा ढंढण मुनि केवळज्ञानने प्राप्त थया.

आ उपरथी आपणे एटली शिक्षा लेवानी छे के, कोइ माणसने खावानो अंतराय करवो नहिं. क्षुधाथी पीडाएला माणसने भोजन मळतुं होय, तेवे वखते कोइ रीते तेने अंतराय करी दुःखी करवो नहिं. पराशर के जे राजानो मोटो खेडुत हतो, तेणे बळद जेवा अवाचक प्राणीने अंतराय कर्यो हतो, तेथी तेने मुनिनी अवस्थामां पण अहारथी दुःखी थवुं पडयुं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ ढंढण कुमार कोण हतो? ते कहो. २ नेमिनाथ प्रभुए तेने केवी देशना आपी हती? तेनो सार कहो. ३ ढंढण कुमारे मुनि थइने केवो अभिग्रह धारण कर्यो हतो? ४ तेने थयेला आहारना अंतरायने माटे प्रभुए

शुं कह्युं हतुं ? ५ ढंढण कुमार पूर्वे कोण हतो ? ते संक्षेपमां जणावो. ६ ते भिक्षामां लाडु मळया, तथापि तेणे कुंभारना नींभाडे केम पटव्या हता ? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

जीवन, साधर्मी, अनुकंपादान, अनुमोदन, संयम, श्रावकधर्म, साधुधर्म, अभिग्रह, लब्धि, निकाचित, क्षीधा, क्षुधा.

पाठ ५७ मो.

प्रसन्नचंद्र राजर्षि–भाग १ लो.

मननी प्रबळ शक्ति.

दरेक जैन बंधुए पोताना हृदयमां शुभ ध्यान करवुं, क्यारे पण अशुभ ध्यान करवुं नहिं. शुभ ध्यान करवाथी प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी जेम केवळज्ञान प्राप्त थाय छे.

ए प्रसन्नचंद्र पोतनपुरना राजा सोमचंद्रनो कुमार हतो. तेनी मातानुं नाम धारिणी हतुं. एक वखते राणी धारिणीए राजा सोमचंद्रना मस्तकमां पळी जोइ तेने खेंची राजानए हाथमां आप्युं, ते जोतांज राजा सोमचंद्रने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेणे विचार्युं के, पळी आव्यां पहेलां संसार उपर

वैराग्य थाय ते उत्तम, पळी आव्यां पछी वैराग्य थाय ते मध्यम, अने पळी आव्यां होय तोपण वैराग्य उत्पन्न न थाय, ते अधम पुरुष कहेवाय छे. माटे मारे हवे विचारवुं जोइए. आवुं विचारी तेणे पोताना पुत्र प्रसन्नचंद्रने राज्य सोंप्युं, अने पोते तापसनी दीक्षा लइ चाली नीकळ्यो. तेनी राणी धारिणी पण व्रत लइने तेनी पाछळ गइ. सोमचंद्र तापस थइने वनमां वस्यो, ते पोतानी झुंपडीने महेल मानतो, इंगोरीयाना तेलना दीवाने माणेकना दीवा मानतो, श्रद्धाने अंतःपुर मानतो हतो, अने मृग तथा पक्षीओने पोतानो मोटो परिवार मानतो हतो.

आ अरसामां एवुं बन्युं के, राणी धारिणी वनमां गया पहेलां सगर्भा थइ हती, तेणीने ते वनमां एक पुत्रनो प्रसव थयो. आयुष्य पूरूं थवाथी प्रसवने रोगे ते राणी वनमांज मृत्यु पामी गइ. बीजा तापसो तेना बालपुत्रने वल्कलनां वस्त्रमां लपेटी राखवा लाग्या, आथी ते कुमारनुं नाम वल्कलचीरी पडयुं. राणी धारिणी मृत्यु पामी स्वर्गे गइ हती, त्यां तेणीए अवधिज्ञानथी पोताना पुत्रनी स्थिति जाणी, पुत्रना मोहने लीधे महिषी (भेंश)-नुं रूप लइ हमेशां तेने धवरावा आववा लागी. आथी ते बाळक उछरी मोटो थयो. वनमां उछरवाने लीधे ते लोकना व्यवहारथी तद्दन अज्ञात रह्यो हतो.

पाठ ५८ मो.

प्रसन्नचंद्र राजर्षि—भाग २ जो.

एक वखते कोइए प्रसन्नचंद्रने खबर आप्या के, तमारो नानो भाइ वनमां तेना पिता पासे छे, अने ते वल्कलचीरीना नामथी ओळखाय छे. प्रसन्नचंद्रे तेने तेडवाने माणसो मोकल्यां, पण ते कोइनाथी आव्यो नहिं. पछी तेणे अनेक जातनी सूचना आपी वेश्याओने मोकली वेश्याओ ते कार्य पार उतारवानी हिंमत आपी, सिंहकेशरीया पक्वान्न विगेरे लइ जे वनमां वल्कलचीरी हतो, त्यां आवी ते वननुं नाम सिंहपोत हतुं, तेमां वल्कलचीरी आश्रम करी तापसोनी साथे रहेतो हतो, त्यां कंद मूल विगेरे लइने जतो. ते तापस वेश्याओना जोवामां आव्यो. तत्काळ वेश्याओ तेनी पासे आवी. लोक व्यवहारथी अज्ञात एवा वल्कलचीरीए ते वेश्याओने जोइ अने तेमने ते कोइ तापस मानवा लाग्यो. तत्काळ तेणे कह्युं, ' सुंदर तापसो ! तमे कया देशमां रहोछो ? तमारो आश्रम क्यां छे ? अने तमे क्यां जाओछो ? वेश्याओ बोली—मुनिपुत्र ! अमे सरागीना तापस छीए. परमार्थ करवामां अमे प्रीतिवाळा छीए. पोतन नामना आश्रममांथी अहिं तमने जोवाने अने तमारी भक्ति करवाने आव्या छीए. कारण के, अतिथिनी सेवा करवाथी तपनी वृद्धि थाय छे, अने स्वर्ग तथा मोक्ष मळे छे. मुनिपुत्रे कह्युं,

ल्यो, त्यारे आ वननां फळ स्वीकारो. हुं तमने दान देवाथी कृतार्थ थाउं. वेश्याओए कह्युं, आ तमारा वननां फळ खावाथी अमने तृप्ति थाय नहीं. अमे तो अमारा आश्रमनां फळ खाइए, त्यारेज अमने तृप्ति थाय. मुनिकुमारे कह्युं, तमारां फळ केवां छे ? पछी वेश्याओए पेलो सिंहकेशरीआ पाक खवराव्यो. जे खावाथी वल्कलचीरीने घणोज स्वाद आव्यो. त्यार पछी बीली विगेरेनां फळ तेने बीलकुल गम्यां नहिं. तेम वळी वेश्याओए पोतानां अंगथी तेना शरीरनो स्पर्श कर्यो, वल्कलचीरीने तेमना शरीरनी कोमळतांथी विशेष आनंद आव्यो. तेमज वेश्याओए पोतानां स्तन विगेरे अंगनो स्पर्श करावी तेने विशेष मोहित कर्यो. वल्कलचीरीए पुछयुं, तापसो ! तमारा शरीरमां आवी कोमळता क्यांथी ? वेश्याओए कह्युं, अमारा आश्रमनां फळ खावाथी एवी कोमळता थाय छे. आ प्रमाणे ललचावी ते तापस कुमारने वेश्याओए पोताने वश करी लीधो. अने तापसनां उपकरणो संताडी छानोमानो आववानो संकेत कर्यो. ते प्रमाणे वेश्याओ वल्कलचीरीने लइ जती हती, त्यां सोमचंद्र राजर्षि जोवामां आव्या. तेमने जोतांज वेश्याओ नाशी गइ. तथापि वल्कलचीरी एकलो तेमनी पाछळ चाल्यो. मृगलांनी जेम एकला जतां वल्कलचीरीने कोइ रथवाळो मळ्यो. तेने वल्कलचीरीए पुछयुं के, मारे पोतन नामना वनमां जवुं छे, ते वन क्यां छे ? रथवाळे तेने पोताना रथमां बेसा-

यों. रथवाळो बळदने मारी हांकतो हतो, ते जोइ मुनि-
पुत्रे पुछ्युं के, आ मृगलांने वृथा शा माटे मारे छे ? र-
थवाळाना जाणवामां आव्युं के, आ कोइ तापस कुमार
तद्दन व्यवहारथी अज्ञात छे, एवुं जाणी तेणे पोतानी
पासेथी भाताना मोदक आप्या. ते खाइ वल्कलचीरीए
कह्युं के, आहा ! पोतन वननां सुंदर फळ पाछां फरी
अहिं मारी सामे आव्यां. तेम करतां ते पोतन नगर-
मां आव्यो. त्यां रथवाळाए तेने उतारी मुक्यो. वल्क-
लचीरी गाममां कोइने भाइ, कोइने तात, अने कोइने
गुरु एम, कहेतो भमतो हतो. तेवामां कोइ वेश्याए तेने जोयो.
तद्दन व्यवहारथी अज्ञात एवी तेनी स्थिति जोइ वेश्याए
विचार्युं के, मने जे जोषीए कहेल छे, ते मुजब आ पुरुष
छे. आम विचारी पछी तेने पोताना घरमां राख्यो,
अने अनुक्रमे पोतानी पुत्रीनी साथे तेनो विवाह कर्यो.

पाठ ५९ मो.

प्रसन्नचंद्र राजर्षि—भाग २ जो.

आ तरफ राजा प्रसन्नचंद्रने वेश्याओ मळी, अने
तेमणे जणाव्युं के, स्वामी ! अमे वल्कलचीरीने ललचावी
लावतां हतां, पण तमारा पिता सोमचंद्र राजर्षिने जोवा-
थी अमे नाशी आव्यां छीए. तथापि अमारी पछवाडे
वल्कलचीरी अहिं जरूर आवशे. वेश्यानां आवां वचन

सांभळी प्रसन्नचंद्रने शोक थयो के, में खोटुं कर्युं. मारा भाइने पिताथी विखुटो पाड्यो, तेम ते मने मळयो पण नहिं, तेवामां तेने खबर मळया के, वेश्याने घेर कोइ नवो विवाह थाय छे. तेनी तपास करवाने ते वेश्याओनेज मोकली. वेश्याओए वल्कलचीरीने ओळखी लीधो, अने ते खबर राजाने आप्या. राजाए वेश्याने बोलावीने पुछ्युं, एटले वेश्याए कह्युं के, आमां अमारो अपराध नथी, कोइ भविष्यवेत्ताए तेम करवा मने सूचव्युं छे. राजाए पोताना मंत्रीने पुछ्युं के, आ खोटुं थयुं. राजकुटुंबना मारा भाइनी साथे नीच कन्यानो विवाह थयो. हवे शुं करवुं ? मंत्रीए राजाने सलाह आपी के, वखते तेवी कन्या राजकुटुंबमां आवे छे, तेमां शी चिंता छे ? पछी वल्कलचीरीने तेनी स्त्री साथे हाथी उपर बेसारी दरबारमां लाववामां आव्यो, एक जुदा महेलमां राखवामां आव्यो, अने घणुं द्रव्य आपवामां आव्युं. पोताना भाइने व्यवहारमां प्रवीण करवाने राजा प्रसन्नचंद्रे सारा विद्वानोने पासे राखी, लेखनकळा, गणितविद्या, नीति अने काव्यकळामां वल्कलचीरीने घणो प्रवीण बनावी दीधो, अने लोकरुढिमां जाणीतो कर्यो. अनुक्रमे तेने केटलीएक राजकन्याओ परणावी, अने युवराज पद्वी आपी. तापस वृत्तिमांथी आवेला वल्कलचीरीनी लोकोमां सारी ख्याति थइ हती; कारण के, तेनी भ्रगुटीमां लक्ष्मी, भुजामां गौरी, जीभमां सरस्वती, अने हृदयमां दया वसती हती.

अहिं वनमां पोताना कुमारने नहिं जोवाथी सोमचंद्र राजर्षिने आंखोमां आंसुना प्रवाह चालता हता, तेनी शोक भरेली स्थिति सांभळी प्रसन्नचंद्र राजाए वल्कलचीरीनी तमाम हकीकत कहेवरावी, त्यारे ते शांत थया हता, अने ते खबर जाण्या पछी पारणुं कर्युं हतुं.

राजा प्रसन्नचंद्र वल्कलचीरीने साथे रही आनंद करतां बार वर्ष चाल्यां गयां. एक वखते प्रसन्नचंद्रनो बाळपुत्र रमतो रमतो पोताना काका वल्कलचीरीना खोळामां आवी बेठो, ते वखते तेने पोतानी बाल्यावस्था याद आवी, अने तेणे आ प्रमाणे मनमां विचार्युं, अहा ! हुं केवो अधम छुं ! मारा पिताना उपकारने तद्दन भुली गयो. मारो जन्म थया पछीज माता मृत्यु पामी हती, ते वखते मने पिताएज उछेरी मोटो कर्यो हतो, ते पिताना उपकारने हुं भुली गयो ए केवी वात ! तेमनी सेवा करवाने बदले हुं तेमनाथी जुदो पडी आ वैभव भोगवुं छुं, ए मने धिक्कार छे. माता पिताना उपकारने भुली जनारा पुत्रो नीच गणाय छे. आवुं विचारी तेणे पोताना भाइनी पासे पिताने वंदना करवा जवानी रजा लीधी. प्रसन्नचंद्र पण साथे आववा तैयार थयो. बंने भाइ वनमां पिताने मळवा आव्या. वल्कलचीरी अने प्रसन्नचंद्र पिताना चरणमां नमी पडया. राजर्षि सोमचंद्रने पुत्रोने जोइ हर्षनां आंसुं आव्यां. पछी वल्कलचीरीए प्रथम झुंपडीना एक भागमां पोताना तापसनां उपकरणो

संताडयां हतां, ते लेवा गयो. घणा दिवसनी तेना उपर रज पडेली हती, तेने खंखेरतां तेने पूर्वे करेली मुनिपणामां प्रतिलेहणा याद आवी, अने ते संबंधी विचार करतां जातिस्मरण ज्ञान थयुं के, में पूर्वे गुरुनी पासे जैन चारित्र ग्रहण कर्युं हतुं, ते पछी हुं देवता थयो, अने त्यांथी चवीने कर्मयोगे अहिं राजपुत्र थयो छुं. आ सर्व वैभव हाथीना कानना जेवो चपळ छे. आ जीवित विजळीना जेवुं छे, आ प्रमाणे भावना भावतां तेने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. तत्काळ देवताओए आवी तेने मुनिनो वेष आप्यो, अने एक सोनानुं कमळ उपजाव्युं, ते उपर वेसी वल्कलचीरीए सोमचंद्र राजर्षिने अने प्रसन्नचंद्र राजाने प्रतिबोध आप्यो. ते प्रतिबोधमां तेणे आ संसारने एक स्मशानरुपक आप्युं. आ संसाररुपी स्मशानमां मोहरूपी भूतनां टोळां भमे छे, राग अने द्वेषरुप भयंकर यक्षो नाचे छे, तेमां क्रोधरूपी तोफानी वेताळ रह्यो छे. लोभ नामे राक्षस क्षोभ करनारो छे, इंद्रियोरुप प्रेत आवेला छे, कषायरुप अग्निना भडका थाय छे, मिथ्यात्वरूप मोटां गीध पक्षी अने मायारुप शियाळ तेमां रहेलां छे." आवा प्रतिवोधथी तेणे पिता अने भाइ बंनेनां मन हरी लीधां हतां.

पाठ ६० मो.

प्रसन्नचंद्र राजर्षि—भाग ४ थो.

आ अरसामां श्री वीरप्रभु पोतनपुरना मनोहर उद्यानमां समोसर्या, ते खबर जाणी वल्कलचीरी केवळी पोताना भाइ अने पिताने तेमनी पासे लइ गया. प्रभुने वंदना करावी सोमचंद्रने तापसनी क्रिया छोडावी जैन मुनिनी क्रिया तथा व्यवहार बतावबाने एक स्थविर मुनिने सोंप्या. पछी वीर भगवंते देशना आपी. ते सांभळी प्रसन्नचंद्रने वैराग्य थयो. तेनी मनोवृत्तिमां आ संसारनी असारता जणाइ आवी. तरतज तेणे पोताना बाळ कुमारने राज्य सोंपी दीधुं. अने पोते वीर प्रभुनी पासे आवी दीक्षा लीधी. पोताना पितानी अने केवळी वल्कलचीरीनी स्थितिनुं चिंतवन करतां प्रसन्नचंद्र मुनि वीरप्रभुनी साथे विहार करवा लाग्या. अने अनुक्रमे ते दशपूर्व धारी थया. पछी ए महामुनि भगवंतनी आज्ञा लइ एक पर्वतनी गुफामां एकला जइ कायोत्सर्गे ध्यान करवा लाग्या.

एक वखते श्री वीरप्रभु वैभार पर्वत उपर समोसर्या, ए वात सांभळी श्रेणिकराजा तेमने वंदना करवा आवतो हतो, त्यां मार्गमां पर्वतनी गुफामां प्रसन्नचंद्र मुनिने ध्यान धरता जोया. तेमने वंदना करी राजा श्रेणिक वीर प्रभुनी पासे आव्यो, प्रभुने वांदी तेणे पुछ्युं

के, भगवन् ! मार्गमां में प्रसन्नचंद्र मुनिने ध्यान करता जोया छे. तेमनुं एकाग्र ध्यान जोइ मने आश्चर्य थयुं छे, अने वळी शंका पण थइ छे के, एवा ध्यानी मुनिनुं अत्यारे मृत्यु थाय तो, ते केवी गतिए जाय ?

प्रभु बोल्या–' ते सातमी नारकीए जाय. श्रेणिक विचारमां पड्यो के, आवा ध्यानी मुनिने नारकिनी गति केम थावी जोइए ? माटे फरीथी पुछुं. पछी तेणे फरीवार पुछ्युं, एटले प्रभुए कह्युं, ' छठी नारकीए जाय.' तेवी रीते विचारीने श्रेणिके त्रीजी वार पुछ्युं, त्यारे भगवंते कह्युं के, पांचमी नारकीए जाय, एम पुछतां छेवटे प्रभुए कह्युं के, ते ' सर्वार्थ सिद्धि विमाने जाय. ' आथी पण श्रेणिकने शंका थइ, पछी तेणे प्रभुने विनंति करी के, आम शंका पडे तेवुं केम कहो छो ? तेवामां तो दुंदुभि वाजानो नाद सांभळवामां आव्यो. एटले श्रेणिके पुछ्युं, ' आ नाद शेनो थयो ? प्रभु बोल्या–प्रसन्नचंद्र राजर्षिने केवळज्ञान थयुं छे, तेथी देवताओ तेनो महोत्सव करे छे. श्रेणिक कह्युं, भगवन् ! आपे प्रथम कहेलां वचनोमां मने शंका रहे छे, तो आप खुलासो करो. प्रभु बोल्या–राजा ! जे में कह्युं हतुं, ते सत्यज छे. कारण के, जीवने मननुं परिणाम विषम छे. कारण के, तें ज्यारे ऋषिने वांद्या हता, त्यारे एना हृदयनो शुभ परिणाम हतो, तारा गया पछी तारो सुमुख नामनो एक सेवक आव्यो हतो, तेणे कह्युं हतुं के, " राज्यनो त्याग करी व्रत ग्रहण करनारा

आ मुनिने धन्य छे." ते सांभळीने पण तेमना परिणाम सारा रह्या हता, ते पछी तारा दुर्मुख नामना सेवके आवी कह्युं के, "आ पाखंडी व्रत लइने बेठो छे, एने बहु पाप लागशे, कारण के एणे पोताना बाळपुत्रने राज्य सोंप्युं ते अनुचित कर्युं छे. चंपानगरीनो राजा दधिवाहन तेना नगरने घेरो घालीने पडयो छे. ते क्षणमां तेने मारीने राज्य लइ लेशे." दुर्मुखनां आवां वचन सांभळी प्रसन्नचंद्र राजर्षि ते शुभ ध्यानथी चलित थयो, अने पोताना मनमां पुत्रना शत्रु दधिवाहननी साथे युद्ध करवा लाग्यो. आवा अशुभ ध्यानथी जो ते मृत्यु पाम्यो होत, तो जरुर सातमी नारकीए जात. ज्यारे तें मने बीजी वार पुछ्युं, त्यारे तेने मानसिक युद्ध करतां सर्व शस्त्रो खुटी गया पछी शत्रुने मारवाने पोताना मस्तक उपरथी मुगट लेवाने हाथ फेरव्यो. त्यां मस्तक मुंडेलुं छे, एम जाण्युं, एटले तेणे विचार्युं के, 'में वृथा युद्ध कर्युं, हुं कोण छुं? हुं एक यति छुं, मारे तो सर्व संगनो त्याग छे. यतिने शत्रु अने मित्र उपर सरखी दृष्टि होय, आवुं शुभ ध्यान करतो करतो ते अनुक्रमे सातमी नारकीथी उतरतां उतरतां सौधर्म देवलोकनी गति प्राप्त करी, अने पछी सर्वार्थ सिद्ध विमाननी गति प्राप्त करी हती, एथी में तेने ए प्रमाणे कह्युं हतुं. हमणां तेने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं छे, अने तेना महोत्सवनां आ दुंदुभि वाजां संभळाय छे.

आ वृत्तांत सांभळी श्रेणिक राजाए जइने प्रसन्न-चंद्र केवळीने वंदन कर्युं, अने त्यार पछी श्रेणिक पोताने स्थाने चाल्यो गयो. प्रसन्नचंद्र राजर्षि अनेक भव्य जीवोने प्रतिबोध आपी आयुष्यनो क्षय थतां मुक्तिने प्राप्त थया हता.

सारांश प्रश्नो.

१ प्रसन्नचंद्र राजर्षि कोण हता ? २ तेमनां माता पितानां शुं नाम हतां ? ३ सोमचंद्रने वैराग्य थवानुं कारण शुं बन्युं हतुं ? ४ वैराग्य उपर उत्तम, मध्यम अने अधम पुरुष कोण कोण कहेवाय ? ५ सोमचंद्र तापस दीक्षा लइने वनमां केम वर्त्ततो हतो ? ६ तेनी राणीए केवुं व्रत लीधुं हतुं ? ७ वल्कलचीरी ए नाम केम पड्युं ? ८ राणी धारिणीए वल्कलचीरीने उछेरवामां शुं कर्युं हतुं ? ९ वल्कलचीरी केवी स्थितिमां रहेतो हतो ? १० प्रसन्न-चंद्रे वल्कलचीरीने बोलाववा शो उपाय कर्यो हतो ? ११ वल्कलचीरीने केवी रीते ललचावी, पोतनपुरमां लाववामां आव्यो हतो ? १२ वल्कलचीरी पोतनपुरमां आवी कोने त्यां रह्यो ? अने तेनी शी स्थिति थइ ? ते कहो. १३ वल्कलचीरी अने प्रसन्नचंद्रनो केवी रीते मेळाप थयो ? १४ वल्कलचीरीने लोक व्यवहारनुं ज्ञान आपवाने प्रसन्न-चंद्रे शुं कर्युं हतुं ? १५ वल्कलचीरी गया पछी सोमचंद्रे

वनमां शुं कर्युं ? १६ वल्कलचीरीने पूर्वनुं जाति स्मरण ज्ञान क्यारे थयुं हतुं ? १७ वल्कलचीरीने जाति स्मरण ज्ञान थयुं, त्यारे तेणे शो विचार कर्यो हतो ? १८ वल्कलचीरीने केवळज्ञान केवी रीते थयुं हतुं ? १९ वल्कलचीरीए पोताना पिता अने भाइने केवो बोध आप्यो हतो ? तेनो सार कहो. २० सोमचंद्रे तापसनी क्रिया केवी रीते छोडी ? अने ते कोणे छोडावी ? २१ श्री वीरप्रभु अने श्रेणिकनी वच्चे प्रसन्नचंद्र संबंधी शी वातचित थइ ? ते संक्षेपमां कहो. २२ प्रसन्नचंद्रने केवळज्ञान थतां शुं बन्युं हतुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सगर्भा, वल्कलवस्त्र, महिषी, लोक व्यवहार, सिंहकेशरीआ पक्वान्न, यति, लेखनकळा, काव्यकळा, रुपक, कपाय, दश पूर्व धारी, मानसिक युद्ध.

पाठ ६१ मो.

मेतार्य मुनि–भाग १ लो.

दरेक श्रावके मन, वचन, अने कायाथी जीव रक्षा करवी जोइए. मनवडे जीव रक्षा करवाथी मेतार्य मुनि केवळज्ञान पामी मोक्षे गया हता. ए मेतार्य मुनि राजगृ-

ह नगरमां कोइ चांडाळनी स्त्रीना उदरथी जन्म्या हता, अने एक शेठने घेर उछरी मोटा थया हता, मेतार्यनी माता कोइ शेठने घेर कामकाज करती हती, तेने शेठनी स्त्रीनी साथे प्रीति बंधाणी हती. शेठनी स्त्रीने कोइ पण संतान जीवतुं नहिं, तेथी तेणीए पोतानी सखी चंडाळनी स्त्रीनी साथे गर्भनो अदलोबदलो कर्यो हतो. शेठनी स्त्रीने जे गर्भ हतो, ते चांडाळने घेर गयो हतो. अने ज्यारे ते गर्भ हतो, त्यारे शेठाणीने मांस खावानो दोहद उत्पन्न थयो हतो.

मेतार्य मुनिना पूर्व भवनी वात आ प्रमाणे छे. साकेतपुरमां चंद्रावतंस नामे राजा हतो, तेने सुदर्शना अने प्रियदर्शना नामे बे राणीओ हती. सुदर्शनाना उदरथी सागरचंद्र अने मुनिचंद्र नामना बे पुत्रो थया हता. अने प्रियदर्शनाना उदरथी गुणचंद्र अने बाळचंद्र नामे बे पुत्रो थया हता. राजा चंद्रावतंस धर्मी हतो. एक वखते तेणे संध्याकाळे कायोत्सर्ग कर्यो. तेमां एवो नियम लीधो के, " ज्यांसुधी दीवो ओलवाइ न जाय, त्यांसुधी कायोत्सर्ग पारवो नहिं. "आ नियम तेनी दासीना जाणवामां न आववाथी तेणीए दीवामां सवार सुधी तेल पूर्यां कर्युं. ज्यारे सवार पड्युं एटले दीवो ओलवायो, त्यारे तेणे पोतानो कायोत्सर्ग पूर्ण कर्यो. अने आयुष्य पुरुं थतां ते काळधर्मने पामी गयो. अने कायोत्सर्गना पुण्यथी स्वर्गे गयो.

तेना मृत्यु पछी सागरचंद्र साकेतपुरनो राजा थयो. एक वखते तेणे पोतानी ओरमान माता प्रियदर्शनाने जणाव्युं के, मने राज्य लक्ष्मीनी इच्छा थती नथी, माटे आ राज्य मारा नाना भाइ गुणचंद्रने सोंपी दउं. अने हुं दीक्षा लइ जीवनने कृतार्थ करुं. प्रियदर्शनाए ते वखते तेम करवाने ना पाडी. पछी केटलोक समय गया पछी राज्यनी समृद्धि चडीआती जोइ तेणीना मनमां इर्ष्या उत्पन्न थइ.

एक वखते सागरचंद्र बाहेर क्रीडा करवा गयो हतो, त्यारे सुदर्शनाए एक दासीनी साथे तेने माटे लाडु मोकलाव्या. मार्गे सुदर्शनाए ते दासीने मळी ते लाडुमां झेर भेळव्युं. दासी झेरवाळा लाडु लइ सागरचंद्रनी पासे आवी. सागरचंद्रनी साथे प्रियदर्शनाना बे पुत्रो हता. राजाए ते मोदक प्रीतिथी पोताना नाना भाइओने आप्या, ते खातांज ते बंने अचेतन थइ पडया. ते जोतां सागरचंद्रे विचार्युं के, "माता पुत्रने झेर आपे ए केम बने ?" पछी तेणे सुवर्णा नामनी औषधी मंगावी. तेनाथी तेओने साजा कर्या, पछी दासी पासेथी बधी हकीकत जाणी तेणे पोतानी ओरमान माताने धिक्कार आप्यो. अने तेनी कुबुद्धिने माटे विचार करतां तेने वैराग्य उत्पन्न थयो. त्यार पछी गुणचंद्रने राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी. सागरचंद्र मुनि थइ अगीयार अंगना पारगामी थया हता.

पाठ ६२ मो.

मेतार्य मुनि–भाग २ जो.

एक वखते सागरचंद्रने मुनिओनी मारफत खबर मळया के, पोतानो भाइ मुनिचंद्र जे अवंति नगरीमां राजा छे, तेनो पाखंडी पुत्र सौवस्तिक सुतयुग नामना पुरोहितना पुत्रनी साथे मळी, जैन मुनिओने घणुं दुःख आपे छे. आ सांभळी सागरचंद्र मुनि अवंति नगरीमां आव्या. त्यां बीजा मुनिओए वार्या छतां, तेओ दरबारमां गया. त्यां सौवस्तिक अने सुतयुग बंने तेमनी मश्करी करवा लाग्या. छेवटे तेओए मुनिने कह्युं के, तमे अमारी साथे रमो. मुनिए कह्युं, हा. चालो रमीए. पछी रमतां रमतां मुनि तेमने मर्मस्थळमां घा करी, अंगना सांधा उतारी चाल्या गया. अने बाहेर उद्यानमां जइ कायोत्सर्ग ध्याने रह्या.

राजाए बंनेने रोता जोइ, मुनिने शिक्षा करवा माटे तेनी शोध करवा सेवकोने मोकल्या. मुनिने ध्यान करता जोइ सेवकोए राजाने खबर आप्या. राजा पोते त्यां गयो, अने मुनिने कह्युं के, आवुं पाप केम कर्युं ? त्यारे मुनिए जणाव्युं के, “ मोटा कुळमां जन्मी तमे साधुओनी उपर अन्याय केम करो छो ? आथी राजाने लज्जा आवी. पछी मुनिए तेमने बोध आप्यो, अने जणाव्युं के, साधुनी हेलना करवाथी नरक गति

मळे छे, अने आराधन करवाथी मोक्ष मळे छे. आथी राजाए कह्युं के, स्वामी ! ते कुमार अणसमजु छे, माटे तेनो अपराध माफ करो, अने तेनी पीडा मटाडो. मुनि बोल्या–जो तमारो कुमार संयम ग्रहण करे तो, तेने छोडी दउं, नहिं तो भले तेओ पोते करेलां पाप कर्मनुं फळ अनुभवे." पछी मुनिचंद्र सागरचंद्र मुनिने लइ तेओनी आगळ गयो, अने पोताना पुत्रने कह्युं के, पुत्र ! आ मुनि तारा काका थाय छे, तेमने वंदना करी तेमनी आगळ क्षमा माग. जो तमे बंने दीक्षा ल्यो तो, तमने ते पीडामांथी मुक्त करे. तेमणे ते वात पीडाने लइ स्वीकारी. पछी सागरचंद्रे तेमने दीक्षा आपी. सौवस्तिक सारी रीते चारित्र पाळतो, अने पुरोहितनो पुत्र सुतयुग ब्राह्मण होवाथी बराबर चारित्र पाळतो नहिं. " जैन मुनिमां मलिनता छे, " एम कही, ते दुगंछा करतो हतो. तेओ बंने मृत्यु पामी स्वर्गे गया. त्यां तेमणे परस्पर ठराव कर्यो के, जे पहेलो चवीने मनुष्य थाय, तेने बीजो देवतारुपे धर्मनो बोध आपे.

पाठ ६३ मो.

मेतार्य मुनि–भाग २ जो.

प्रथम पुरोहितनो सुतयुग स्वर्गमांथी चवीने राजगृह नगरमां चांडाळनी स्त्रीना उदरमां आव्यो. ते मेतार्य

थयो, अने बीजो ते पछी शेठनी स्त्रीना उदरमां आव्यो. ते पुत्रने चंडाळनी स्त्रीने आप्यो हतो, ते थोडा दिवसमां मृत्यु पामी गयो हतो. मेतार्य ज्यारे मोटो थयो, त्यारे तेना पिता शेठे तेने सारी केळवणी आपी हती. ज्यारे ते देवतामां हतो, त्यारे करेला ठराव प्रमाणे ते देव मेतार्यने बोध आपवा आव्यो. तथापि मेतार्य समज्यो नहतो. अनुक्रमे शेठे मेतार्यनो संबंध कोइ कुलीन आठ कन्याओ साथे कर्यो. लग्नने दिवसे मेतार्य तावदानमां बेसी आठ कन्याओने परणवा चाल्यो, ते वखते पेला देवताए चंडाळना शरीरमां प्रवेश कर्यो. मेतार्यने तावदानमां बेसी जतो जोइ चांडाळे पोतानी स्त्रीने कह्युं के, हे स्त्री ! जो आपणो पुत्र जीवतो होत तो, हुं तेनो पण विवाह आ प्रमाणे करत. ते वखते चंडाळ स्त्रीए पोतानी बधी हकीकत कही आपी. आथी चंडाळ क्रोध करी मेतार्यना तावदान पासे आव्यो, अने तेने कह्युं के, " पुत्र ! तुं चंडाळना कुळमां उत्पन्न थइने आवी कुळवान्नी कन्याओ केम परणे छे ? तुं आपणा कुळनी कन्या परण. " आ प्रमाणे कही तेने पोताने घेर लइ गयो. त्यां पेला देवताए प्रत्यक्ष थइ कह्युं के, तने प्रतिबोध आपवाने आ काम में कर्युं हतुं. हवे तुं प्रतिबोध पाम. मेतार्ये कह्युं, तें मारा हितने खातर कर्युं, ते ठीक कर्युं, पण मने जातिनुं कलंक लगाडयुं, ते ठीक न थयुं. जो तुं मारुं कलंक उतारीश तो, हुं बार वर्ष सुधी भोग भोगवीने

तारा कहेवा प्रमाणे करीश. पछी देवता उंची जातना रत्नना ढगला आपे एवो एक बोकडो तेने आपी काइक विद्या बतावी स्वर्गे चाल्यो गयो.

मेतार्यनो पिता चंडाळ ते रत्ननो थाळ भरी, रोज राजाने भेट करतो, अने तेने माटे कन्यानी मागणी करतो हतो, तथापि राजाए तेने कन्या आपी नहीं. आ वखते राजगृह नगरमां अभयकुमार मंत्री हतो, ते मेतार्यने कन्या आपवानी विरुद्ध हतो, तेणे मेतार्यना पिताने बाहेर काढी मुकवानी धमकी आपी कह्युं के, आ रत्नो तुं क्यांथी लावे छे? ते सत्य कहे, तो तने अभय आपीश. चंडाळे मंत्रीने बोकडानी हकीकत कीधी. ते वात राजाने जणावतां राजाए ते बोकडो लइ लीधो. राजाने घेर बोकडे रत्न आप्यां नहीं, पण उलटो दुर्गंध करवा लाग्यो.

आथी राजा अने मंत्रीए विचार्युं के, आ मेतार्यने कोइ देवनी सहाय छे, माटे ते उत्तम पुरूष होवो जोइए, पछी तेनी परीक्षा करवा मांडी. ते वखते महावीर स्वामी वैभार गिरिपर आवेला हता, त्यांथी आववानो मार्ग घणो विकट हतो, तेने सरखो करवाने मेतार्यने कह्युं, एटले तेणे ते मार्ग सरखो करी दीधो. पछी राजगृहीने फरतो मोटो किल्लो अने मोटी खाइ एक रात्रीमां करवानुं कह्युं, अने तेम करवाथी राजकन्या मळे एम जणाव्युं. पछी मेतार्ये तेम कर्युं, एटले अभयकुमारना कहेवाथी श्रेणिके तेने राजपुत्री आपी, अने एक सुंदर घर आप्युं. तेमां मेतार्ये बार वर्ष

सुधी भोग भोगव्यो, तेने एक पुत्र थयो. पछी देवताना प्रतिबोधथी मेतार्ये गुरुनी पासे व्रत ग्रहण कर्युं हतुं.

पाठ ६४ मो.

मेतार्य मुनि–भाग ४ थो.

मेतार्य मुनि एक वखते कोइ सोनीने घेर भिक्षा लेवा गया हता, ते सोनी श्रेणिक राजाने जिन पूजा करवामां सुवर्णना जव बनावतो हतो. मुनिने जोइ तेमने वोहोराववा माटे ते घरमां आहार लेवा गयो, त्यां क्रौंच पक्षी आवी तेना सुवर्णना जव चणी गयुं, अने चाल्युं गयुं. सोनीए बाहेर आवी जोयुं, त्यां जव जोया नहीं, एटले मुनिने पुछयुं. "आ माणस क्रौंच पक्षीने वखते मारे" एवुं धारी मुनि कांइ बोल्या नहीं. तेथी सोनीए कह्युं के, अरे मुनि! तुं पोतेज चोर छुं. आवुं कही तेणे मुनिना मस्तकने लीली वाधरीथी मजबुतपणे वींटी लीधुं. एटले मुनिनी आखोमांथी डोळा नीकळी पडया, तत्काळ जीवदयानुं चिंतवन थयुं, अने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. तेज समये आयुष्य पूर्ण थयुं, अने तेओ मोक्षे गया.

पेलुं क्रौंचपक्षी मुनि पडयाना भयथी त्यां आव्युं, अने गळामांथी सुवर्णना जव बाहेर काढी नाख्या. आथी सोनीने राजाना जमाइ थयेला ते मुनिनो घात करवाथी

भय लाग्यो, अने तेणे कुटुंब साथे मुनिनो वेष पहेरी लीधो. राजाने ते खबर मळया, एटले तेणे सोनीने शिक्षा करी नहीं, पण कहेवराव्युं के, जो सोनी यति वेषनो त्याग करशे तो, शिक्षा पामशे. पछी सोनीए श्री वीर भगवाननी पासे सह कुटुंब विधिथी दीक्षा लीधी, अने अनुक्रमे मोक्ष सुख संपादन कर्युं.

लाजथी, भयथी, तर्कथी, विधिथी, अहंकारथी, स्नेहथी, लोभथी, अभिमानथी, कीर्त्तिथी, दुःखथी, कौतुकथी, विस्मयथी, कुळाचारथी अने वैराग्यथी जे माणस निर्मळ धर्म आचरे, ते पण मोटुं फळ मेळवे छे.

सारांश प्रश्नो.

१ मेतार्य मुनि जाते कोण हता ? २ मेतार्य मुनिनो जन्म कोने घेर थयो हतो ? ३ मेतार्य पूर्व भवे कोण हता ? ४ चंद्रावतंस राजा कया नगरमां थयो हतो ? ५ तेने केटली राणीओ हती ? ६ सागरचंद्रने कोणे झेर आप्युं हतुं ? ते वृत्तांत संक्षेपथी कहो. ७ ते झेरथी कोना उपर असर थइ हती ? ८ सागरचंद्रे कोने राज्य आपी दीक्षा लीधी हती ? ९ अवंति नगरीनुं राज्य कोने मळ्युं हतुं ? १० सागरचंद्र अवंतिमां शा माटे गयो हतो ? ११ सागरचंद्रे अवंति नगरीमां जइने शुं कर्युं ? १२ मेतार्यने बोध आपवा कोण आव्यो हतो ?

अने ते बोध आपवानो संकेत केवी रीते हतो ? १३ मेतार्यने विवाह थतां शुं थयुं हतुं ? १४ मेतार्यना विवाह वखते जे बन्युं हतुं, ते कोणे कर्युं हतुं ? १५ मेतार्यनुं कलंक दूर करवाने देवताने शुं आप्युं हतुं ? १६ मेतार्यनी परीक्षा करवाने अभयकुमारे शुं कर्युं हतुं ? १७ मेतार्ये केटलां वर्ष भोग भोगवी व्रत लीधुं हतुं ? १८ मेतार्य मुनि थया पछी कोने घेर भिक्षा लेवा गया हता ? १९ भिक्षा लेतां तेमने शुं बन्युं हतुं ? २० मेतार्यने शुं करतां केवळज्ञान थइ आव्युं हतु ? २१ मेतार्यना घात करनारने शुं करवुं पडयुं हतुं ? २२ केटला प्रकारे धर्म आचरवाथी मोटुं फळ मळे छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

दोहद, सुवर्णऔषधी, अगीयार अंग, काळधर्म, मर्मस्थळ, हेलना, दुगंछा, वैभारगिरि, क्रौंचपक्षी.

पाठ ६५ मो.

करकंडू–भाग १ लो.

आ महात्मा करकंडू चंपापुरी नगरीमां थया हता, तेमना पितानुं नाम दधिवाहन अने मातानुं नाम पद्मावती हतुं, तेमनो जन्म राजकुळमां थया छतां, तेओ को-

इ चंडाळने घेर उछर्या हता. ते वृत्तांत एवो छे के, ज्यारे करकंडू तेनी माता पद्मावतीना गर्भमां हता, त्यारे माताने राजानो पोशाक पेहेरी राजा पासे छत्र धरावी हाथी उपर बेसी क्रीडा करवा जवानो दोहद थयो हतो, ते दोहद राजाए पूरतां ते हाथी मदोन्मत्त थइ वनमां नाशी गयो हतो. मार्गमां राजा एक वडना वृक्षनी शाखा साथे वळगी रह्यो. अने एकली राणीने लइ हाथी दूर नाशी गयो हतो. आगल जातां कोइ सरोवरमां तृषातुर हाथी उभो रह्यो, त्यारे पद्मावती मांडमांड नीचे उतरी शकी हती, ते ठेकाणे कोइ पण माणस न होवाथी तेणीए चार शरण ग्रहण कर्यां. अने ते आगार सहित अनशन करी वारंवार पंच परमेष्टीनुं स्मरण करवा लागी. तेवामां कोइ तापस तेने मळयो, तेणे धीरज आपी. पद्मावतीने दंतपुरमां थइ चंपानगरीए जवानो मार्ग बताव्यो. पद्मावती दंतपुरमां आवी, त्यां कोइ साध्वीने मळी. साध्वीए तेने उपदेश आप्यो. उपदेश सांभळी पद्मावतीने वैराग्य थयो. अने तेथी तेणीए साध्वीनी पासे दीक्षा लीधी. पण पोते सगर्भा छे, ए वात साध्वीने जणावी नहिं. केटलेक दिवसे गर्भनी खबर पडवाथी साध्वीए धर्मनी निंदा थवाना भयथी तेणीने गुप्त राखवाने कह्युं. समय आवतां पद्मावती साध्वीने पुत्रनो प्रसव थयो. ते गुप्त रीते बाळ पुत्रने रत्नकंबल साथे वींटाळी नामथी अंकित एवी मुद्रिका पेहेरावी श्मशानमां मुकी आवी. कोइ चंडाळ श्मशानमां आव्यो,

ते ए पुत्रने जोइ घेर लाव्यो. अने पोताने कांइ संतान नहतुं, तेथी ते स्त्रीने सोंप्यो. अनुक्रमे बाळक चंडाळने घेर मोटो थयो. तेनो कर (हाथ) मां घणी कंडू (खुजली) आवती, त्यारे ते हाथने खजवाळतो. एथी लोको तेने करकंडू कही बोलावता. त्यारथी तेनुं नाम करकंडू एवुं पडयुं. ज्यारे तेनुं वय छ वर्षनुं थयुं, त्यारे चक्रवर्तीनां चिन्ह जोवामां आवतां हतां.

एक वखते कोइ बे मुनिओ आवी चडया. तेमणे एक वांसनी जाळी जोइने कह्युं के, जे पुरुष आ वांसना पर्वने मूळथी चार आंगळ छोडीने ले, ते राजा थाय. आ वचन करकंडू अने कोइ ब्राह्मण बंने ए सांभळ्युं. ब्राह्मणे ते वांसने लीधो, एटले करकंडूए ते पोतानो छे, एम जणाव्युं. ते विषे राजानी आगळ फरीयाद थइ. राजाए ते वांस करकंडूने सोंपाव्यो, अने ज्यारे राज्य मळे, त्यारे एक गाम ब्राह्मणने आपवुं, एवो ठराव कर्यो. आ ठरावथी नाराज थइ ब्राह्मणे करकंडूने मारी नांखवानो विचार कर्यो. ते खबर जाणी चंडाळ पोताना कुटुंबने लइ कंचनपुरमां चाल्यो गयो. ते वखते कंचनपुरमां राजा अपुत्र मृत्यु पामेल, तेथी मंत्रीओ पांच दिव्य करी कोइने गादीनसीन करवा प्रयत्न करता हता. ते दिव्यथी आ करकंडूने राजा ठराववामां आव्यो. ज्यारे मोटा उत्सवथी तेने कंचनपुरना सिंहासन उपर बेसारवा लइ जता हता, त्यारे केटलाएक ब्रा-

ह्मणोए तेने ओळखीने कह्युं के, ते चंडाळ छे. तेने राज्यनो अधिकार नथी. पछी ब्राह्मणो क्रोध करी तेने शिक्षा करवा तैयार थया, त्यां देवताए आकाशमांथी अग्निना तणखा नाख्या, आथी भय पामी ब्राह्मणोए तेने राजा तरीके कबुल कर्यो, अने तेनी स्तुति करी. पछी करकंडूए ब्राह्मणोनी पासे बळात्कारे बीजा केटलाएक चांडाळोने संस्कार अपावी 'जनंगम' नामना ब्राह्मण कराव्या. पछी करकंडूने उत्सव पूर्वक नगरमां प्रवेश करावी राज्याभिषेक करवामां आव्यो.

पाठ ६६ मो.

करकंडू-भाग २ जो.

आ अरसामां जेने गाम आपवाने कहेलुं हतुं, ते ब्राह्मण करकंडूनी पासे गाम मागवा आव्यो. करकंडूए तेने चंपापुरीमां राजा दधिवाहननी पासे मोकल्यो, अने कह्युं के, त्यां जइ मारा नामथी कहेजे, एटले तने गाम मळशे. ते ब्राह्मण दधिवाहन पासे गयो, अने तेणे गाम माग्युं, एथी दधिवाहनने करकंडू उपर क्रोध आव्यो. तेणे ब्राह्मणने कह्युं के, ते चंडाल जातिना करकंडूने मारीने पछी तने गाम आपीश. आ वात ब्राह्मणे करकंडूने कही, एटले करकंडू क्रोध करी दधिवाहन उपर चडी आव्यो. राजा दधिवाहन पण सामो आव्यो.

साध्वी पद्मावतीने आ वातनी खवर पडी एटले ते घणां जीवना संहारवाळुं पिता पुत्रनुं युद्ध अटकाववाने त्यां आवी.

साध्वी प्रथम करकंडूने मळी अने कह्युं के, हुं तारी माता थाउंछुं. अने आ युद्ध करनार तारा पिता थाय छे. तेनी खात्री माटे तारा नामनी मुद्रिका वांचीजो. करकंडूए तेम कर्युं. एटले तेने खात्री थइ गइ. पछी साध्वी राजा दधिवाहनने मळी, अने राजाने पोतानो वृत्तांत जणाव्यो. राजाने खात्री थतां ते पोताना पुत्र करकंडूने मळवा आव्यो. बंने पिता पुत्रनो लोकोना हर्षनी साथे मेळाप थयो. राजा दधिवाहनने वैराग्य थवाथी तेणे करकंडूने राज्य आपी दीक्षा लीधी. हवे करकंडू चंपापुरी अने कंचनपुर बंने राज्यनो स्वामी थयो. अने आखो कलिंक देश तेना तावामां आव्यो.

राजा करकंडूने गायोनां टोळा राखवानो वधारे शोख हतो. तेथी तेनी पासे एक बळवान् सांढ रहेतो हतो. घणा सांढोनी साथे ते लडाइ करतो, अने सर्वने हरावी देतो हतो. एक वखते आवो बळवान् सांढ जीर्णथयेलो जोयो, आथी करकंडूने अफसोस थयो, पण तेनी साथेज तेनामां वैराग्य भाव प्रगट थयो. तेणे विचार्युं के, आवुं बळवान् प्राणी पण क्षणमां जीर्णता वश थइ गयुं, तो बीजानी शी वात ? अहा ! आ भयंकर काळ, चेतन अने अचेतन लोकने पोताना मोटा उदरमां गळी

जाय छे. माटे आ कुटुंब, स्त्री, देह, अने धन विगेरे सर्व अनित्य छे. आवो विचार करतां जाति स्मरण ज्ञान थइ आव्युं, अने पोतानो पूर्व भव याद आव्यो. तत्काळ देवताए आवी तेने मुनिनो वेष आप्यो. महात्मा करकंडू शुद्ध चारित्र पाळी मोक्षने प्राप्त थया. अने ते प्रत्येक बुद्ध कहेवाया. जे अमुक वस्तुने जोवाथी बोध पामी चारित्र ले, ते प्रत्येक बुद्ध कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ करकंडू कोण हता ? अने क्यां थया हता ? २ तेमनां माता पितानां नाम शुं हतां ? ३ करकंडू क्यां उछर्या हता ? ४ करकंडूनी माताने केवो दोहद थयो हतो ? ५ करकंडूनी माताए शुं कर्युं हतुं ? ६ करकंडू चंडाळने घेर शी रीते आव्या हता ? ७ करकंडू ए नाम केवी रीते पड्युं हतुं ? ८ करकंडूनो पिता कंचनपुरमां रहेवा शा माटे गयो हतो ? ९ कंचनपुरमां करकंडूने शो लाभ थयो हतो ? १० करकंडू अने ब्राह्मणोनी वच्चे शुं थयुं हतुं ? ११ दधिवाहन अने करकंडूनी वच्चे थवानुं युद्ध कोणे शमावी दीधुं ? १२ करकंडूने वैराग्य थवानुं शुं कारण बन्युं हतुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

आगार सहित अनशन, चार शरण, मुद्रिका, रत्न-कंबल, कंडू, चेतन, अचेतन, अनित्य, जातिस्मरण, प्रत्येक बुद्ध.

पाठ ६७ मो.

चिलाती पुत्र–भाग १ लो.

चिलाती पुत्र दासी पुत्र हतो. तेनो जन्म राजगृह-नगरमां थयो हतो, तेनी मातानुं नाम चिलाती हतुं. चिलाती दासी धन नामना एक सार्थवाहने घेर रहेती हती. धनशेठ ए राजगृह नगरनो प्रख्यात गृहस्थ हतो, तेनी स्त्रीनुं नाम सुभद्रा हतुं, ते सुभद्राना उदरथी पांच पुत्रो अने सुसुमा नामे छट्टी पुत्री थइ हती. ते सुसुमा-नी रक्षा माटे धनशेठे चिलाती पुत्रने राख्यो हतो. सुसुमा ज्यारे रोती होय, त्यारे चिलाती पुत्र तेणीना गुह्य अंग-मां आंगळीनो स्पर्श करतो, एटले ते पुत्री सुख पामीने रोती बंध थती हती.

चिलाती पुत्र पूर्वे यज्ञदेव नामे ब्राह्मण हतो. यज्ञ-देव क्षिति प्रतिष्टित नगरमां रहेतो हतो, अने ते यज्ञनी क्रियाने बहु मान आपतो हतो. हमेशां ते जैन मतनी

निंदा करतो हतो. एक वखते कोइ बाळसाधु तेने पोताना गुरुनी पासे लइ गया, त्यां यज्ञदेवे प्रतिज्ञा करी के, "जो हुं हारी जाउं तो, जैननी दीक्षा लउं" यज्ञदेवने जैन मुनिए क्षण वारमां हरावी दीधो. अने अंते तेने जैननी दीक्षा लेवी पडी; तथापि ते शुद्ध चारित्र पाळतो नहतो. एक वखते शासन देवीना कहेवाथी तेना हृदयमां जैन धर्मनी असर थइ, एटले ते शुद्ध चारित्र पाळवा लाग्यो. ते यज्ञदेवने श्रीमती नामे स्त्री हती, तेणे यज्ञदेवने वश करवानुं कामण कर्युं, अने तेथी ते शरीरे दुर्बळ थइ थोडा दिवसमां मृत्यु पामी गयो. तेना दुःखथी वैराग्य पामी श्रीमतीए जैन दीक्षा लीधी, अनें ते पण गुरु पासे कामणनी आलोयणा कर्या वगर मृत्यु पामीने स्वर्गे गइ. ते यज्ञदेवनो जीव चिलाती दासीने पेटे अवतरी आ चिलाती पुत्र थयो हतो. अने यज्ञदेवनी स्त्री श्रीमती मृत्यु पामीने धन सार्थवाहने घेर तेनी पुत्री सुसुमा थइ अवतरी हती.

चिलाती पुत्र सुसुमाने रोवा वखते आवी खराब चेष्टा करे छे, ए वात धनशेठना जाणवामां आवी, तत्काळ तेणे चिलाती पुत्रने घरमांथी काढी मुकयो. अहिंथी रजा मळी, एटले ते सिंहगुहा नामनी भिल लोकोनी पल्लीमां गयो. ते वखते ते पल्लीनो स्वामी मृत्यु पामेल, तेथी भिल लोको कोइ नवा राजाने शोधता हता, तेमणे चिलाती पुत्रनी चालाकी जोइ तेने

पोतानो स्वामी बनाव्यो.

पाठ ६८ मो.

चिलाती पुत्र-भाग २ जो.

चिलाती पुत्र पल्लीपति थया पछी तेने विषयनी इच्छा थतां सुसुमा याद आवी. आथी ते चोरी करनारा भील लोकोने साथे लइ ते धना सार्थवाहना घरमां चोरी करवा गयो. चोर रात्रे आवेला जोइ धनशेठ पोताना पांच पुत्रोने लइ संताइ गयो. पछी चोरोए शेठनो माल चोर्यो, अने चिलाती पुत्रे सुसुमाने लीधी. त्यांथी तेओ पसार थइ गया. तेवामां सार्थवाह कोलाहल करी पोलीस लोकोने एकठा करी तेनी पाछळ पडयो. बीजा चोर चोरीनो माल पडतो मुकी नाशी गया, अने चिलाती पुत्र सुसुमाने खभा उपर बेसारी नाठो, पण ज्यारे नगरना रक्षको तेनी पाछळ लाग्या, एटले ते सुसुमानुं मस्तक कापी साथे लइ नाशी गयो. सार्थवाह पोतानो माल तथा पुत्रीनुं धड जोइ पोलीस लोकोनी साथे पाछो फर्यो. ते अरसामां राजगृह नगरमां श्रीवीरप्रभु विचर्या हता. धन सार्थवाह ते खबर जाणी, पोताना पांचे पुत्रोनी साथे प्रभुने वांदवा आव्यो. प्रभुए तेने देशना आपी. देशनामां मनुष्य जन्मनी दुर्लभता अने संसारना

स्वरुपनो बोध आप्यो. आ देशना सांभळी सार्थवाहे पोताना पांचे पुत्रोनी साथे दीक्षा लीधी. ते पछी संयमने बराबर पाळी, अने तीव्र तपस्या करी सार्थवाह मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो.

पेलो चिलाती पुत्र मोहने वश थइ सुसुमानुं मस्तक लइ रुधिरथी व्याप्त थतो आगळ चाल्यो, त्यां मार्गमां कोइ मुनिने कायोत्सर्ग ध्याने रहेला जोया. तेने जोतांज चिलाती पुत्रे कह्युं के, मुनीश्वर ! मने सत्वर धर्म सभंळावो, नहीं तो आ स्त्रीनी जेम तमारुं मस्तक छेदी नाखीश. ते सांभळी मुनिए विचार्युं के, 'आ पात्र छे, माटे उपदेश आपवो.' पछी मुनि उपशम, विवेक अने संवर—ए त्रण पदनो उच्चार करी आकाश मार्गे चाल्या गया.

पाछळ चिलाती पुत्रे ए त्रण शब्दो उपर विचार कर्यो. आ मुनि मने कांइक आकाशगामिनी विद्यानो मंत्र आपी गया, के कांइ धर्म मंत्र कह्यो हशे ? पछी ते मुनिनी जग्याए उभो रह्यो, त्यां तेने ध्यान करतां ते त्रण शब्दोना अर्थ स्फुरी आव्या. उपशम एटले क्रोधनी उपशांति, विवेक एटले करवा योग्य कर्मनो अंगीकार, अने न करवा योग्य कर्मनो त्याग. पांच इंद्रियोने तेमना ते ते विषयमांथी रोकवी, तेनुं नाम संवर कहेवाय छे. आ त्रणे शब्दनो अर्थ बराबर समजी तेणे चिंतवन कर्युं, अने

तेनो बराबर उपयोग लीधो, ते त्रिपदनुं ध्यान करतो चि-
लाती पुत्र कायोत्सर्गे रह्यो. तेनुं शरीर रुधिरथी खरडा-
एलुं हतुं, तेथी ते उपर कीडीओ चढी गइ, अने ते श-
रीरने चालणी जेवुं करी दीधुं. आ वधी वेदना सहन
करी चिलाती पुत्र अढी दिवसमां देवता थइ स्वर्गे गयो.

आ वार्त्तानो सार एवो छे के, उपशम, विवेक,
अने संवर—ए त्रिपदनुं ध्यान करवाथी प्राणी थोडा का-
ळमां उत्तम गतिने पामे छे.

सारांश प्रश्नो.

१ चिलाती पुत्र कोण हतो ? २ ते कोने घेर र-
हेतो हतो ? ३ धन सार्थवाहे तेने शा माटे काढी मुक्यो
हतो ? ४ चिलाती पुत्र पूर्व भवे कोण हतो ? ५ तेना पू-
र्व भवनुं वृत्तांत संक्षेपमां जणावो. ६ सुसुमानो जीव पू-
र्वे कोण हतो ? ७ चिलाती पुत्रने काढी मुक्या पछी ते
क्यां जइ रह्यो हतो ? ८ चिलाती पुत्रे चोरी करवा जतां
शुं कर्युं हतुं ? ९ तेणे कायोत्सर्गे रहेला मुनिने शुं कह्युं
हतुं ? १० चिलाती पुत्रे कइ त्रिपदीनुं ध्यान कर्युं हतुं ?
११ ते त्रिपदीनो केवो अर्थ विचार्यो हतो ? १२ धन
सार्थवाहे छेवटे शुं कर्युं हतुं ? १३ चिलाती पुत्र केटला
दिवसमां स्वर्गनी गति पाम्यो हतो ?

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

गुह्य अंग, शासनदेवी, पल्ली, सार्थवाह, तीव्र, व्याप्त, उपशम, विवेक, संवर, आकाशगामिनी, त्रिपदी.

॥ समाप्त. ॥